दो शब्द

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापक व्यापार की काली कहानी जितनी कलुषित है, उतनी ही करुण है। माँ और बहनों, एवं युवतियों और बच्चियों के खरीद-फरोख्त की रोमाञ्चकारी दास्तान लिखते लिखते क़लम काँप उठती है, कलेजा मुँह को आता है और दिल में दर्द होने लगता है।

बुद्धि कहती है कि जैसी अपनी माँ-बहन वैसी दूसरे की, जैसी अपनी बहू-बेटी वैसी पराये की, फिर पापाचार की यह कलंकित रेखा भूमण्डल के इस छोर से उस छोर तक क्यों फैली है ?

दुनियाँ के लोगों का विश्वास है कि हम सभ्य हो रहे हैं। यूरु-पीय देशों के निवासियों का तो यहाँ तक यक़ीन है कि हम सभ्यता के सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचे हैं। हम नहीं कह सकते कि उनकी ये धारणायें कहाँ तक सही हैं, पर उन्नति के शिखर पर चढ़ने-वाले राष्ट्र और समाज क्या अपनी महिलाओं और बालि-काओं का क्रय-विक्रय किया करते हैं ?

इस पुस्तक में ऐसी अनेक दास्तानें हैं जिन्हें पढ़ कर मनुष्य की तो बात ही क्या, पत्थर भी रो पड़ें ! औरतों के व्यापारियों के चंगुल में फँसी हुई ललनाओं के करुण क्रन्दन, मालूम नहीं, द्रौपदी की लाज-रखैया के कानों तक क्यों नहीं पहुँचते हैं।

लड़कियाँ उड़ाई जाती हैं, युवतियाँ भगाई जाती हैं और बहुएँ फुसलाई जाती हैं। लड़कियों को उड़ाकर अमेरिका ले जाया जाता है, युवतियों को भगा कर मैक्सिको ले जाया जाता है और बहुओं को फुसला कर अर्जेन्टाइन, ट्यूनिस, मिस्र आदि देशों में ले जाया जाता है। सभी देशों में ऐसे हजारों अमीर हैं जिन्हें सदा नई नवेलियों की जरूरत रहती है और बदमाशी और व्यभिचार ही में उन्हें जीवन का सुख दिखलाई देता है।

काश, वे समझते होते कि जैसी हमारी बच्ची वैसी दूसरे की, जैसी हमारी बहन वैसी पराये की, तो सच मानों दुनियाँ की रूप-रेखा दूसरी ही होती।

परन्तु वे समझ कर भी नहीं समझना चाहते! वे अपनी स्वच्छन्दता में बाधा नहीं पड़ने देंगे। वे अपनी कामाग्नि को विषय-भोग के घी से सदा जगाये रक्खेंगे।

इनमें से अनेक बाल-बच्चों-वाले होंगे। जिनके अपने बच्चे होते हैं वे ख़ूब समझते हैं कि बच्चों पर गाज गिरने के क्या माने होते हैं। यदि उनके बच्चों के साथ वही सलूक किया जाने लगे और उनकी लड़कियाँ हरण की जाने लगें तो उनके दिल पर कैसी बीते और उनकी कलेजे की टुकड़ा बच्ची पर किन किन आफतों का पहाड़ टूटे! जब वे, उड़ा लाई हुई पराये की लड़कियों के ख़ून के आँसुओं का और उनकी आरज़ू-मिन्नतों का कोई लिहाज़ नहीं करते, तो दूसरे उनकी दुख्तरों की तकलीफ़ और आराम का क्योंकर विचार रक्खेंगे? जो दूसरों के लिए खाइयाँ

खोदेंगे उनके लिए स्वयं कुएँ तैयार रहेंगे। बबूल का पेड़ रोपने पर कोई आम के फल पाने की आशा नहीं कर सकता।

हम यह नहीं कहते कि संसार की सारी स्त्रियाँ दूध की धोई हुई हैं और पुरुष ही पाप के मूल हैं। पाश्चात्य महिलाओं ने अपने जीवन को इतना खर्चीला और जरूरत से ज्यादा टीमटाम का बना रक्खा है कि उन्हें उन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए येन-केन-प्रकारेण अधिक से अधिक पैसा पैदा करना होता है। हम स्त्रियों के फैशन के मुखालिफ़ नहीं, हम अपनी युवतियों के भद्दे तरीक़े से रहने और मनहूस सी शक्ल बनाये रखने के पक्षपाती नहीं हैं। हम चाहते हैं, और दिल से चाहते हैं कि हमारी सुन्दरियाँ अपने नाज़-नखरों, मुस्क्यानों और कटाक्षों तथा अपनी सुन्दरता, सौरभ और रंग-बिरंगे कपड़ों से, समाज में सदा सौंदर्य की श्री बिखेरती रहें, पर हम उसकी भी एक सीमा समझते हैं। स्वतंत्रता जब स्वच्छन्दता की परिधि पर पहुँच जाती है और उच्छृङ्खलता का नग्न नृत्य दिखलाने लगती है तब वह अमर्यादित हो जाती है और उससे अभिमान, अशिष्टता तथा अपवित्रता की बू आने लगती है। हम इस बदबू से नफ़रत करते हैं। इसके कई नमूने बिल्कुल नंगे रूप में इस पुस्तक में कई जगह पर आये हैं।

जितनी ज्यादा जरूरतें होंगी, उतनी ही अधिक जीवन के डगमग पथ में कठिनाइयाँ होंगी। और इस युग में जबकि आर्थिक कठिनाइयाँ अपनी सहस्रों कराले जिह्वाओं को निकाले मध्यम और निम्न कोटि के प्राणियों को निगल जाने के लिए

सदैव लपलपाया करती हैं, ज्यादा ज़रूरतें आफ़त का पहाड़ ढायेंगी। वही हो भी रहा है। शेविंग-सैलूनों में बाल कटाने के लिए, सेंट और लवेंडर की शीशियाँ ख़रीदने के लिए, रेशमी पोशाक तथा ऊँची ऐंड़ी के बढ़िया जूते के लिए स्त्रियों का सतीत्व कौड़ियों के मोल बिक रहा है। इन्हीं ज़रूरतों और ज्यादतियों के फल-स्वरूप बीमारी और डाक्टरों का दौर-दौरा ख़ूब बढ़ रहा है।

जिस प्रकार पूँजीवाद (Capitalism) ने संसार की आर्थिक व्यवस्था को अपने लौहदण्डों से चूर चूर कर पृथ्वी पर त्राहि त्राहि मचवा रक्खी है उसी प्रकार पूँजीवादियों (Capitalists) की सत्ता ने, स्त्रियों और बच्चियों की तिजारत-सी अमानुषिक, अत्याचार की पद्धति भी क़ायम कर रक्खी है। इस पुस्तक के पाठकों को पता चलेगा कि दुनियाँ के अमीरज़ादे यत्र-तत्र-सर्वत्र की सुन्दरियाँ मँगाने के लिए किस फ़ैयाज़ी से पैसा ख़र्च करते हैं और किस दरियादिली से कन्या-दलालों को माला-माल करते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि पैसा पाप का मूल है, उसे पाकर बहुत से पवित्र भी पापी बन जाते हैं।

पहले इंग्लैण्ड की कुमारियाँ तमाम यूरुपीय देशों में बिकने के लिए जाया करती थीं, पर अब इंग्लैंड की सरकार ने उसमें रोक लगा दी है और कड़े कड़े क़ानून बना दिये हैं।

फ्रांस, जर्मनी, पोलैंड, बेल्जियम आदि देशों से अब भी हज़ारों लड़कियाँ प्रतिवर्ष बाहर ले जाई जाती हैं।

चीन का सबसे बुरा हाल है। यहाँ के माता-पिता स्वयं अपने हाथों अपनी कन्याओं को चकलों में लेजाकर बैठाते हैं और उनकी कमाई के पैसे से अपना पेट भरते हैं।

हमारा विश्वास है कि हमारे अधिकांश हिन्दी-पाठक इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ होंगे कि स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार जैसी कोई प्रणाली भी दुनियाँ में चालू है। परन्तु यह बात उतनी ही सत्य है जितना कि सूर्यदेव का पूर्व दिशा से निकलना और हिन्दोस्तान का ग़ुलाम होना। इसमें सन्देह की क़तई गुञ्जायश नहीं है। जिन्हें इस बात में शक हो वे लीग-ऑफ़-नेशन्स के सारे प्रकाशनों को अवश्य पढ़ें जिनमें इस विषय पर बहुत विस्तृत और अधिकार-पूर्ण तरीके से प्रकाश डाला गया है।

हमने इस बात की चेष्टा की है कि इस पुस्तक में स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार से सम्बन्ध रखने-वाली सारी ख़ास ख़ास घटनाओं का समावेश हो जाय। भारतवर्ष में यह पाप-व्यापार अभी बहुत कम फैला है, यद्यपि अख़बारों में अक्सर लड़कियों और युवतियों के भगाये जाने के क़िस्से पढ़ने को मिलते हैं। अपने देश के बारे में हमने वही घटनाएँ लिखी हैं जिनका समावेश लीग-ऑफ़-नेशन्स के पत्रों, पुस्तकों या पैम्फलेटों में मिलता है। हमने भारतवर्ष की समस्त वेश्याओं की जाँच-पड़ताल नहीं की है, क्योंकि यह हमारे विषय से बाहर की बात है। स्त्रियों और बच्चियों की ट्राफ़िक का ज़िक्र करते हुए जब और जहाँ वेश्याओं का वर्णन आवश्यक हो गया है वहीं उनका उल्लेख किया गया

है। इसीलिए पाठक देखेंगे कि यद्यपि भारतवर्ष में वेश्याओं तथा देवदासियों की संख्या बहुत बड़ी है, पर हमने उन सबका ज़िक्र अपनी सीमा से बाहर समझ कर नहीं किया है।

पुस्तक कैसी बन पड़ी है, इसकी घटनाओं का सिलसिला कैसा है, इसकी भाषा कैसी है, इसकी लेखन-शैली की रूप-रेखा कैसी है, आदि बातों का फैसला पाठकों और विद्वान् समालोचकों को करना है। हमें सभी घटनाओं को सादे तरीक़े से अपनी बोल-चाल की भाषा में लिखना अच्छा लगता है। चूँकि इस विषय की कोई पुस्तक मातृभाषा के भंडार में नहीं थी, अतएव उसे मैंने वर्त्तमान रूप में हिन्दी-पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास किया है।

फाटूकोठी, कानपुर
ता० १७ जुलाई, १९३४

—शिवनारायण टंडन

विषय-सूची

स्त्रियों और बच्चियों का व्यापार

अथवा

[संसार के सभ्य देशों की वेश्या-वृत्ति की पाप-कहानी]
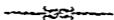
१—विषय-प्रवेश

मनुष्य-समाज के इतिहास में जहाँ सभ्यता, उन्नति और आविष्कारों का आलोक दीख पड़ता है, वहाँ बर्बरता, पशुता और अत्याचार-प्रियता का नमूना भी पद पद पर दृष्टिगोचर होता है। हबशियों को ग़ुलाम बनाने और रेड इन्डियन्स को जीते ही जला देने की कथायें जितनी दर्दनाक हैं, स्त्रियों और बच्चियों के क्रय-विक्रय की कहानियाँ उससे कम मर्म-भेदिनी और पुरदर्द नहीं हैं। इन घटनाओं का दौर-दौरा उन देशों में अधिक है जो बड़े सभ्यताभिमानी हैं और अर्वाचीन संसार में अपने को उन्नति के शिखर पर पहुँचा हुआ मानते हैं।

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार की काली रेखा भूमण्डल के इस छोर से उस छोर तक फैली हुई है। सदियों से ये करतूतें होती चली आई हैं, पर लोग इसके विरोध में आवाज़ उठाने में, उदासीन रहे हैं, या तटस्थ रहे हैं। जिस राक्षसी प्रथा के कारण हमारी महिलाओं और बालिकाओं का जीवन और सुख सदा संशय में रहता हो, उस पर कठोर दृष्टिपात न करके, तरह देते रहना, अमानुषिकता नहीं तो क्या है ? आज भी संसार कान में तेल डाल कर सोया हुआ है और इन अत्याचारों को गवारा कर रहा है। परन्तु राष्ट्र-सङ्घ (लीग आफ़ नेशन्स) के संगठित प्रचार और प्रयत्न के कारण इस पाप-वृक्ष की जड़ें हिलने लगी हैं। जागृति होने लगी है और इसका प्रतिकार करने की भावना बलवती हो उठी है। इस व्यापार का जितना ही जल्दी अन्त हो, मनुष्य-समाज के लिए उतना ही अच्छा और श्रेयस्कर है।

मनुष्य की रचना परमेश्वर की सबसे पूर्ण, सबसे कौशलमय और सबसे विवेक-पूर्ण सृष्टि मानी जाती है। परम पिता के दिये हुए मस्तिष्क-वरदानों को बुद्धिमत्ता-पूर्ण तरीक़ों से, सामूहिक हित के लिए काम में लाना ही हमारा सबका पवित्र कर्तव्य है। अत्याचार और पापाचार के ख़िलाफ़ बग़ावत करना मनुष्य-समाज का स्वाभाविक धर्म रहा है। पशु-पक्षी और चींटी तक, पर किसी तरह का ज़ुल्म होते देखकर हमारे हृदयों को तड़प उठना चाहिए, फिर अपने ही समाज-वालों पर दुःख और कष्ट के पहाड़ फटते देख कर हमारा दिल पसीज न उठे तो अद्भुत आश्चर्य है।

आज-कल सभ्य संसार में प्रचलित स्त्रियों और बच्चियों का व्यापार मनुष्य-समाज के माथे का सबसे बड़ा काला कलंक है। इसके क़ायम रहने का मुख्य कारण यह है कि पुरुष-समाज में इस बात का विश्वास जम गया है कि कुमारी, षोडशी कन्याओं, और रूपवती यौवनवती सुन्दरियों का सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से हितकर है और युवावस्था क़ायम रखने के लिए आवश्यक है। यह बात पुरातन काल (Stone age) में, भले ही सार्थक रही हो, पर आज-कल यह विचार-शैली जंगलीपन के सिवा विशेष महत्त्व नहीं रखती। विवाह की प्रथा, पति पत्नी का सम्बन्ध एक ऐसा आदर्श है जिसकी छत्र-छाया में मनुष्य-समाज को काम-वासना की तृप्ति से लेकर गार्हस्थ्य जीवन का सुख, कुटुम्ब-निर्माण और समाज-संगठन का बीजमंत्र मिला है। काश, विवाह की प्रथा न जारी होती तो बाल-बच्चों के ममत्त्व और प्रेम से अतुलित पदार्थ की सृष्टि न हुई होती। पशुओं की तरह काम-वासना की तृप्ति की जाया करती, पर वैसी स्थिति में महिलाओं और बालिकाओं की खरीद-फ़रोख्त किसी दर्जे तक क्षम्य होती, क्योंकि अवनतिशील, विवेक-बुद्धि-हीन मनुष्य के नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कैसे पहुँचती ? आज तो मनुष्य उन्नति के पथ पर काफ़ी दूर तक पहुँच चुका है और रात-दिन उसके सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने की चेष्टा कर रहा है। संसार के प्रसिद्ध प्रसिद्ध डाक्टरों और वैज्ञानिकों ने एक मत होकर इस बात का ऐलान किया है कि वैवाहिक जीवन की परिधि के बाहर जाकर व्यभिचार

करना शारीरिक और नैतिक पतन की पराकाष्ठा है। नीचे दिये हुए वक्तव्य पर तेंतीस धुरन्धर मनोवैज्ञानिकों, विज्ञान-विशारदों और डाक्टरों के हस्ताक्षर हैं जिससे हमारी बात की सत्यता का पूर्ण आभास मिल सकता है। वे कहते हैं—

"We are of opinion that —

(1) In the interests of the race and the individual it is essential that the stability of the family in marriage should be preserved, and social habits and customs should be adjusted to this end.

(2) There is overwhelming evidence that irregular sex relations, outside marriage lead to physical, mental and social harm.

(3) There is absolutely no evidence either from physiology or from experience that for the unmarried sexual intercourse is a necessity for the maintenance of physical health.

(4) There is no evidence, either from psychology or from experience that for the unmarried sexual intercourse is a necessity for the maintenance of mental health."

The above statement must destroy the current blasphemous idea, which assumes that the health of men *must be maintained* at the expense of the degradation

of women, procured for the purpose, often against their will. The statement asserts by implication that what is morally wrong, can never be medically right. It is a challange, the truth of which no equally qualified group of scientists has so far disputed.

(*Indian Red cross Journal*)

अर्थात् हमारी यह सम्मति है कि :—

(१) मनुष्य-जाति और व्यक्ति के हित के लिए यह आवश्यक है कि विवाह में पारिवारिक जीवन की दृढ़ता सुरक्षित रखी जाय और अपने सामाजिक एवं व्यावहारिक तौर-तरीक़े और नियम इस प्रकार व्यवस्थित किये जायँ कि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके।

(२) इस बात के बहुसंख्यक उदाहरण मौजूद हैं कि वैवाहिक जीवन के बाहर जाकर अनियमित व्यभिचार करने वालों को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक हानियाँ उठानी पड़ती हैं।

(३) चिकित्सा-शास्त्र में या अनुभव से इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि शारीरिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए, अविवाहितों के लिए स्त्री-गमन ज़रूरी है।

(४) मनोविज्ञान और अनुभव के अनुसार इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं है कि मानसिक स्वास्थ्य कायम रखने के लिए अविवाहितों को व्यभिचार करना ज़रूरी है।

हमें आशा है कि उपर्युक्त वक्तव्य, उस कुत्सित विचार-शैली

को नष्ट कर देगा जिसने यह धारणा बना रक्खी है कि पुरुषों के स्वास्थ्य को क़ायम रखने के लिए, स्त्रियों को इच्छा के प्रतिकूल भी उनको बरबस व्यभिचारिणी बनाना चाहिए। इस वक्तव्य के अनुसार जो बात नैतिक रूप से ग़लत है वह चिकित्सा-शास्त्र से कभी सही नहीं हो सकती। यह वह चुनौती है जिसका विरोध करने का, आज तक किसी सम्मानित वैज्ञानिकों की टोली को साहस नहीं हुआ।

(इंडियन रेड क्रास जरनल)

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार की समस्या को संसार के सम्मुख संगठित रूप से रखने का सारा श्रेय राष्ट्र-सङ्घ (लीग आफ़ नेशन्स) को है। यह संस्था जिनेवा (Geneva) में संसार के विभिन्न राष्ट्रों द्वारा सम्मिलित रूप से इस लिए क़ायम की गई थी कि संसार-व्यापी प्रश्नों को उत्तरदायित्व के साथ हल करे। संसार में शान्ति बनाये रखने के लिए निःशस्त्रीकरण के मसले को लीग ने बार बार सुलझाना चाहा, पर साम्राज्यवादी सदस्यों की स्वार्थपरता के कारण, ज्यों ज्यों सुलझाने की चेष्टा की गई त्यों त्यों मामला उलझता चला गया। जहाँ इस क्षेत्र में लीग आफ़ नेशन्स ने बुरी तरह असफलता पाई वहाँ स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार (Traffic in women and children) के सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल कर, साहित्य बाँट कर, और देश-विदेशों में प्रचार कर आशातीत सम्मान भी पाया। राजनैतिक क्षेत्र से परे होने के कारण, देश-विदेशों की सरकारों ने इस कार

सहयोग देकर, वास्तविक स्थिति का कच्चा चिट्ठा उतरवा कर, लीग को दे दिया और समय समय पर जो व्यक्ति या कमीशन जाँच के लिए भेजे जाते रहे उनको भी काफ़ी सहायता दी।

इस विषय का आरम्भ जिस प्रकार हुआ, उसका वर्णन संक्षेप में इस प्रकार है—सन् १९२३ में लीग आफ नेशन्स ने, स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार पर अपनी सम्मति देने के लिए एक सलाह-कारिणी कमेटी (Advisory committee) क़ायम की। इस कमेटी की अमेरिकन सदस्या मिस ग्रेस एबाट ने एक लम्बा खरीता पेश कर इस विषय की महत्ता और सार्वजनिक आवश्यकता प्रकट करते हुए, पूरी जाँच करने के लिए लीग आफ नेशन्स से अनुरोध किया। जब अमेरिका के सामाजिक स्वास्थ्य-विभाग (American Bureau of Social Hygiene) ने इस कार्य के हेतु ७५ हज़ार डालर की रक़म देकर इसे कार्य रूप में परिणत करने की आर्थिक कठिनाइयों को दूर कर दिया तब लीग की कमेटी, कौंसिल और एसेम्बली ने इसे प्रस्ताव रूप में पास कर उसका निरीक्षण करने की आयोजना तैयार की। यह रक़म कृतज्ञता-पूर्वक स्वीकार कर ली गई और दिसम्बर १९२३ में कौंसिल की बैठक ने इस विषय के विशेषज्ञों की एक कमेटी क़ायम कर दी। इसके सदस्य निम्नलिखित थे।

(१) विलियम एफ स्नो (William F. Snow) चेयरमैन

(२) ए. डी. मोरन (A. De Meuron) सदस्य

(३) एम. क्रिस्टिना गुस्टीन्याना बन्डीनी (M. Cristina Giustiniana Bandini)
(४) इसादर मास (Isidore Maus)
(५) पी. ली. लक (P. Le Luc)
(६) एस. डब्लू. हैरिस (S. W. Harris)
(७) डाक्टर पालीना लूसी (Dr. Paulina Luisi)
(८) टाडाकाट्सू सूजूकी (Tadakatsu Suzuki)

इस कमेटी के प्रधान मंत्री मि० रिचल ई० क्राउडी थे।

लीग के समाज-सुधार-विभाग के मंत्रिमण्डल ने वे सब कागजात, जो विभिन्न गवर्नमेंटों से आये और उनको गये थे, कमेटी के सुपुर्द कर दिये। स्त्रियों और बच्चियों के क्रय-विक्रय-सम्बन्धी वार्षिक रिपोर्टें जो आती रहीं थीं वे भी इकट्ठी हो गईं। बाद में एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की गई, जिसके आधार पर देश-विदेशों में जाँच की गई। इस निरीक्षण के सम्बन्ध में चार बातें सिद्धान्त रूप से तय कर ली गईं (१) जाँच-पड़ताल सदा अनुभवी और इस विषय के जानकार व्यक्तियों द्वारा ही कराई जायगी, (२) प्रत्येक जाँच सदा किसी विभाग विशेष की होगी, (३) जाँच-पड़ताल विस्तृत और पूर्ण होगी (४) यह जाँच उन्हीं देशों और शहरों में बैठ कर की जायगी जहाँ दूसरे देशों से स्त्रियाँ क्रय-विक्रय और व्यभिचार के लिए भेजी गई हैं। सब देशों की सरकारों को पत्र भेजकर सूचित किया गया कि इस विषय की जाँच के लिए कमेटियाँ उनके मुल्कों में आयेंगी। उत्तर

में प्रायः सभी देशों की सरकारों ने इस तरह की जाँच-पड़ताल का स्वागत करते हुए प्रत्येक प्रकार की सहायता करने का वादा किया और हर तरह की मदद दी। कमेटी के चेयरमैन डाक्टर स्नो महोदय ने स्वयं कई देशों में जाकर स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार की जाँच की। बाक़ी सदस्यों ने अपने अपने देशों में सरकारी सहायता लेकर भी सारी सामग्री इकट्ठी की। इन सारी सामग्रियों के इकट्ठा होने पर पूरी समिति की बैठकें अनेकों बार पेरिस और जिनेवा में उनकी जाँच-पड़ताल करने, खोज के नये तरीक़े निकालने और रिपोर्ट तैयार करने के लिए होती रहीं। जिस देश की जिस रिपोर्ट में कमी समझ पड़ी, या कोई अनिश्चित बात दिखलाई दी, उसमें बड़ी छानबीन के साथ पूर्णता और निश्चित बातें लाई गईं। इस कार्य के लिए दुबारा लम्बी लम्बी यात्राएँ करने का मौक़ा पड़ने पर भी कमेटी बराबर उसमें लगी रही और पूरी जिम्मेदारी के साथ अन्य काम करती रही।

जाँच के प्रारम्भिक काल ही में यह पता चला कि पश्चिमी यूरुप से मध्य और दक्षिण अमेरिका को स्त्रियाँ और लड़कियाँ बहुत भेजी जाया करती हैं। अतएव अमेरिका के उन्हीं प्रदेशों में जाँच शुरू की गई जो बढ़ते बढ़ते केन्द्रीय और उत्तरीय अमेरिका, भूमध्य महासागर के किनारे के देशों, और बाल्टिक और उत्तरीय सागर (North Sea) के मुल्कों तक पहुँच गई। अट्ठाईस मुल्कों के एक सौ बारह शहरों और जिलों में जाँच हुई। उन्हीं लोगों से छाँट छाँट कर गवाहियाँ ली गईं और खबरें बटोरी

इस कुप्रथा की ओर गया था। जनता में इसका विरोध उठे कोई तीस-बत्तीस साल का समय हो गया। परन्तु सामूहिक रूप से अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न लीग आफ नेशन्स के द्वारा ही जारी हो सका।

सन् १८७५ में लिवरपूल (इंग्लैंड) में एक अन्तर्राष्ट्रीय सभा क़ायम हुई, जिसका उद्देश था वेश्यावृत्ति के सरकारी क़ानून को रद्द कराना।

इस सभा ने सन् १८७७ में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक की, जिसमें देश-विदेशों से प्रतिनिधि बहुत बड़ी संख्या में आये थे। उन दिनों इंग्लैंड से हजारों लड़कियाँ और युवतियाँ प्रतिवर्ष यूरुप के अन्यान्य देशों में व्यभिचार के लिए वेचने को ले जाई जाती थीं। कांग्रेस में इस बात की कड़ी आलोचना हुई। वेश्यावृत्ति के सरकारी क़ानून के विरोध में कांग्रेस में बड़ी चख-चख रही। नतीजा यह हुआ कि वास्तविक जानकारी और जनता के सन्तोप के लिए इंग्लैंड की तत्कालीन सरकार ने एक सुयोग्य बैरिस्टर को जाँच करने के लिए नियुक्त किया। इन बैरिस्टर महोदय की रिपोर्ट सन् १८८२ में प्रकाशित हुई जिसका संक्षिप्त आशय यह था—

"मुझे इस बात की सचाई में तनिक भी सन्देह नहीं कि कितने ही वर्षों से इस देश में एक ऐसा व्यवसाय चल पड़ा है, जिसके द्वारा बहुत सी अँगरेज लड़कियाँ, जिनमें अधिकांश २१ वर्ष से कम उम्र की होती हैं, चकलों में रहने के लिए भरती कर ली जाती हैं। ये चकले यूरुप के विभिन्न देशों, दक्षिण अमेरिका

गई जो इस व्यापार में लगे हुए या तो दलाल थे, या मुक्त-भोगी, या बड़े पैमाने पर इस व्यापार में लेन-देन का काम कर रहे थे। इनकी संख्या छः हजार-पाँच सौ से ज्यादा है, जिनमें से बहुतों के नाम, ठिकाने और पूरे पते लीग आफ नेशन्स के दफ़र में किसी अवसर विशेष के लिए सुरक्षित रक्खे गये हैं।

जाँच करते समय कमेटी वालों को यह अनुभव हुआ कि वे सरकारी खरीतों, सहायक संस्थाओं, या उन लोगों की सहायता पर जो इसके प्रतिकार में तमाम दुनिया में लगे हुए हैं, निर्भर रह कर तब तक पक्की थाह नहीं पा सकते, जब तक वे स्वयं घटनाओं से प्रत्यक्ष परिचय न प्राप्त कर लें। इस बात को मद्दे-नजर रखते हुए कमेटीवाले उन स्थलों और उन शहरों में स्वयं ही गये जहाँ के विषय में वे सच्ची जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। सौभाग्य से आरम्भ ही में, साहस, तिकड़म, और पैसे के

इस कुप्रथा की ओर गया था। जनता में इसका विरोध उठे कोई तीस-बत्तीस साल का समय हो गया। परन्तु सामूहिक रूप से अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न लीग आफ नेशन्स के द्वारा ही जारी हो सका।

सन् १८७५ में लिवरपूल (इंग्लैंड) में एक अन्तर्राष्ट्रीय सभा क़ायम हुई, जिसका उद्देश था वेश्यावृत्ति के सरकारी क़ानून को रद्द कराना।

इस सभा ने सन् १८७७ में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक की, जिसमें देश-विदेशों से प्रतिनिधि बहुत बड़ी संख्या में आये थे। उन दिनों इंग्लैंड से हज़ारों लड़कियाँ और युवतियाँ प्रतिवर्ष यूरुप के अन्यान्य देशों में व्यभिचार के लिए बेचने को ले जाई जाती थीं। कांग्रेस में इस बात की कड़ी आलोचना हुई। वेश्यावृत्ति के सरकारी क़ानून के विरोध में कांग्रेस में बड़ी चख-चख रही। नतीजा यह हुआ कि वास्तविक जानकारी और जनता के सन्तोष के लिए इंग्लैंड की तत्कालीन सरकार ने एक सुयोग्य बैरिस्टर को जाँच करने के लिए नियुक्त किया। इन बैरिस्टर महोदय की रिपोर्ट सन् १८८२ में प्रकाशित हुई जिसका संक्षिप्त आशय यह था—

"मुझे इस बात की सचाई में तनिक भी सन्देह नहीं कि कितने ही वर्षों से इस देश में एक ऐसा व्यवसाय चल पड़ा है, जिसके द्वारा बहुत सी अँगरेज़ लड़कियाँ, जिनमें अधिकांश २१ वर्ष से कम उम्र की होती हैं, चकलों में रहने के लिए भरती कर ली जाती हैं। ये चकले यूरुप के विभिन्न देशों, दक्षिण अमेरिका

और सुदूर पूर्व के देशों में अवस्थित हैं। जो लोग इन लड़कियों को जमा करते हैं उन्हें चकलों के मालिक एक नियत पारिश्रमिक या कमीशन देते हैं।

मुझे यह भी मालूम हुआ है कि ऐसे मामलों में आमतौर पर जालसाज़ी से काम लिया जाता है। कम उम्र की लड़कियाँ आसानी से भरती कर ली जाती हैं, और उनकी उम्र के सम्बन्ध में जन्म-तिथि का नक़ली सर्टीफ़िकेट दाख़िल किया जाता है। जो लड़कियाँ इस प्रकार के जीवन में प्रविष्ट होती हैं, उन्हें, इस बात का अवसर मिलने से पहले ही कि वे वस्तुस्थिति को समझ सकें इस प्रकार फँसा दिया जाता है कि फिर, इस जाल से उनका निकलना कठिन हो जाता है।"

इस रिपोर्ट का परिणाम यह हुआ कि ब्रिटेन की सरकार ने सख़्त क़ानून पास करके अँगरेज लड़कियों का विदेशों में व्यभिचार के लिए ले जाया जाना जुर्म क़रार दे दिया। इस क़ानून के ज़रिये से इंग्लैंड से यूरुप के अन्यान्य देशों को लड़कियों और स्त्रियों का जाना रुक गया। इस क़ानून का महत्त्वपूर्ण अंश वह है जिसमें २१ वर्ष से कम अवस्था की लड़की को इंग्लैंड में या बाहर, व्यभिचार में संलग्न करना भयंकर अपराध माना जाता है और इस अपराध के अपराधियों को कड़े से कड़ा दंड देने का विधान है। क़ानून बनने के बाद सैकड़ों ही दलाल इस जुर्म में पकड़े गये, जिन्हें जेल और जुर्माने की लम्बी लम्बी सज़ायें दी

गईं। अधिकारियों की सख्ती से और बाहर जाने वाली प्रत्येक स्त्री की पूरी जाँच-पड़ताल के कारण स्त्रियों के भगाये जाने की घटनायें उत्तरोत्तर कम होती गईं और बाद में अन्यान्य देशों के लिए इंग्लैंड के कार्यक्रम को उदाहरण की तरह सामने रक्खा गया।

इस प्रथा को पहले गोरे ग़ुलामों की तिजारत के नाम से पुकारा जाता था। इसको जनता के सामने लाने में इंग्लैंड में मिस्टर अलेक्जेन्डर कूट ने और फ्रान्स में मोशिये सिनेटर बेरिंगर ने बहुत काम किया। सन् १९०२ में फ़रासीसी सरकार ने पेरिस में यूरुप के तमाम देशों का एक सम्मेलन किया, जिसके फल-स्वरूप गोरे ग़ुलामों के व्यापार को रोकने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय योजना बनाई गई, जिस पर बेल्जियम, डेन्मार्क, फ्रान्स, जर्मनी, इंग्लैंड, इटली, नीदरलैंड, नारवे, स्वीडन, पुर्तगाल, रूस, स्पेन और स्वीट्ज़रलैंड आदि बारह मुल्कों के सरकारी प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये। इस शर्त्तनामे के अनुसार, इस पापाचार के ख़िलाफ़, क़ानूनी कार्यवाही करने का निश्चय किया गया और इस व्यापार के सम्बन्ध की सारी जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रत्येक देश में विशेष अफ़सर नियुक्त करने की बात भी तय कर ली गई।

सन् १९०८-९ में, अमेरिका में इस विषय की जाँच के लिए जो कमीशन बैठा, उसने रिपोर्ट दी कि प्रति माह, तमाम प्रान्तों में, सैकड़ों महिलायें और बालिकायें यूरुप के देशों से लाई जा

कर बेची जाती हैं, या पेशेवर वेश्यायें बनाई जाती हैं। इनमें से कुछ तो जबरन यह वृत्ति स्वीकार करती हैं, और कुछ मजबूरन, ज्यादातर स्त्रियाँ रजामन्दी से पैसा कमाने के लिए आतीं या लाई जाती हैं। दलाल और महाजन लोग यूरुप और एशिया के देशों से ढूँढ़ ढूँढ़ कर, 'अच्छा अच्छा माल' दो सौ, तीन सौ, पाँच सौ, हजार और दो हजार की क़ीमत पर खरीद लाते हैं। इस रिपोर्ट के आधार पर अमेरिकन कांग्रेस ने सन् १९१० में गोरों के इस गुलाम-व्यापार को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया है और अमेरिकन लड़कियों का बाहर जाना भी रोक दिया है। इस क़ानून ने अमेरिका और दूसरे देशों के साथ जो व्यापार हो रहा था, उसे बन्द करने में बहुत कुछ सहायता पहुँचाई है।

६ वर्ष के बाद, अर्थात् चौथी मई सन् १९१० में, पेरिस में, तेरह राष्ट्रों की (जिनमें उपर्युक्त १२ राष्ट्रों के साथ ब्रेज़िल भी शामिल था) एक सभा हुई और सर्व सम्मति से यह पास हुआ कि वेश्यावृत्ति के लिए स्त्रियों और लड़कियों का ले जाया जाना क़ानूनन जुर्म क़रार दिया जाय और इसके कर्त्ताओं को सख्त सजायें दी जायँ।

सन् १९१४ में, अमेरिका की समाज-सुधार-सभा ने एक कमीशन द्वारा यूरुपीय देशों की जाँच करवाई। इसके एक प्रभावशाली सदस्य मि० इब्राहीम फलेक्सनर ने "यूरुपीय देशों में वेश्यायें और व्यभिचार" के नामसे एक सनसनीखेज पुस्तक निकाली, जिसकी बिक्री बहुत ज्यादा हुई और अनेक देशों में इसके विरोध

समिति का निर्माण हुआ और उस समिति ने बड़े प्रयत्न और परिश्रम से अपनी रिपोर्टों को तैयार किया।

साधारणतया यह प्रश्न उठता है कि क्या स्त्रियों और बच्चियों की तिजारत दुनिया में अब भी जारी है? क़िस्से-कहानियों के तौर से जनता में गोरे ग़ुलामों के व्यापार की कथायें जारी हैं और उन्हें उसके विरोधी क़ानूनों के बनने की परिस्थितियाँ भी मालूम हैं। लोगों का खयाल हो गया है कि ये पुराने ज़माने की बातें हैं। कभी कभी जब अख़बारों में लड़कियों के ग़ायब होने और बड़ी तादाद में उड़ा ले जाने की कथाएँ छपती हैं तब थोड़ी देर के लिए तो लोग ज़रूर सन्नाटे में आजाते हैं, पर दूसरे ही क्षण खयाल कर लेते हैं कि ये घटनाएँ असत्य हैं, अख़बारों की बिक्री बढ़ाने के तरीक़े हैं। परन्तु प्रत्येक मुल्क में, और प्रत्येक बड़े शहर में नित्य ही ख़ूबसूरत जवान और छोटी लड़कियाँ और स्त्रियाँ उड़ाई जा रही हैं और देश-विदेशों में वेश्या या रखेली बनाई जाने के लिए ले जाई जा रही हैं।

प्रत्येक देश में विदेशी सुन्दरियों की क़द्र विशेष है, क्योंकि उनमें एक नवीनता रहती है जो अपने देश की बालाओं में नसीब नहीं है। अमेरिका में एक से एक बढ़कर सुन्दरियाँ मौजूद हैं, पर वहाँ के निवासियों को नये मुल्क की, नये तर्ज़ की, नई जाति की और नये रूप-रंग की स्त्रियों की ज़रूरत है। यही हालत इंग्लैंड, फ्रांस इत्यादि अन्यान्य देशों की है। सभी मुल्कों में विदेशी सुन्दरियों की विशेष माँग है। अमीरों के समाज में इनका रखे-

स्त्रियों के रूप में रक्खा जाना सर्वत्र बहुत प्रचलित है। यह भी देखा गया है कि गानेवाली और चित्रकला जाननेवाली बालाओं को आसानी से फँसा लिया जाता है और फिर दूसरे देशों में ले जाकर उनके रूप और कला के सम्मिलित प्रयोग से, धनाढ्य लोगों से बहुत पैसा ऐंठा जाता है। इन स्त्रियों के द्वारा कोकीन, शराब और ऐसे ही अन्य मादक पदार्थ बिकवाने में बहुत धन मिलता है और पेशे की उन्नति होती है।

स्त्रियों की तिजारत का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक रुपया कमाना है। इस पुस्तक के पाठकों को पता चलेगा कि आज भी इस विषय में किञ्चित परिवर्त्तन नहीं है। यह वह व्यापार है जिसके द्वारा बहुत लाभ होता है और अत्यधिक फ़ायदे की सदा सम्भावना रहती है। सभी व्यापारों की तरह यह व्यापार भी आमदनी और रफ़्नी (Supply and demand) के ऊपर फलता-फूलता है। हमने इन व्यापारिक शब्दों का प्रयोग इसलिए किया है कि उनके द्वारा इस राक्षसी प्रथा के तिजारती रंग-रूप का अच्छा आभास हो जाता है। वेश्याओं की आवश्यकता कभी किसी भाग में और कभी किसी देश में उठती और बढ़ती रहती है। क़िस्मों की माँग भी रुचि के अनुरूप बदलती जाती है। दिल्ली का दलाल उनसे बहुत फ़ायदा उठाता है और जब जहाँ जैसी जितनी चीज़ की ज़रूरत होती है तब तहाँ तैसी और उतनी सप्लाई करके मालामाल होता रहता है।

वे व्यक्ति—स्त्रियाँ और पुरुष—जो इस पाप-व्यापार में लगे हुए

हैं, विभिन्न प्रकार के, अनेक मुल्कों के और बड़े फ़ितरती लोग हैं। आगे की पाप-कहानियों के पढ़ने से पाठक उनकी कृतियों को कुछ कुछ समझ जायँगे। पुस्तक में जिन घटनाओं का आगे उल्लेख है वे प्रायः उसी तरह ज्यों की त्यों उद्धृत की गई हैं जिस तरह जानकारी और बातचीत हुई है। यद्यपि ये लोग, जो इस पाप-पूर्ण व्यापार में लग रहे हैं, विभिन्न जातियों के लोग हैं, पर वे कुछ ऐसी भाषा बोलते हैं और ऐसे सांकेतिक शब्दों का प्रयोग करते हैं कि सब चोर चोर मौसेरे भाई के रूप में एक दूसरे से दूध शक्कर की तरह घुले-मिले हैं। व्यापारिक मनोवृत्ति अपना अपना व्यक्तिगत लाभ देखती है, अतएव इनके बड़े बड़े समूह, संगठन और लिमिटेड फ़र्म नहीं हैं। जो कुछ हो सो अपने लिए हो, यही इनके तिकड़मों का मूल मंत्र है। ये लोग समाज के वे कीड़े हैं जो उसके मांस पर तो पलते ही हैं, साथ ही हड्डियाँ तक चिचोर कर समाज का सत्यानाश करने से बाज़ नहीं आते।

इनके शिकार की अवस्था इनसे बिल्कुल विरुद्ध रहती है। ज़रूरत उससे सब कुछ करा लेती है। मजबूरी ने उन्हें पस्त कर रक्खा है। हमने क़िस्म क़िस्म की स्त्रियों और बालिकाओं की अलग अलग व्याख्या करने की कोशिश की है, परन्तु बहुतों का व्यक्तित्व श्रेणी-विभाग को लाँघ जाता है और कुछ ऐसा मिश्रित रहता है कि उसका श्रेणी-विभाग करना असम्भव हो जाता है। हमारा वृत्तान्त पढ़ते समय पाठकों को यह बात ध्यान में रखने

की है। जिन खास बातों की जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा की गई वे इस प्रकार हैं—

(अ) जिन देशों में जाँच-कमीशन गया, उनमें विदेशी स्त्रियों की संख्या क्यों बहुत ज्यादा थी ?

(ब) किन किन मुल्कों में विदेशी महिलाओं की माँग विशेष थी और उसके मुख्य कारण क्या थे ?

(स) किन किन प्रदेशों से स्त्रियाँ और लड़कियाँ ज्यादा भगाई जा रही थीं ? वे बालिकायें या बालाएँ विदेशों को स्वतः मरजी से जातीं या दूसरे लोगों के बहकावे, प्रभाव या झूठे प्रलोभनों में पड़ कर पाप के जाल में फँस जाती थीं ?

(द) स्त्रियों के व्यापारी और दलाल कौन कौन हैं और कहाँ रहते हैं ?

(ह) किन देशों से, किन तरीक़ों से, किन प्रलोभनों से और किन मार्गों से ये स्त्रियाँ ले जाई जाती हैं ?

इन प्रश्नों के उत्तर पाठकों को इस पुस्तक के आगामी परिच्छेदों में विस्तार-पूर्वक देखने को मिलेंगे।

———

२—नङ्गा चित्र

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार में लगे रहनेवाले व्यक्तियों की संख्या काफ़ी बड़ी है। आगे चल कर जो आँकड़े दिये गये हैं वे केवल रजिस्ट्री-शुदा उन वेश्याओं के हैं जो इस काम के लिए देश-विदेश से लाई जाती रही हैं। जो कुमारियाँ दलालों की संरक्षता में रहती हैं, या गुप्तरीति से व्यभिचार का पेशा करती हैं वे संख्यातीत हैं, हमारा ऐसा अन्दाज़ है और यह अन्दाज़ प्रायः ठीक ही है कि वे पेशेवर वेश्याओं से कम से कम दसगुनी हैं। ऐसी युवतियाँ अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बहुत बड़ी तादाद में ख़रीद-फ़रोख्त के लिए लाई और ले जाई जाती हैं।

ब्रेज़िल दक्षिण अमेरिका में बहुत बड़ा राज्य है जिसका क्षेत्रफल किसी भी महादेश के बराबर कहा जा सकता है। यहाँ की सरकार ने लीग आफ़ नेशन्स को ता० १२ मार्च सन् १९२३ को पत्र लिखते हुए लिखा था कि चकलों में तथा गुप्तरीति से व्यभिचार करने-वाली औरतों में विदेशी स्त्रियों की तादाद हमारे यहाँ बहुत ज़्यादा है। यहाँ चकलों को संख्या बहुत है, जिनमें व्यापारियों के शब्दों में यूरुप के प्रत्येक देश का अच्छे से अच्छा माल भरा पड़ा है। ब्रेज़िल की वेश्याओं और मिस कहलाने-वाली कुमारियों में जो व्यभिचार में लगी हुई हैं, विदेशियों की संख्या अस्सी फ़ीसदी से ज़्यादा है।

मांगीविडियो (दक्षिणी अमेरिका) के स्वास्थ्य-विभाग ने जो सूचना दी है उससे पता चलता है कि विदेशी वेश्याओं की संख्या दिन-प्रतिदिन वहाँ भी बढ़ रही है। सन् १९१९ में २४ फ़ीसदी वेश्यायें विदेशी थीं और १९२३ में वे बढ़ कर ४२ फ़ी सदी हो गईं। १९२३ में २२७ नई वेश्यायें रजिस्टर में दर्ज की गईं। उनमें ९६ ग़ैर मुल्कों की थीं।

ब्यूनासेरीज़ (दक्षिण अमेरिका के अरजंटाइन देश की प्रसिद्ध राजधानी) के स्वास्थ्य-विभाग ने रिपोर्ट दी कि सन् १९२१ से प्रति वर्ष तीन-चार सौ नई वेश्यायें बढ़ती जाती हैं जिनमें ७५ फ़ी-सदी परदेशिनें हैं। सन् १९२४ में वहाँ १२०० रजिस्ट्री की हुई और सात-आठ हज़ार प्राइवेट वेश्यायें थीं। उनमें कम से कम ४५०० विदेशिनें थीं। ब्यूना सेरीज़ की आबादी २३१०४४१ है। वहाँ विदेशी स्त्रियों की माँग बहुत है। यूरुप के देशों से ब्यूना-सेरीज़ के लिए खास तौर से सुन्दरी षोडशियों का क़ाफ़ला चला करता है। वहाँ पहुँचने पर महीने दो महीने के अन्दर ही इनका व्यापार ज़ोर-शोर से चमक उठता है।

मैक्सिको (अमेरिका) के अधिकारियों के कहने के अनुसार उस देश में विदेशी वेश्याओं की तादाद ५०-६० फ़ीसदी से ज्यादा नहीं है।

बहुत से देशों ने वेश्या-वृत्ति करने वाली स्त्रियों का अपने यहाँ प्रवेश ही रोक दिया है। बहुत से देशों ने विदेशी वेश्यायें अपने यहाँ से निकाल बाहर की हैं। रोकी और निकाली जाने-वाली

वेश्याओं की संख्या से भी पता चलता है कि यह व्यापार कितना बढ़ा-चढ़ा है।

बहिष्कार की नीति से यह काली करतूतों वाली दुनियाँ बहुत घबड़ाती है और उन देशों में अपना कार्य-चक्र नहीं चलाना चाहती, जहाँ इस तरह की कठिनाई होती है।

अमेरिका की एक वार्षिक रिपोर्ट से पता चलता है कि सन् १९२४ में १६३ वेश्यायें इस देश में घुसने से रोकी गईं और १८६ विदेशिनें जो चकलों को चला रही थीं, देश से बाहर निकाल दी गईं। ये इन इन देशों की थीं—

किस देश की	संख्या	जो निकाली गईं	जो घुसने ही न पाईं
मैक्सिको	१३८	७०	६८
इंग्लैंड	७८	४९	२९
फ्रांस	३२	१६	१६
आयरलैंड	१६	६	१०
स्काटलैंड	१७	९	८

स्विट्ज़रलैंड से सन् १९२३ में १९८ विदेशी स्त्रियाँ निकाली गईं, जिनमें ९७ जर्मनी की और ६५ इटली की थीं। स्विस अधिकारियों ने सन् १९२४ में ४६ और १९२५ में भी ४१ फ़ाहिशा स्त्रियाँ निकाल बाहर की।

बेल्जियम सरकार ने रिपोर्ट दी कि सन् १९२४ में हमने २-६ विदेशी वेश्यायें निर्वासित कीं। ये देश भर में फिर फिर कर,

लुक-छिप कर पैसा कमाती थीं और हमारे देश के धन और यौवन को चूसती थीं।

नीदरलैंड (यूरुप) की रिपोर्ट और भी विचित्र है। नीदरलैंड छोटा सा देश है। इस देश में एक साल के भीतर ३९४ जर्मन, बेल्जियम, फ्रेंच और इंग्लिश वेश्यायें और प्राइवेट व्यभिचार करने वाली स्त्रियाँ निकाल दी गईं अन्यथा देश के जन-बल को अपरिमित हानि पहुँचती।

डैनजिग शहर की रिपोर्ट है कि उस छोटे से शहर से १९२३-२४ के बीच २९ गौराङ्ग स्त्रियाँ निकाली गईं। इनमें अधिकतर जर्मनी और पोलैंड की थीं।

अलेक्जेण्ड्रिया बन्दरगाह पर नाबालिग उम्र की लड़कियाँ हर साल बड़ी संख्या में बाहर जाने से रोकी जाती रही हैं। इन्हें औरतों के दलाल खरीद कर फरोख्त के लिए या चकले चलाने के लिए बाहर ले जाते हैं। रोकी जाने वाली लड़कियों की संख्या इस प्रकार है—

सन्	संख्या
१९२०	६४
१९२१	१४०
१९२२	२८८
१९२३	४७५
१९२४	६५०
१९२५	५८९

इस संख्या से यह साबित होता है कि लगातार इस व्यापार की वृद्धि होती जा रही है, जो शायद इन दिनों संसार के मुख्य मुख्य राष्ट्रों के संगठित प्रयत्न के कारण कुछ कुछ रुकी है।

एक बार जाँच-कमेटी के एक सदस्य से, जो जाँच के लिए यूरुप के एक बन्दरगाह पर उतरे थे, चकलों के एक दलाल से इस प्रकार बात-चीत हुई—

"मैक्सिको में मिस्टर······एक बड़ा उस्ताद आदमी है। वह लड़कियों को उड़ा लाने में बड़ा सिद्ध-हस्त है। वह तुम्हारे साथ अभी नाव से उतर कर शहर में गया है, पर तुम न पहचान सके कि वह कौन है। वह हर साल तीन-चार बार यूरुप की यात्रा किया करता है।"

उरुग्वे की एक स्त्री ने बतलाया था कि यूरुप के एक होटल में तैंतीस लड़कियाँ काम करती थीं। वे धीरे धीरे सब की सब दक्षिण अमेरिका चली आईं और ख़ूब पैसा कमा रही हैं। हम लोग हमेशा यूरुप से 'ताजा और नया माल' लाने की कोशिश में रहते हैं, क्योंकि कमसिन कुमारियों के मुखड़ों पर फिदा होने वाले और उनके साथ एक रात में हजारों रुपये बहाने वाले बहुत से उल्लू के पट्ठे अमीरजादे आते हैं।

ब्रेजिल में एक गुप्त चकले की सञ्चालिका ने कहा था कि अगर मेरे पास साठ कमरे भी हों तो भी मैं रोजाना आली लड़कियों की जरूरत को पूरा नहीं कर सकती। रंग-ढंग से और नये देशों से आती ही रहती हैं।

दलाल लोग इनकी खोज में, देश-विदेशों में नित्य घूमा ही करते हैं। आमतौर पर एक दलाल एक लड़की पाकर चल देता है और बड़ी बड़ी तिकड़मों से, जिनका उल्लेख आगे है, ।वह कन्या को ठीक ठिकाने पहुँचा देता है। परन्तु बहुत से दलाल इतने चालाक और फ़ितरती हैं कि वे तीन तीन और चार चार मिसों को भी उड़ा ले जाते हैं। कई तो सरकस-वाले, सिनेमा-वाले, शेविंग सैलून और, चित्रकला विशेषज्ञ बन जाते हैं और उनके ज़रिये से पैसे के लिए रोज़गार के लिए भटकती हुई स्त्रियों और लड़कियों को फँसाया करते हैं। अभी हाल में एक बनावटी थियेटर-वाला पकड़ा गया था, जिसने दक्षिण अमेरिका में थियेटर खोलने के नाम पर कई दर्जन १८ से २१ वर्ष तक की लड़कियाँ आस्ट्रिया-हंगरी और जर्मनी से उड़ाई थीं। दक्षिण अमेरिका में ले जाकर वह उनसे थियेटर की आड़ में व्यभिचार करवा करवा कर पैसे इकट्ठे करता, पर मामला खुल गया। अधिकारियों को शुबहा हो गया, अतएव उसे उन लड़कियों को ले जाने का मौक़ा न मिल पाया। लड़कियों को समझा कर तितर-बितर कर दिया गया और उन्हें उनके घर पहुँचा दिया गया, तथा उस दलाल को देश से बाहर निकाल दिया गया, क्योंकि सख्त सज़ा दे सकने लायक़ कोई सुबूत नहीं मिला था।

इस व्यापार की तरक़्क़ी का मुख्य कारण विदेशी औरतों की तिजारत है। होटलों, सैलूनों, काफ़ों, सरायों, थियेटरों, चकलों वग़ैरह में सभी जगह दूसरे देशों की युवतियों की माँग है। यह

प्रश्न उठता है कि आखिर इस माँग का कारण क्या है और उससे क्यों इतना मुनाफ़ा होता है ?

इसका मुख्य कारण रुपया ही है जिसके लिए इतने झंझट, इतनी परेशानी और इतना खतरा उठाकर औरतों का व्यापारी और दलाल एक देश से दूसरे देश में औरतों और कन्याओं को क्रय-विक्रय के लिए लाया ले जाया करता है।

किसी देश में पुरुषों की संख्या का ज्यादा होना और स्त्रियों की तादाद का कम होना भी इस पाप-व्यापार की तरक्की का एक कारण हो सकता है।

ब्रैज़िल (दक्षिण अमेरिका) में लाखों एकड़ ज़रखेज़ ज़मीन खाली पड़ी है। यहाँ की सरकार ने संसार के सभी मुल्कों की सरकारों को लिखा है कि हमारे यहाँ बिना लगान और किराये के ज़मीन उन लोगों को रहने-बसने और जोतने के लिए मुफ़्त दी जाती है जो यहाँ ब्रैज़िल में आकर स्थायी रूप से रहने के इच्छुक हैं। परिणाम-स्वरूप सन् १९११ से २४ तक १४ वर्षों के बीच में यहाँ १२ ३०७२६ पुरुष और ५३६५४४ स्त्रियाँ बसने के लिए गई हैं। पुरुष स्त्रियों से कोई सात लाख ज्यादा हैं, अतएव यहाँ के लिए स्त्रियों की माँग क्यों ज्यादा है, यह पाठक भली भाँति समझ सकते हैं।

दक्षिण अमेरिका के एक मुख्य केन्द्र का हाल किसी प्रत्यक्ष-दर्शी ने यों बयान किया है—

(अ) अमुक थियेटर में हर रात को गुप्त रूप से

व्यभिचार करनेवाली सौ-दो सौ वेश्यायें ग्राहकों की तलाश में मड़राया करती हैं। वे बहुधा कमसिन लड़कियाँ होती हैं। थियेटर-वाले इनको बिना टिकट के भी अन्दर जाने देते हैं, क्योंकि इससे उनके यहाँ दर्शक ज्यादा आते हैं। इनमें अधिकांश विदेशी छोकड़ियाँ रहती हैं। उनमें से कइयों से मैंने बात की तो पता चला कि दर्जन भर से ज्यादा तो हफ़्ता दो हफ़्ता पहले ही इस देश में द्रव्यार्जन करने आई हैं और पैसा पैदा कर स्वदेश लौट जाने की आकांक्षा रखती हैं।

(ब) अब क्लब की बात कहता हूँ। इसमें खाने-पीने और नाचने-गाने का भी इंतजाम रहता है। इसमें जो युवतियाँ नौकर हैं उनका मुख्य काम है आनेवालों को अपने हाव-भाव और कटाक्ष से मोहित करना, उनको साथ लेकर नाचना, उनके गले में हाथ डालकर बैठना, और उन्हें शराब पिला पिलाकर होटल के बिल को बढ़ाना। ग्यारह बारह बजे रात में होटल के बंद हो जाने पर ये *लड़कियाँ उन अमीर लोगों के पास पहुँच जाती हैं*, जिनके साथ होटल में और नाचते समय वे समय नियत कर लेती हैं। यदि कोई लड़की इन कामों से बचना चाहती है तो होटल-वाले उससे नाराज़ होते हैं, उसे निकाल देने की धमकी देते हैं, क्योंकि एक तो वे कमाई के पैसे में आधे साझीदार रहते हैं और दूसरे जो सुन्दरियाँ ज्यादा हसीन होने के साथ ही आगन्तुकों को प्रेम-पाश में बाँधना जानती हैं, वे होटल की जान समझी जाती हैं और होटल को बहुत लाभदायक साबित होती हैं।

दूसरा मुख्य कारण जो वेश्या-वृत्ति को प्रोत्साहन देता है किसी जन-समुदाय का स्थायी तौर से एक जगह से दूसरी जगह को चला जाना, या ले जाया जाना है। जैसे आब-हवा बदलने के लिए, देश-विदेश भ्रमण के लिए, जहाज़ी क़वायद के लिए, तफ़रीह के लिए, या फ़ौजियों की शिक्षा के लिए। फ़ौजों और जहाज़ों के पहुँचने से स्त्रियों की माँग जितनी बढ़ जाती है उतनी किसी बात से नहीं बढ़ती। एक बार अख़बार में एक समाचार छपा था कि एक अमेरिकन लड़ाकू जहाज़ दो हज़ार फ़ौजी सिपाहियों को लेकर पनामा पहुँचा। नतीजा यह हुआ कि शहर की सड़कें जहाज़ियों और फ़ौजियों से खचाखच भरी रहने लगीं। दूर दूर की वेश्यायें इस आकस्मिक माँग को सुनकर दौड़ी आईं, और औरतों के दलालों ने बड़ी रक़म कमाई। जब जब पनामा नहर से लड़ाकू जहाज़ गुज़रा करते हैं तब तब यही दशा हो जाती है। स्त्रियों के व्यापारी ऐसे मौक़े ताके रहते हैं और चंद महीनों में ही चार-पाँच हज़ार डालर तक कमा लेते हैं।

फ़ौजों का कहीं पहुँच जाना इस बात का सिगनल होता है कि वहाँ स्त्रियों की बड़ी तादाद में ज़रूरत पड़ेगी। देश-विदेश की वेश्यायें और दलाल खोज खोजकर विदेशी सुन्दरियों को जुटाते हैं और फ़ौजियों से जितना पैसा छीन सकते हैं, छीन लेते हैं। इन लोगों को सैनिकों की तन्ख़्वाहों और उनके मिलने की तारीख़ों का वैसे ही पता रहता है जैसा कि फ़ौजों के अफ़सर को। फ़ौज के डाक्टरों की रिपोर्टों से मालूम होता है कि तन्ख़्वाह

बटने के दिन जिन गोरों को छुट्टी दे दी जाती है उनमें सुजाक और गरमी की बीमारी बहुत बढ़ जाती है, पर जिन्हें दो-चार दिन बाद छुट्टी मिलती है उनमें इन बीमारियों की बहुत कमी पाई जाती है। कुछ वर्षों पहले तो यहाँ तक होता था कि फ़ौजों के अमेरिका के दक्षिणी प्रदेश में जाने पर वहाँ की म्यूनिसिपेलिटियों के चेयरमैन या मेयर युद्ध-सचिव को सूचना दिया करते थे कि हम अमुक स्थल पर इतनी युवतियों का बन्दोबस्त कर सकेंगे, वहीं फ़ौज के पड़ाव का बन्दोबस्त करिये। इस तरह लोग मैक्सिको से स्त्रियों को लाकर या ख़रीद कर वेश्यावृत्ति द्वारा बहुत सा द्रव्य कमाते थे। अब यह प्रथा बंद हो गई है और फ़ौजी भू-भाग में बड़ी सख़्ती रहती है।

इसी तरह की बात उन लोगों के साथ लागू होती है जो व्यापार या कला-कौशल के लिए घर-बार छोड़ कर अन्य देशों में पड़े रहते हैं और वर्षों अपनी पत्नी और बच्चों से अलग रहते हैं। एक बार जिनेवा में कई वर्ष हुए, जेमनास्टिक का खेल हुआ। जेमनास्टिक दिखलानेवाली सभी कमसिन युवतियाँ थीं, जो बहुत ही थोड़े कपड़े पहने थीं। उनके शरीर का गोरापन देह, की लुनाई और गुलाबी लाली झलक झलक कर दर्शकों के चित्त को मोह रही थी। उनके तौर-तरीक़े और अदा भी निराली थी। वे यौवन से मदमाती होकर और अपने मास्टर की हिदायतों के अनुसार, रह रहकर अपने अँगों के वस्त्र हटा हटा लेती थीं, जिससे बड़ी करतल ध्वनि होती थी। खेल के बाद प्रायः सभी

युवतियाँ किसी न किसी युवा के बाहुपाश में दिखाई दीं। उन्होंने एक एक रात की क़ीमत सौ-सौ और दो-दो सौ डालर ली, इससे उनको तो बहुत आमदनी हुई ही, साथ ही, उनके मालिकों को भी अच्छी रक़म हाथ लगी, क्योंकि कमाई के आधे में उनकी पत्ती थी। उन युवतियों में सभी यूरुप, काकेशिया और अमेरिका की सुन्दरियाँ थीं।

इसी तरह की मिसालें उन जगहों पर भी बहुत मिलती हैं जहाँ घुड़दौड़, या रेस हुआ करती हैं। मैक्सिको के तायाजूना (Tia Juana) शहर में, जो अमेरिका की सरहद के बिल्कुल क़रीब है, साल में कई महीने घुड़दौड़ का मेला लगा रहता है। इसे वहाँ रेसिंग सीजन कहते हैं और इसमें भाग लेने के लिए लाखों अमेरिकन अमीर सदा आया करते हैं। यहाँ पर औरतों के दलाल, देश और विदेशों से अच्छी अच्छी नवेलियाँ लाकर जुटाते हैं और मुँह माँगे-दाम पाते हैं।

घुमक्कड़ यात्री, जो देश-विदेशों में चक्कर लगाने, या दृश्य-दर्शन के लिए निकलते हैं, वे भी व्यभिचार को बहुत प्रोत्साहन देते हैं। वे पानी की तरह पैसा बहाते हैं, अतएव उनके लिए घड़ी दिमकतों से मन के अनुरूप, अच्छे अच्छे माल लाये जाते हैं। मैक्सिको, ईजिप्ट, एलजियर्स, ट्यूनिस प्रभृति ऐसे केन्द्र हैं, जहाँ औरतों की तिजारत के बड़े बड़े अड्डे हैं और यात्री बहुधा वहाँ मिलने-वाली दूर की परियों के लालच में बहुत बड़ी संख्या में

आया करते हैं। इनमें अपने धन और समृद्धि के कारण अमेरिका-वाले अग्रगण्य गिने जाते हैं।

वे जिले या मुहल्ले, जिनमें वेश्यायें स्थायी रूप से व्यभिचार करने के लिए रहने दी जाती हैं, चरित्रहीनता बढ़ाने में बहुत सहायक होते हैं। इन मुहल्लों का हाल* एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है कि वेश्यायें ऊपर कोठों पर, दरवाजों और खिड़कियों के पास खड़ी रहती हैं। उनकी पोशाक ढीली-ढाली, भड़कीली और छोटी होती है, जिसमें बाँहें और आधे आधे पैर खुले रहें। वे आसपास के गुजरने वालों को संकेतों से और बहुधा जोर जोर से भी बुलाती हैं। इनके मकान स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छे नहीं होते और बेपरदगी भी बहुत रहती है। रातों-दिन, सैकड़ों बूढ़े और जवान इन सड़कों से निकलते हैं, वेश्याओं के मकानों में जाते आते हैं, फौजी और जहाजी लोग तो बहुत बड़ी संख्या में नित्य दिखलाई देते हैं। बात यह है कि ज्यों ही कोई जहाज बन्दरगाह पर पहुँचता है, वेश्याओं के दलाल यात्रियों के पास पहुँच जाते हैं और उन्हें 'माल-टाल' की बाबत आगाह कर देते हैं। ये ही लोग उनको ले जाते हैं, वेश्या पसंद करवाते हैं और सौदा पटवाते हैं। इनकी गुलाम वेश्यायें इन्हीं के आदेश से शराब और कोकीन बेचकर आमदनी करती हैं। ये वेश्यायें पतित से पतित चरित्रवाली होती हैं। कोई रोक-थाम और नियंत्रण न

---

* मैज़िल (दक्षिण अमेरिका) का दृश्य।

होने के कारण सैकड़ों युवक नित्य पतन के गड्ढे में गिरते रहते हैं।

लाइसेन्स-शुदा जगहें भी इस पाप-वृत्ति को बढ़ाने में बहुत सहायक होती हैं। इस बात के अनेक प्रमाण मौजूद हैं कि इस प्रथा के द्वारा नई स्त्रियों की माँग बराबर बढ़ती रहती है और इसके कारण राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में तरक्की हुई है। नीदरलैंड की सरकार ने अपने एक पत्र में लीग को लिखा है कि इस तिजारत में लगे रहनेवाले आदमियों के लिए, सनद-शुदा जगहों का होना बड़ा लाभप्रद और व्यापार के लिए सुगम साबित हुआ है। इन जगहों पर युवतियों की ज़रूरत बनी ही रहती है और यहाँ उन्हें लाकर मनमाने तौर से बिना किसी भय के उनसे व्यभिचार करवाया जाता है। एक दुखिया लड़की का दास्तान सुनिए—

"मैं पहले पैरिस में थी। मेरी मालकिन के आफ़िस कई जगह हैं। वे तीन चार महीने के बाद हम लोगों का तबादला किसी नई जगह को कर देती हैं, क्योंकि ग्राहक नई चीज़ माँगने आते हैं और नई चीज़ के लिए अच्छे पैसे देते हैं। जो चीज़ पैरिस के लिए पुरानी हो चुकी, वह ट्यूनिस के लिए नई है और जो ट्यूनिस के लिए पुरानी हो चुकी, वह पैरिस के लिए नवीन है। इसी तरह हम लोगों का अदला-बदला हुआ करता है। हम सब लड़कियों ने अपने मालिकों के साथ शर्त्तनामा लिख रक्खा है कि जहाँ वे भेजेंगे, वहाँ उसी दम हमको जाना पड़ेगा। हम

लोगों को एक घंटे के नोटिस में कहीं भी जाने के लिए तैयार हो जाना पड़ता है। हर एक शहर में इन रोजगारियों का एक अपना आदमी रहता है जो हमारी ऐसी लड़कियों को फँसा फँसा कर बराबर भेजा करता है। हम लोगों की जरूरतें और नई दुनियाँ के फैशन इतने बढ़े-चढ़े हैं कि बहुत पैसे की आवश्यकता रहती है। हम लोगों से वह आदमी बहुधा मिलता-जुलता रहता है और बातों बातों में, एक हमदर्द की तरह हमारा कचा चिट्ठा पूछ लेता है। हमें तकलीफ में पड़ी देखकर वह एक दोस्त की तरह हमारी सहायता करता है और हमें बड़े बड़े प्रलोभन देकर फँसा लेता है। एक बार उसके चंगुल में फँस जाने पर निकलना आसान नहीं होता, ज्यों ज्यों हम निकलने की कोशिश करती हैं, त्यों त्यों और फँसती जाती हैं। पहले पहल हम लोग बहुत झिझकती हैं। अभी दो तीन हफ़्ते पहले एक नवेली दीक्षित होने के लिए हमारे बीच में लाई गई। उसे अच्छे अच्छे कपड़े दिये गये, सेंट और लवेंडर लगाये गये और वह हम लोगों के बीच में बैठाली गई। हमारे दोस्त लोग आते थे, हमसे छेड़छाड़ करते थे, चुम्बन और आलिङ्गन करते थे, और बाद में उस दुष्कर्म में भी मशग़ूल हो जाते थे। वह बैठी हुई अज़हद शर्मा रही थी और शर्म के मारे नीचे ज़मीन में गड़ी जाती थी। इतने में एक अमीर-ज़ादे ने दलाल और मालकिन से क़रार करके उसकी ठोड़ी ऊपर को उठा दी। वह लज्जा से लाल हो गई! उसे उसने पकड़ कर सीने से लगा लिया और चुम्बन की झड़ी लगा दी। यों ही दो

एक दिन जब वह सह गई तब हम सब ने मिलकर, हँसते-खेलते हुए उसकी लाज की लगाम हटा दी। अब तो वह भी हम लोगों की जैसी हो गई है और रोज़ कितने आदमियों को ख़ुश करती है!"

बहुत से लोगों का ख़याल है कि शहरों और क़स्बों में चकलों का होना जरूरी है और इसलिए जरूरी है जिसमें बदमाशों और पत्नी-रहित लोगों की नजर कुटुम्ब-वाली स्त्रियों और लड़कियों पर न पड़े। अगर चकले बंद कर दिये गये तो शहरों में शरीफ़ ख़ान्दान की लड़कियों का बचना मुश्किल हो जायगा। सुन्दरी लड़कियों और स्त्रियों की ख़ातिर रोज़ चोरी, डाका और जंग हुआ करेगा। इस कथन में सचाई हो, या न हो, पर सार्वजनिक सिद्धान्त के रूप में इस प्रकार के व्यभिचार को न्यायपूर्ण नहीं सिद्ध किया जा सकता। इसके खिलाफ़, जाँच करने पर यह बराबर सिद्ध होता रहा है कि चकलों या वेश्याओं के अड्डों के कारण चारित्रिक पतन बहुत बढ़ जाता है और 'ज्यादती' के परिणाम-स्वरूप सार्वजनिक स्वास्थ्य बहुत गिर जाता है।

पिछले वृत्तान्त से हमारे पाठक समझ ही गये होंगे कि देश देश में सर्वत्र विदेशी सुन्दरियों की माँग बढ़ रही है। एक बार किसी देश की लड़की जब ऐसे दूरस्थ देश में पहुँच जाती है, जहाँ की भाषा और रीति-रिवाज वह नहीं जानती, और अपने घर और मित्रों से बहुत दूर हो जाती है, तो उस बेचारी की कुछ चल नहीं पाती। वह अपने दुःखों की फ़रियाद किसी से कर

नहीं सकती और लाने वाले के पंजे में पड़कर, उसके ज़ुल्म और ज्यादतियों को सहकर, जैसे वह कहता जाता है वैसे ही करती जाती है। एक ओर तो विदेशी सुन्दरी का विज्ञापन ख़ूब होता है, ग्राहक विदेश से आई हुई नई चीज़ ढूँढ़ता आता है और दूसरे औरतों के दलाल को विदेशिन से सुभीते के साथ व्यभिचार कराने में आसानी रहती है।

जगह जगह पर कमीशन के सदस्यों ने जाँच की तो प्रायः सभी जगह एक सा उत्तर मिला—"My customers dont want local girls, they want girls from Europe" अर्थात् मेरे ग्राहक यहाँ की, स्थानीय, लड़कियाँ पसन्द नहीं करते, वे यूरुप की षोडशियाँ चाहते हैं।

यह प्रश्न करने पर कि उन्हें तुम बुलाती कैसे हो, उनके पास यहाँ आने के लिए पैसा कहाँ होता है, उत्तर मिला—

"पैसा मेरे एजेन्टों के पास रहता है। वे ही उनका टिकट ख़रीदते हैं और फँसा कर लाते हैं। यूरुपीय लड़कियों के दाम भी अच्छे मिलते हैं।"

निःसन्देह यूरुप की लड़कियाँ सुन्दरता में अपना सानी नहीं रखतीं और अपनी शिक्षा, फैशन और वैज्ञानिक प्रणाली से रहन-सहन के कारण बहुत आकर्षक होती हैं। बहुत सी लड़कियाँ, जो धोखा देकर लाई जाती हैं, व्यभिचार के बहुत से तरीक़े नापसन्द करती हैं और ग्राहकों को ख़ुश करने के लिए बहुतेरे तरीक़े काम में नहीं लातीं। अतएव ऐसी लड़कियाँ पहले

सिखलाई जाती हैं। जो फिर भी सीखने से इनकार करती हैं वे कोठरियों में बन्द कर दी जाती हैं, कई कई दिन भूखी रक्खी जाती हैं, और पीटी भी जाती हैं।

यूरुप के एक शहर में एक दलाल ने बतलाया—"मैं चार लड़कियों के साथ शीघ्र ही दक्षिण अमेरिका जाऊँगा। वहाँ का सीज़न जल्दी ही चलेगा और पैसा भी अच्छा मिलेगा। मैंने इस व्यापार में ९००० पिसो यानी ३००० अमेरिकन डालर (क़रीब रु० १००००) लगा रक्खे हैं। इतने रुपयों को मैं एक ही साल में वसूल कर लूँगा और फिर कुछ तिजारत करूँगा। मेरी पत्नी इस लड़कियों के व्यापार को करती रहेगी और इस तरह हम लोग जल्दी ही अमीर हो जायँगे। फिर बुढ़ौती में पैसा ख़ूब होने से ज़िन्दगी बड़े आराम से कटेगी।" उसीने यह भी बतलाया कि जाड़े की ऋतु में जो ग्राहक आते हैं वे बहुधा अमीर होते हैं और १०० से १५० डालर तक छोड़ जाते हैं।

अच्छी लड़की किसे कहते हैं, यह भी सुन लीजिये—"आह! मेरे पास एक बड़ी अच्छी रमणी है। मैं उसे तब लाया था जब वह १६-१७ साल की बिल्कुल अछूती कली थी और अब वह ३२ साल की है। १६ वर्ष से वह मेरे होटल को रौनक़ बख़्श रही है। वह पोलैंड की रहने वाली है। उसने मेरे लिए बहुत रकम कमाई है। उसकी बदौलत ही मेरा सारा टीमटाम है। मैं चाहे छः महीने के लिए भी कहीं चला जाऊँ, पर वह कहीं नहीं जाने की, मेरे आने तक अपनी पैदा की हुई रक़म तथा दूसरी छोकड़ियों

की आमदनी की कौड़ी कौड़ी ईमानदारी से बचा रक्खेगी। उसके ऊपर मेरा इतना विश्वास है कि मैं तमाम कारोबार को उसकी जिम्मेदारी पर छोड़ कर चला जाता हूँ और कभी धोखा नहीं होता। अगर ऐसी ऐसी दस लड़कियाँ मिल जायँ तो फिर कहना ही क्या है, बड़ी जल्दी मालामाल हो जाऊँ।"

इस पाप-व्यापार को प्रोत्साहन मिलने का दूसरा कारण है गंदी पुस्तकों का प्रकाशन, नंगी तस्वीरों की बिक्री तथा ऐसे ही दूसरे सामानों की खरीद-बिक्री।

मादक वस्तुओं के सम्बन्ध में अधिक तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह हमारे विषय से बाहर की बात है, पर हाँ, इतना जोरों के साथ कहा जा सकता है कि शराब और कोकीन वगैरह के साथ बुरे से बुरे ढंग के व्यभिचारों का व्यापार होता है। कमीशन की रिपोर्ट में आदि से अन्त तक इस विषय का जिक्र भरा पड़ा है। वेश्याओं के मुहल्लों में, सैलूनों में, होटलों में, म्यूजिक-हालों में, थियेटरों में और सिनेमा के फ़िल्म लेने की जगहों में जहाँ जहाँ प्रेम और प्यार का अभिनय होता है, वहाँ वहाँ शराब एक लाजमी चीज हो गई है।

बेल्जियम के नाचने और गाने के कुछ स्थलों का विवरण सुनिये—"इन जगहों में शराब की बिक्री होती है, शराब की पिलाई खूब होती है, जो होटल की परिचायिकाओं द्वारा लाई और उड़ेली जाती है। ये नौकरानियाँ दर असल छद्म भेषिनी वेश्यायें

होती हैं। वे स्वयं भी शराब पीती हैं और मतवाली होकर आगन्तुकों के गले में हाथ डाल डाल कर उन्हें भी पिलाती हैं।"

अब ग्रीस का हाल सुनिये—"तीन जगहों में, जो सराय कहलाती थीं, जाँच करने वाले गये। इनमें निम्न श्रेणी के मुसाफिर ठहरा करते थे। सराय-वालों के नौकर चाकर घटिया शराब बेच रहे थे। उनसे मालूम हुआ कि सराय के मालिक को खास फायदा तो मद्य की बिक्री से होता है, अन्यथा सराय रखने की जिल्लत बर्दाश्त करने का फ़ायदा ही क्या है?"

ऊँचे दामों पर मद्य की बिक्री इन संस्थाओं को आर्थिक लाभ तो पहुँचाती ही है, साथ ही आगन्तुक लोग उसके द्वारा होश-हवाश खोकर जो वेश्या-गमन करते हैं उसमें भी उनका साझा रहता है। शराब की बिक्री पर बेचनेवालियों को कमीशन भी मिलता है, इसलिए वे उसकी बिक्री जी तोड़ कर करती हैं। नाचकर, गाकर, रिझाकर, सब तरह मादक वस्तुओं की बिक्री ही उनका ध्येय होता है। एक होटल के मालिक ने बतलाया था कि शराब की बिक्री का एक तिहाई हिस्सा लड़कियों को दिया जाता है। ये मुझे कमरे का किराया, और भोजन का चार्ज देती हैं, और आगन्तुकों से हर तरह से कमाती हैं। कोकीन की बिक्री भी बहुत होती है।

नंगी और असभ्य तस्वीरों की बिक्री भी यात्रियों के मन को चञ्चल करने में बहुत सहायता देती है। विदेश से आया हुआ यात्री, जहाज़ और रेल से उतरने के बाद ही इन तस्वीरों को देख

कर बुरे कामों के लिए प्रोत्साहित होता है। इन तस्वीरों को यात्री तक पहुँचाना दलालों का काम है।

गन्दी तस्वीरों का बेचना इस व्यापार का मुख्य अंग है। बड़े बड़े शहरों की गलियों में और सड़कों पर लुका-छिपा कर यह काम चलता रहता है। तस्वीरों के दाम भी अच्छे मिल जाते हैं और जिसकी तस्वीर है उसका पता-ठिकाना भी बतला दिया जाता है।

कहीं कहीं ऐसी तस्वीरों के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में सख्ती है। सादी वर्दी में पुलिस उन एजेन्टों की खोज में घूमा करती है जो इन्हें बेचते फिरते हैं। फिर भी चित्रों की बिक्री काफी हो जाती है, क्योंकि पकड़े जाने का खतरा, मिलने वाली रकम के लोभ से दूर कर दिया जाता है। तस्वीरों में शरीर के अंग-प्रत्यंग खुले रहते हैं। ये तस्वीरें बहुधा अत्यन्त रूपवती युवतियों की होती हैं, जो कुछ अधिक मूल्य पाने पर बिल्कुल नंगी होकर या शराब के टब में बैठकर बड़े हाव-भाव से फोटो उतरवा लेती हैं। निःसन्देह ये तस्वीरें बहुत उत्तेजक और व्यभिचार के लिए प्रोत्साहन देने वाली होती हैं।

जहाँ जहाँ विदेशी स्त्रियाँ खुल्लम-खुल्ला या प्राइवेट तौर से वेश्यावृत्ति में लगी हुई मिलीं, उनसे पूछने पर पता चला कि ये विदेशियों के बहकाने में आकर चली आई थीं। पैसे की तंगी ही मुख्य बात थी। आस्ट्रिया, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, हंगरी, इटली, पोलैंड, रुमानियाँ, स्पेन और टर्की की सुन्दरियाँ सभी स्थानों में

थीं। कहीं कहीं पर विदेशी वेश्याओं की संख्या ७०, ८० फ़ीसदी तक थी।

हमारे कथन से पाठकों को यह न समझ लेना चाहिए कि सारी स्त्रियाँ दूध की धोई हुई और सरल थीं। नहीं, इनमें से अनेक बड़ी चतुर और व्यापाराना ढंग की बात-चीत करती थीं। वे स्वतः, अपने मन से, पैसा पैदा करने की ख़ातिर इन क्षेत्रों में आई थीं। इनमें से अनेक महिलाएँ, विदेशों में जाने से पहले ही अपने देशों में वेश्यायें थीं और वहाँ अच्छी आमदनी न देख कर ग़ैर मुल्कों में चली गई थीं। ऐसी नासमझ लड़कियों की संख्या भी यथेष्ट थी जो बहकाई जाकर लाई गई थीं। इनमें से कोई कोई यह जानती भी थीं कि वहाँ जाकर दुराचरण करना पड़ेगा, पर किसी अमीर की रखेली बन कर रहने का सपना उन्होंने देख रक्खा था। उन्हें क्या मालूम कि रोज़ाना दरजनों आदमियों को ख़ुश करना पड़ेगा और एक बार ठेकेदार के फेर में पड़ कर फिर निकास नहीं हो सकता।

कई बार ऐसे भी केस देखने में आये हैं कि दलालों ने बड़े आदमी का स्वांग रचकर, अच्छे अच्छे घर लूटे हैं। ये दलाल बहुधा शक्ल-सूरत के गोरे और ख़ूबसूरत होते हैं, ख़ूब तन्दुरुस्त होते हैं, सभ्य समाज के नियमों से भिज्ञ होते हैं और उनके तौर-तरीक़े युवतियों को मोह लेने वाले होते हैं। ये लोग अच्छे अच्छे मुहल्लों में, बाग़ीचों और बंगलों में रईसज़ादों की तरह रहते हैं, पार्टियाँ करते हैं जिनमें खोज खोज कर मशहूर हसीन स्त्रियों

को बुलाते हैं। फिर ये उनसे धीरे धीरे घनिष्टता बढ़ाते हैं। उस टोली में, जो स्त्रियाँ सबसे सलोनी और सजीली होती हैं उन्हें समय कुसमय चाय और फल के लिए बुला लेते हैं, मोटर पर सैर करने ले जाते हैं, थियेटर और सिनेमा दिखलाते हैं, और अँगूठियाँ और घड़ियाँ भेंट करते हैं। कभी कभी रात में भी उन्हें रोक रखते हैं। धीरे धीरे जब वे उन कमसिनों पर अपना रौब ग़ालिब कर देते हैं और देख लेते हैं कि ये अच्छी तरह फँस गई तब चार-छः महीने के बाद दृश्य-दर्शन के लिए देश विदेशों की यात्रा करने का प्रस्ताव रखते हैं। घूमने-फिरने और दोस्त के साथ मौज मारने के लिए ये छोकड़ियाँ तुरन्त तैयार हो जाती हैं। तब वे उन्हें अपनी मिस्ट्रेस बना कर, या विवाह करके, साथ ले जाते हैं। लड़कियों को विषय की गम्भीरता और विषमता का तब पता चलता है जब वे ठिकाने पर पहुँच कर उस रईसज़ादे और होटल का असली दृश्य देखती हैं। फिर वे पछताती हैं, चिल्लाती हैं, गिड़गिड़ाती हैं कि हमें इस पतन के सागर में न डुबो दो, पर वहाँ सुनने ही वाला कौन है। उन्होंने इतना रुपया क्या मुफ़ ही ख़र्च किया है? फिर तो शेष ज़िन्दगी में उनकी नस नस से रुपया ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज वसूल कर लिया जाता है। या यों कहना चाहिए कि उनका शेष जीवन दलालों के हाथ बिक जाता है।

एक बार फ्रांस के एक काफ़े में, जहाँ नौजवान लड़कियाँ बहुतायत से थीं, एक मित्र ने यह हालचाल कहा—"इन जगहों में बहुत अच्छी अच्छी सूरतें देखने में आती हैं। यहीं से मैं

अपने लिए एक सुन्दरी ले गया था। ये लड़कियाँ जरा भी समझदार नहीं होतीं। स्वभाव और सूरत की बड़ी मीठी होती हैं। वे वेश्यायें नहीं, वे तो प्रेम के ऊपर सर्वस्व न्यौछावर कर देती हैं। उन्हें प्यार चाहिए, अच्छे अच्छे कपड़े चाहिए और एक दमड़ी भी न दीजिये। मेरी रखेली अब १९ साल की है, डेढ़ साल से बराबर वह मेरे साथ रहती है, पर इसके लिए वह मुझसे पैसे नहीं तलब करती। हाँ, मैं उसकी खातिर और कपड़ों में खर्च करता रहता हूँ। ये छोटे छोटे क़स्बों और देहातों से अछूती कलियों के मानिन्द अकेली आती हैं। यहाँ शहर की हवा जब लगती है तब वे किसी अच्छे सुन्दर सुडौल पुरुष की खोज करती हैं। जब उनका विश्वास जम जाता है तब हम लोग उनसे खासी रक़म पैदा करवाते हैं, पर यहाँ नहीं, हम उन्हें दक्षिण अमेरिका या मैक्सिको में ले जाकर रहते हैं।

यहाँ लड़कियों का ढूँढ़ना क्या मुश्किल है। मैंने बेबी आस्टिन मोटर ले रक्खी है। इस पर चढ़ता हूँ और रोज एक दो नई नवेलियों के साथ आनन्द मनाता फिरता हूँ। होटल में जाओ, या बाल रूम में चले जाओ और बस नाचते-गाते उसे बग़ल में दबाये कहीं ले जाओ। थियेटर और मन को उत्तेजित करने वाले काम उन्हें बहुत पसन्द आते हैं। फिर ये बड़े टीमटाम और फैशन से रहना चाहती हैं। नया मुसलमान प्याज़ ही प्याज़ पुकारता है। इनके गज़ब के रूप पर फैशन [illegible] खूब। और इनकी ज़रूरतों को पूरा करने वाले

नवयुवकों की कमी भी नहीं है। जहाँ भी आमोद-प्रमोद हो, रङ्गत हो और मनोरञ्जन का सामान हो, वहाँ इनको ले जाइये, फिर तो ये बहुत ख़ुश रहती हैं।"

जो लड़कियाँ अपनी जीविका के लिए चित्रकला और गायन-वादन का रोज़गार करती हैं वे विदेशों में, और यहाँ तक कि अपने देश ही में बुरी संगति में फँस कर शीघ्र ही अपना जीवन नष्ट कर देती हैं। कला का युग है, अतएव ऐसी कलावन्ती युवतियों की यूरुप के सारे देशों, केन्द्रीय और दक्षिणी अमेरिका में बहुत माँग है। ऐसी लड़कियों की, जो गाने और चित्र बनाने में निपुण हैं, यूरुप के बड़े बड़े शहरों में टोलियाँ घूमा करती हैं। इनमें से कुछ की व्यवस्था तो अच्छी होती है, लेकिन ऐसी घटनाएँ बहुधा सामने आती रहती हैं जिनमें इन टोलियों का मक़सद व्यभिचार ही प्रतीत होता है। एक बार एक जर्मन महिला ऐसी ही दस-पन्द्रह युवतियों की टोली बना कर एथेन्स में नाचने-गाने के लिए ले गई। कोई एक महीने के बाद उसमें से सात लड़कियाँ वापस आ गईं, जिनकी दशा बहुत दर्दनाक थी। उन्होंने बतलाया कि हमें वेतन बहुत ही थोड़ा दिया गया और हमसे शराब पिलाने को कहा गया। युवतियाँ उसी महिला मैनेजर के साथ रहने को मजबूर थीं। वह प्रौढ़ा स्त्री नित्य नये नये ग्राहकों को लाती और उन लड़कियों को दुराचरण करने के लिये मजबूर करती। नतीजा यह हुआ कि उनका स्वास्थ्य गिर गया। वह स्त्री बाद में गिरफ़ार की गई। उस

पर मुक़दमा चलाया गया, पर अस्वस्थ होने के कारण छोड़ दी गई।

फ्लोरेन्स में ऐसी ही एक घटना और घटी। सन् १९२५ के आरम्भ में अखबारों में विज्ञापन निकाले गये कि व्यूनासेरीज़ के लिए नाचने-वाली लड़कियों की आवश्यकता है। १८ लड़कियों ने जाने के लिए आवेदनपत्र भेजे। इनमें से कुछ की अवस्था सोलह-सत्तरह साल की थी। बाक़ी की बाईस-तेईस साल की थीं। इनके लिए जहाज़ पर जगह रिज़र्व करा दी गई और टिकट खरीद लिये गये। लेकिन फ्लोरेन्स के पुलिस अधिकारियों को कुछ सन्देह हो गया और उन्होंने उस पार्टी को जाने से रोक दिया। व्यूनासेरीज़ के काउन्सल जनरल से पूछने पर पता चला कि वह क्लब, जिसमें नाचने के लिए युवतियाँ जाने वाली थीं, काफ़ी बदनाम जगहों में से एक था।

म्यूज़िक हालों और काफ़ों में जहाँ जहाँ लड़कियाँ काम करती हैं, वहाँ वातावरण इतना आकर्षक होता है कि उससे बचना मुश्किल हो जाता है। इन जगहों में जाने के लिए बहुत ही कम मूल्य का टिकट रक्खा जाता है जिसमें प्रत्येक आदमी आसानी से जा सके। खेल के बीच में नशीली चीज़ों की बिक्री होती जाती है। छोकड़ियाँ दर्शकों के आसपास बैठकर उन्हें अपने साथ नाचने के लिए सब तरह से उत्साहित करती हैं। जो लड़कियाँ इन बातों से बच कर कलापूर्ण जीवन व्यतीत किया चाहती हैं वे भी उस वायुमण्डल में बच नहीं पातीं। मनुष्यों की तो बात ही क्या है,

यदि फ़रिश्ते भी इन जगहों में आजायँ तो उनका भी बचकर निकलना असम्भव नहीं, तो कठिन ज़रूर हो जाय। इन मन-बहलाव के स्थानों ने सार्वजनिक जीवन में जो गन्दगी फैला रक्खी है, उसको देखते हुए इनका नष्ट होना ही अधिक श्रेयस्कर है। जाँच करने पर मालूम हुआ है कि इनमें अधिकांश स्त्रियों में गरमी, सुजाक जैसे रोगों का बाहुल्य रहता है।

एक अनुभवी व्यक्ति ने, एक बार ठीक ही कहा था कि ये युवतियाँ सिनेमा, थियेटर, सरकस और बालरूमों में काम करने के लिए इतनी उत्सुक रहती हैं कि उसके ख़ातिर ये घरबार और अपने प्रियजनों तक का त्याग कर देती हैं। इस कोटि की लड़कियाँ बहुत जल्द बदमाशों का शिकार हो जाती हैं। वे समझती हैं कि हम कला के जीवन में प्रवेश कर रही हैं।

वे लड़कियाँ, जो संसार के तौर-तरीक़ों, चालाकियों और पापों से अनभिज्ञ होती हैं, बुरी तरह महिला दलालों के जाल में फँसती हैं। उन्हें उस दुनिया में ग्रीनीज़ (Greenies) नई नवेली, कहा जाता है जो अनुभव-शून्य होती हैं। ये ऐसे किसी भी मौक़े को, जिसमें उनका जीवन फैशनेबिल विधि से व्यतीत हो और पैसा मिले, जाने नहीं देतीं। ऐसी युवतियाँ बहुधा ग़रीब ख़ान्दान की होती हैं जिनके माँ-बाप कई लड़कियों की परवरिश कर सकने में असमर्थ होते हैं, या बेकारी का जीवन व्यतीत करते होते हैं। घर में, शहर में, उन्नति और मनचाही उमङ्गों को पूरा न होता देख कर वे अपने सामने आया हुआ कोई भी व्यवसाय

अख़्तयार कर लेती हैं। ऐसी लड़कियों को फँसाने के लिए ब्याह का लोभ बहुत बड़ा होता है। स्त्रियों के व्यापार में लगा हुआ व्यापारी या दलाल उनसे जान-पहचान करके, कोर्टशिप करके, शीघ्रता से शादी कर लेता है और अपने देश की यात्रा के लिए नवपत्नी के साथ चल पड़ता है। इस काम में उसे स्थानीय दलालों से पर्याप्त सहायता मिलती है। जहाँ कोई क़ानूनी कठिनाइयाँ नहीं हैं वहाँ की तो कोई बात ही नहीं, पर जहाँ विवाह की क़ानूनी लिखा-पढ़ी होती है वहाँ बदमाश व्यापारी नाम बदल देता है और भूठे पासपोर्टों की शरण लेकर यात्रा करता है। यात्रा ही में, जहाज़ ही पर, वह दो-चार अमीर आदमियों को फँसा कर अपनी स्त्री से मुलाक़ात करवा देता है। अपनी पत्नी को समझा-बुझा कर, वह उन लोगों की हमबिस्तर करवाता है और जहाज़ ही पर किराये से ज्यादा रक़म वसूल कर लेता है। एक व्यापारी ने डेढ़ महीने की यात्रा में अपनी पत्नी से व्यभिचार करवा कर ३००० डालर कमाये और एक ने २२०० डालर जमा किये। निःसन्देह दोनों ही युवतियाँ परम रूपवती थीं और अवस्था में सत्तरह-अठारह से ज्यादा न थीं। उनको उनके देश से निकाल कर लाने में दलालों ने पाँच हज़ार से ज्यादा की पूँजी खर्च कर डाली थी। जहाज़ पर दो अमेरिकन सुन्दर धनाढ्य युवकों से भेंट हो गई। वे युवतियाँ भी उनके ऊपर मोहित हो गईं और इस तरह दलालों ने खासी रक़म कमाई। ऐसी युवतियों से बातचीत करने पर मालूम हुआ

दो हज़ार रुपया खर्च किया था। वह उसे हरी सिल्क का साया पहना कर लाई थी और बालों के जूड़े में स्पेन का बढ़िया कंघा खोंसे थी। वह आई और सलाम करके, बरबस मुस्कराकर मेरे समीप बैठ गई, पर उसकी नन्हीं सी जान निकली जाती थी। उसकी पतली आवाज़ ऐसी थी जैसे दुधमुँहे बच्चे की। आँखों से कातरता और लड़कपन की खूबी टपक रही थी। यह स्पष्ट मालूम होता था कि इस गंदे जीवन में प्रवेश किये अभी इसे बहुत दिन नहीं हुए। मैंने कहा कि इतनी छोटी सी बच्ची का मैं क्या करूँगा और मुझे अपनी समवयस्का दुहिता का खयाल हो आया। बूढ़ी ने जवाब दिया कि हाँ, यह अभी नई नवेली है, दो ही चार लोगों ने इसे अंगीकार कर पाया है। इसीलिए इसका दाम भी बहुत है।

मैंने पूछा—"कितना?"

"एक रात का कम से कम पचास डालर १५०) होगा।" उसने बड़ी गम्भीरता-पूर्वक जवाब दिया। फिर वह कहने लगी कि यहाँ इस देश में मुझे इसका एक एक बार का सौ सौ डालर तक मिलेगा। पारसाल रेस के सीज़न में जब न्यूयार्क के बड़े बड़े आदमी आयेंगे तब यह ब्यूटी मुझे मालामाल कर देगी। "क्यों न मेरी बच्ची?" यह कह कर उसने उस बालिका की पीठ थपथपाई।

बालिका अपने पैर के नख से ज़मीन खोदने लगी। वह व्यभिचार का परिणाम अभी तक नहीं समझती थी, मैं तो यहाँ

से चला आया, पर यह बूढ़ी अपने कारनामों से बाज़ नहीं आवेगी।" लिस्बन (पुर्तगाल) की एक मेम साहिबा का बयान सुनिये—

"यहाँ लड़कियों की उम्र की कोई क़ैद नहीं है। मैं दो छोकड़ियाँ बारह बारह साल की लाई थी और उनसे पैदा करवाते मुझे छः-सात साल का वक्त बीत चुका है।"

पर क्या उनके माँ-बाप इस पर आपत्ति नहीं करते? उससे पूछा गया। उसने उत्तर दिया—"नहीं, माँ-बाप काहे को आपत्ति करेंगे! वे ही तो उन्हें मेरे पास शिक्षा-दीक्षा के लिए छोड़ गये थे। साल भर के अन्दर मैंने उन्हें इस व्यापार के लायक़ कर दिया। अब उनकी आधी आमदनी मैं लेती हूँ और आधी हर महीने उनके माँ-बाप आकर ले जाते हैं।"

ऐसे मकानों के सञ्चालक प्रायः छोटी लड़कियों की खोज में रहते हैं। इसलिए कि, लड़कियों के माँ-बाप तेरह-चौदह साल की अवस्था में ही मेडमों के पास अपनी कन्याओं को छोड़ जाते हैं। थोड़े में इतना कहना अलम् होगा कि वे लड़कियों के व्यभिचार की कमाई से गुज़र-बसर करते हैं। ऐसी पाप-पूर्ण घटनाएँ संसार के इतिहास में बहुत कम देखी और सुनी जाती हैं।

उसी शहर में मैडम नामधारी एक महिला ने कहा कि उसने अभी हाल ही में दो लड़कियों को अपने कमरे पर बैठाला है। उनकी अवस्था चौदह-पन्द्रह साल की है। वे दोनों घर से निकाल

दी गई थीं। एक की शादी हो चुकी है। थोड़े से लड़ाई-झगड़े के कारण उसके पति ने एक दिन उसे घर के बाहर निकाल दिया, तब से फिर वह घर नहीं लौटी। मैं दोनों को पुलिस-चौकी पर ले गई और दोनों की अवस्था बाईस साल की लिखवा दी।

उन स्थानों में, जो सार्टिफिकटयाफ्ता चकले हैं, बहुत कमसिन लड़कियाँ दिखलाई देती हैं, पर इनके सञ्चालक झूठे डाक्टरी सार्टिफिकट पेश करके, और घूस देकर लड़कियों की उम्र ज्यादा लिखा देते हैं।

विदेशों से लाई हुई वेश्याओं की उम्र का सच्चा अन्दाज लगाना कठिन काम होता है, क्योंकि उनके पासपोर्टों में उम्र पाँच-सात साल बढ़ा कर लिखी जाती है। उनके पथ-प्रदर्शक उन्हें सिखा-पढ़ा रखते हैं कि अवस्था छै-सात साल ज्यादा बतलाई जाय, क्योंकि नाबालिग लड़कियों का विदेश में ले जाना जुर्म में दाखिल है। कभी कभी उन लड़कियों से बहुत सवाल-जवाब करने पर और उनकी पैदाइश का सन् पूछने पर सच्ची उम्र का पता चल जाता है। एक लड़की ने अपनी उम्र २५ साल की बतलाई जो १७ साल से ज्यादा नहीं जँचती थी। जब उससे उसके जन्म का सन् पूछा गया तो उसने १९१५ बतलाया। दूसरी ने उम्र २३ साल की बतलाई और पैदाइश का साल सन् १९१२ बतलाया। अब पाठक स्वयं ही समझ लें कि उनका अवस्था-सम्बन्धी बयान कहाँ तक सच था।

इसके अलावा वे मिसें, जो क्वारी होती हैं, जिनकी आमदनी कम होती है और ख़र्च बहुत होता है, वे अपने अतिरिक्त समय में विनोद और तफ़रीह के लिए अमीर और सुन्दर नौजवानों को खोजती रहती हैं। इनके भी दलाल होते हैं। इनके अड्डे काफ़े, सराय, होटल और भोजनालयों में विशेष होते हैं। इन्हें अपनी रजिस्ट्री करवाने की जरूरत नहीं होती। जाँच करने पर मालूम हुआ कि ये अधिकतर १५ से १७ साल की छोकड़ियाँ होती हैं। अपनी अनुभव-हीनता के कारण जब ये कली ही रहती हैं तभी अपना भविष्य, सुख और जीवन क्षणिक उत्तेजना के पीछे बिगाड़ बैठती हैं। यही कारण है कि यूरुपीय देशों की लड़कियाँ और स्त्रियाँ अधिकतर प्रदर और सुज़ाक से पीड़ित रहती हैं और ऊपरी टीमटाम में स्वस्थ दीखती हुई भी, रोज़ किसी न किसी कारण से डाक्टरों के दरवाजे पर खड़ी रहती हैं।

एक भुक्त-भोगी का कहना है—

"एक बार मैं और मेरे एक मित्र जो इस फ़न में उस्ताद और अनुभवी थे, जर्मनी गये। शाम का वक़्त था। हम दोनों एक आलीशान होटल में बैठे थे। धीरे धीरे सुन्दरियों के झुण्ड के झुण्ड आना शुरू हुए। रेशमी बाल बड़े अच्छे तर्ज़ से कटे हुए, दाँत मोतियों से चमकते हुए, पतले पतले होंठ लिप-स्टिकों से रंगे हुए और गुलाबी चेहरे पामेड और हैज़लीनों से चुपड़े हुए, दर्शकों के मनों को मोह रहे थे। मूडीकालीन और क़ीमती सेन्टों

की महक से उनके बाल और अंग-प्रत्यंग गम गम कर रहे थे। कपड़े एक दम रेशमी, क़ीमती, नायाब बेल-बूटों से छपे हुए, और एक दम नई फ़ैशन के थे। उनके होज़ और बूट भी बहुत दामों के थे। हिन्दोस्तान की पारसिनें और खत्रानियाँ, जितना अपनी रूपरेखा को मोहक करने के लिए महीनों में ख़र्च करती होंगी, उतना वे एक या दो दिन में व्यय करती हैं। हफ़्ते में एक दिन फ़ौज के सिपाहियों और जल-सैनिकों को जब तनख्वाह बटती है तब ये अपना विशेष बनाव-शृङ्गार करके आती हैं। वेतन की आधी से ज्यादा रक़म सैनिक लोग उस दिन इनकी ख़ातिर उड़ा देते हैं। मेरे देखते देखते वहाँ सैनिकों की भीड़ लग गई और परस्पर हँसी-दिल्लगी होने लगी। होटल में पँचमहले पर प्राइवेट कमरे बने हुये थे जिनमें मेरे देखते देखते कई जोड़ियाँ उठकर चली गईं। बाद में पूछने पर पता चला कि होटल के ऊपर के सारे खण्ड इसी काम के लिए रिजर्व थे और होटल-वाले उनके लिए ख़ूब रुपया ऐंठते थे। वहीं पर उन लड़कियों की नंगी और उत्तेजक तस्वीरें ली जाती थीं, यहाँ तक कि अधिक पैसा मिलने पर वे पुरुषों के साथ कामातुरावस्था में भी तस्वीर खिंचवा लेती थीं। इन भद्दी से भद्दी और गन्दी से गन्दी तस्वीरों को मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा और फिर उनका उन युवतियों से मिलान किया, जिनका वह चित्र था। सचमुच ऐसी अनेक षोड़शियाँ वहाँ मौजूद थीं जिनके बुरे से बुरे ढंग के चित्र मेरे हाथ में म थे दास बजने के क़रीब मैं तो उठ कर चला आया, पर मेरे मि

वहीं रह गये, वे रास-रंग करके आधी रात के बाद कोई दो बजे वापस आये थे।"

ये ही लड़कियाँ जब इन कार्यों के करने में और पुरुषों को ठगने के ढँग में ज़रा उस्ताद हो जाती हैं तब औरतों के व्यापारी और दलाल उनके रूप और गुण के अनुसार छाँट छाँट कर विदेशों में ले जाते हैं और वहाँ उनसे रक़म पैदा करवाते हैं।

एक बार कोई लड़की चकले में दाखिल भर हो जाय, फिर सका सञ्चालक या सञ्चालिका जिस बेशरमी से उसका प्रयोग करते हैं, वह अकथनीय है। जो कुछ वह रोज़ाना पैदा करती है उसका कुछ ही फ़ीसदी उसके पल्ले पड़ता है, क्योंकि रहने, खाने और कपड़े का चार्ज उससे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर लिया जाता है, उसके परिणाम-स्वरूप लड़की शीघ्र ही अपने को क़र्ज़ के फंदे में जकड़ी हुई पाती है। वह क़र्ज़ अदा तो हो नहीं पाता, प्रत्युत अत्यधिक ब्याज के कारण बढ़ता ही जाता है। लड़कियों को अपने जाल में बराबर जकड़े रहने का उन व्यापारियों का यह मुख्य तरीक़ा है। ऐसी परिस्थिति में पड़ने पर लड़की सब कुछ करने को तैयार हो जाती है और विदेशों में जाकर अधिक पैसा पैदा करने की बात को आसानी से स्वीकार कर लेती है।

विदेशों में दुराचार के इन अड्डों में, उनके रखवाले लड़कियों के साथ तरह तरह की बदमाशियाँ और बेइमानियाँ करते हैं। चूँकि लड़कियों को वे लोग अपने किराये से और अपने पैसे से

यात्रा कराके ले जाते हैं, अतएव वे उनपर अपना पूरा हक़ समझते हैं। "एक मकान में चार-पाँच लड़कियाँ थीं। उनसे बातें करने पर मालूम हुआ कि वे पुर्त्तगाल, पोलैंड और काकेशिया से लाई गई थीं। काकेशिया की युवतियाँ निःसन्देह बहुत सुन्दरी थीं और शहर के बड़े बड़े आदमियों को अपनी ओर आकर्षित करती थीं। वे अच्छा पैसा कमाती थीं, पर पैसा तो चकले की सञ्चालिका के हाथ में पड़ता था। रोजाना एक दस्तख़ती स्लिप इन लोगों को दे दी जाती, जो मूल्य में, आमदनी के रुपयों से कहीं कम होती। हफ़्तेवार स्त्रियों को रुपया मिलता, पर साथ ही तमाम अख़राजात का मूल्य काट लिया जाता। बहुधा सब देने-लेने के बाद मालकिन का पावना ही रह जाता, जो दूसरे हफ़्ते में अदा करना पड़ता और दूसरे हफ्ते का अगले सप्ताहों के लिए रह जाता। इस भाँति लड़कियों पर सञ्चालकों का रुपया सदा बाक़ी ही निकलता और युवतियों को क़र्ज़े के बोझ के मारे कभी उस घृणित कर्म से पृथक् होने का संयोग ही न लगता।"

अब टर्की का एक उदाहरण देखिए, जो इससे भी भयानक है—

"औरतों का एक दलाल, यूरुप के किसी देश से, एक युवती को लाया। लोकल सौदागर ने उसे पुरस्कार में बीस तुर्की पौंड दिये। इतनी ही रक़म वेश्यावृत्ति में उसकी रजिस्ट्री कराने में खर्च हुई। मकान-मालिक ने उससे १०० तुर्की पौंड के रुक्के पर

युवती को रसीद दे दी कि मैंने १०० पौंड मयसूद के पाये; यद्यपि सौ पौंड क्या, सौ शिलिंग भी उसके हाथ न आये। यह रकम तीन मास के अन्दर वापस कर देनी पड़ेगी, जिसकी व्याज की दर ३० फ़ीसदी निश्चित होगी। दलाल की फ़ीस, रजिस्ट्री और स्टाम्प की रकम पहले ही काट ली गई और बाद में उसे किसी ऐसे कपड़े के सौदागर की दूकान पर ले जाया गया जिससे सम्बन्ध में पहले ही से गठबन्धन थी। एक के दो मूल्य पर बेचारी को ऐसी चटकीली-भड़कीली पोशाकें मिलीं जो इस देश के लड़कों को अच्छी लगती थीं और वेश्या-समाज में प्रचलित थीं। इस तरह पचास या साठ पौंड के लिए लड़की को १०० पौंड का प्रामिसरी रुक्का लिख देना पड़ा। यदि तीन मास के अन्दर वह उसे न चुका सकी, जैसा कि बहुधा नहीं चुका सकती, तो फिर साधारण व्याज के ऊपर चक्रवृद्धि व्याज और ३० फ़ीसदी और लगता है। युवती की साप्ताहिक आमदनी का बहुत बड़ा भाग इस तरह, इन इन मदों में काट लिया जाता है।"

एक विदेशी लड़की ने मिनोत्रा से जो बयान दिया वह भी कम दुःखमय नहीं है। उसने कहा कि मेरा इरादा यहाँ थोड़े ही समय ठहरने का था, पर क़र्ज़े ने मुझे मजबूर कर दिया। अब मुझे यहाँ तीन वर्ष से ऊपर हो चुके हैं। मैंने रात-दिन क़र्ज़े को चुकाने का प्रयत्न किया है जिसके फलस्वरूप मेरा स्वास्थ्य नष्ट हो गया है। जुलाई तक सारा क़र्ज़ा चुका दूँगी, ऐसा मेरा अन्दाज़ है। उस दिन मैं ख़ुदा की बड़ी शुक्रगुज़ार होऊँगी जिस दिन इस

नरक से अपना पीछा छुड़ा सकूँगी। चाहे भूखी मरूँ, चाहे चने चबा चबा कर रहूँ, या चाहे लत्ता लपेटूँ, पर अब कभी इस जिन्दगी में ऐसी जगह लौट कर न जाऊँगी। मैं तो इनके बहकावे में आगई और अपनी जिन्दगी नष्ट कर दी।

दूसरी बोली कि चार वर्ष हुए, तब उन्होंने मुझे घर से बाहर निकाल दिया। बात यह हुई कि दो तीन बड़े आदमियों के लड़कों से मैंने प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर लिया जो मुझे, साधारण फ़ीस के अलावा, अलग से पैसा दे जाते थे। इसकी ख़बर जब मालकिन को लगी तब वे आग बबूला हो गईं और लगीं मुझे मारने। कुछ रुपया बचा कर मैंने बैंक में अपने नाम से जमा कर रक्खा था उसको उन्होंने वापस माँगा। मैंने देने से इनकार कर दिया। चूँकि मेरे कारण उसके कोठे की दूसरी भोली भाली लड़कियाँ भी भड़कने लगी थीं, अतएव उसने मुझे एक शाम को निकाल दिया। तब से मैं मजे में हूँ, कम से कम स्वाधीन हूँ, जो कुछ कमाती हूँ, अपने लिए रख सकती हूँ। वहाँ एक एक दिन में मुझे पंद्रह पंद्रह आदमियों को ख़ुश करना पड़ता था। अगर कोढ़ी, सुजाकी, या जलंधर का रोगी भी आवे और मालकिन को नोटों की गड्डी थमा दे, तो हमें उसके साथ रहना अनिवार्य था, अब मैं अच्छे अच्छे युवकों को ढूँढ़ सकती हूँ। उनके साथ मनमानी मौज कर सकती हूँ, दो पैसे कम ही मिलें तो उससे क्या, वहाँ से तो मैं अब भी दूना पैदा करती हूँ और ख़ुश हूँ। वहाँ तीन वर्ष

कि हम हफ्ते में दो तीन बार व्यभिचार करने के लिए मजबूर जाती हैं। जो लड़कियाँ फैक्टरियों में काम करती हैं वे रात १२ बजे के बाद नहीं ठहरतीं, हाँ शनिवार के दिन अच्छे ग्रा मिलने पर रात भर रह जाती हैं। उनसे मालूम हुआ कि एक रा में वे दो या तीन डालर (=छः-सात रुपये) कमा लेती हैं।

और कारण चाहे जो भी हों, पर आर्थिक दुरवस्था भी इ पतित अवस्था का मुख्य कारण है। विदेशों से आये हुए यात्रियों, खासकर अमेरिकनों और हिन्दोस्तान के अमीरज़ादों और रईस-राजा कहलाने वालों से इन्हें खासी रक़म मिल जाती है, जो इन्हें सभ्य समाज में रानी की तरह बन-ठन कर रखने के लिए कभी काफ़ी और कभी नाकाफ़ी होती है। यह समस्या तो यात्रियों की तादाद और उनके मिजाज पर निर्भर रहती है।

कि हम हफ्ते में दो तीन बार व्यभिचार करने के लिए मजबूर हो जाती हैं। जो लड़कियाँ फैक्टरियों में काम करती हैं वे रात में १२ बजे के बाद नहीं ठहरतीं, हाँ शनिवार के दिन अच्छे दाम मिलने पर रात भर रह जाती हैं। उनसे मालूम हुआ कि एक रात में वे दो या तीन डालर (=छः-सात रुपये) कमा लेती हैं।

और कारण चाहे जो भी हों, पर आर्थिक दुरवस्था भी इस पतित अवस्था का मुख्य कारण है। विदेशों से आये हुए यात्रियों, खासकर अमेरिकनों और हिन्दोस्तान के अमीरजादों और रईस-राजा कहलाने वालों से इन्हें खासी रक़म मिल जाती है, जो इन्हें सभ्य समाज में रानी की तरह बन-ठन कर रखने के लिए कभी काफी और कभी नाकाफी होती है। यह समस्या तो यात्रियों की तादाद और उनके मिजाज पर निर्भर रहती है।

३—तिजारत के तरीक़े

इस बात का जान लेना भी आवश्यक है कि स्त्रियों और बच्चियों की तिजारत किन किन रास्तों से होती है और किन किन देशों में ज्यादा है। जहाँ तक खोज करने पर पता चला है, मालूम यह होता है कि यूरुप से केन्द्रीय और दक्षिण अमेरिका को जाने वाली युवतियों और लड़कियों की संख्या बहुत ज्यादा है। यूरुप से मिस्रदेश और उत्तरीय अफ्रिका को भी काफी 'माल' जाता है।

अरजेन्टाइन-गवर्नमेंट का कहना है कि हमारे यहाँ इटली, फ्रांस और पोलैंड की फाहिशा औरतों के मारे नाकों दम है। ये सब जवान और सुन्दरी होती हैं और हमारे देश का पैसा खींच खींच कर अपने मुल्कों को भेजा करती हैं। ये लोग स्पेन, डच, जर्मन और बेल्जियम के बन्दरगाहों से सवार होती हैं। इटालियन रमणियाँ विशेषतया फ्रांसीसी बन्दरों की शरण लेती हैं और फ्रांस की महिलायें लिस्बन का टिकट कटाती हैं। एटलान्टिक महासागर के किनारे पर करोन्ना और सैंटेन्डर नामक कुछ छोटे छोटे बन्दरगाह हैं, जिन पर बिना विशेष जाँच-पड़ताल के यात्री आसानी से चढ़-उतर सकते हैं।

ज़रनोविज़ (Czernowicz) के अधिकारियों ने बतलाया कि रूमानिया से निकट पूर्वीय देशों को काफ़ी औरतें भेजी जाती हैं। उन्होंने कहा कि मैंने बीसों बार जहाजों के कप्तानों को झूठे पास-

पोर्ट उन औरतों को देते देखा है जो बदमाशों द्वारा विदेशों में ले जाई जाती हैं।

इस बात की कई देशों में खोज की गई कि इतनी सख्तियों के होते हुए भी ये स्त्रियों और बच्चियों के व्यापारी, चरित्रहीन लोग, मुल्क के अन्दर कैसे घुस आते हैं। पता चला कि रात में १२ बजने के बाद ये छोटी छोटी नावों से नदियों या खाड़ियों को पार करते हैं। ऐसा भी होता है कि छोटे अग्निबोटों के कप्तान उनसे मिल जाते हैं। दस महीने के भीतर एक कप्तान ने दो-सौ स्त्री-पुरुषों को आधी रात के बाद उस पार उतारा। इस बात को उसने, ख़ुद तस्लीम किया। उस दिन भी, जिस दिन लीग की जाँच-कमेटी के मेंबरों ने जाँच की, वह चार रूसी स्त्रियों और आदमियों को अपने खास कैबिन के नीचे छिपाये हुए था।

बड़े बड़े जहाजों पर भी बिना पासपोर्ट और टिकट के लुक-छिप कर लोग स्त्रियों को ले जाते हैं। कहते हैं कि फ्रांसीसी सुन्दरियों का मिस्रदेश की ओर बराबर आना-जाना लगा रहता है। वे मल्लाहों की सहायता से जहाज पर चढ़ आती हैं और कोयले के स्टोर-रूम या ऐसी ही एकान्त जगह में छिपा दी जाती हैं। कैप्टेन लोग कहते हैं कि जहाज के मल्लाह और खास कर कोयला झोंकने वाले इतने बदमिजाज और लड़ाकू हैं कि हम लोग उनसे झगड़ा मोल लेना नहीं चाहते। वे लोग स्त्रियों से पैसा वसूल करते हैं और रास्ते में व्यभिचार करते हैं। ये युवतियाँ ज्यादातर अलेक्जेंड्रिया में, उतर जाती हैं और वहाँ से मोटर

[illegible] जहाँ काम होता है वहाँ चली जाती हैं। अलेक्ज़ेंड्रिया से [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] हुई हैं, [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। ऐसी यहाँ अलेक्ज़ेंड्रिया और पोर्टसईद पर पकड़ी भी जाती हैं और अपने देश को वापस भेज दी जाती हैं जहाँ से वे आती हैं।

इस तरह से हज़ारों ही स्त्रियाँ जहाज़ों के ज़रिये से [illegible] और फिर [illegible] एक देश से दूसरे देश को जाती रहती हैं। इनमें से तो चार कौड़ी ही पकड़ी जाती हैं, क्योंकि इन के जाल में न फँसने वाले [illegible] में बहुत ही थोड़े [illegible] हैं।

बहुत सी स्त्रियों के प्रेमी, उन महिलाओं के प्रेमी जो इस रोज़गार में लगी हैं—जहाज़ों पर नौकर हैं। ऐसी स्त्रियाँ चुराई हुई लड़कियों के साथ उन्हीं जहाज़ों पर बहुधा सफ़र करती हैं जिन पर उनके रक्षक मौजूद हैं। कुछ बड़े बड़े महिला-सौदागरों के नौकर भी जहाज़ों पर मुलाज़िम हैं जिनका यही काम है कि वे लाई हुई लड़कियों को सुरक्षित रूप से यथास्थान पहुँचा दें। इस काम में बड़े बड़े ओहदे-वालों का भी हाथ रहता है, क्योंकि वे नित्य नई नई नवेलियों के साथ मौज तो उड़ाते ही हैं, साथ ही रोज़गारियों की ओर से तनख्वाह भी पाते हैं।

महिला-सौदागर ज़्यादातर तीसरे दर्जे में सफ़र करते हैं। जहाज़ों में, जहाँ थर्ड क्लास के मुसाफ़िरों की जाँच और डाक्टरी कड़ाई से होती है वहाँ ये स्वयं तो थर्ड में रहते हैं, पर लाई हुई लड़कियों को सेकेन्ड का टिकट ले देते हैं। बहुधा वे साथ ही

सप्लाई का अड्डा है, जहाँ पर स्टाक जमा होता है। रूमानियाँ के एक अफ़सर ने बतलाया कि पोलैंड और रूमानियन लड़कियों का काफ़िला का काफ़िला बम्बई, शंघाई, हांगकांग और जापान जाया करता है।

इस बात की भी रिपोर्ट मिली है कि बहुत ही छोटी उम्र की चीनी लड़कियों को अमेरिका भेजा जाता है। वहाँ के पश्चिमीय प्रान्त के शहरों में उनकी अच्छी कद्र होती है।

पाठकों को यह नहीं समझना चाहिए कि दलाल या तिजारती लोग किसी एक देश में अपने मन के मुताबिक़ माल पाकर, तुरन्त ही सीधे और जल्दी के रास्ते से उसे लेकर रवाना हो जाते हैं। उन्हें रास्ते का किराया, उड़ाई हुई लड़की को कम से कम दिक़्क़त से ले जाने की सुविधा, अधिकारियों की दृष्टि से बचे रहने की चेष्टा, आदि कई बातों का विचार करना होता है। खर्च के सम्बन्ध में इतना कह देना अलम् होगा कि व्यापारी को विशेष चिन्तित नहीं होना पड़ता। वह ठहर ठहर कर, कई मुक़ाम करता हुआ अपनी जगह पहुँचता है और राह में, जहाज पर, रुकने के मुक़ामों पर कुछ न कुछ लड़की से पैदा करवाता जाता है। वह यह ध्यान रखता है कि ज्यादती न होने पावे, लड़की का मन उचटने न पावे। उसे ख़ुशी भी हासिल हो, अच्छे ख़ूबसूरत नौजवानों का संसर्ग हो, चाहे पैसा कुछ कम ही मिले। इस तरह एक फ़ायदा यह भी होता है कि लड़कियों की काम-

रहना पसंद करते हैं और जहाँ खतरा देखते हैं वहाँ स्वयं भी ऊँचे दरजे में मुसाफिरी करते हैं। क्यूबा के अधिकारियों ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि हमारे यहाँ वेश्याओं के दलाल और उनकी लड़कियाँ, पुलिस की जाँच से बचने के लिए, सभी फर्स्ट क्लास से उतरती हैं। परन्तु उन्हें पहचानने और पकड़ने का कोई उपाय नहीं इसलिए कि प्रतिष्ठित और भले यात्री भी उन्हीं कैबिनों से उतरते हैं।

जिस ऋतु में यात्री बहुत आते हैं, उसमें यूरोपियन लड़कियाँ अलजियर्स, ट्यूनिस और ईजिप्ट की ओर ले जाई जाती हैं। उनके आने का रास्ता एलेक्जेंड्रिया होकर है। कभी कभी ये पोर्ट-सईद पर भी उतरती हैं, या बेराउथ में उतर कर ईजिप्ट की जमीन के रास्ते आती हैं।

रूमानियाँ, पोलैंड और ग्रीस से, लेवेन्ट को भी लड़कियाँ ले जाई जाती हैं। कुस्तुन्तुनियाँ को भी युवतियाँ जाती हैं, पर कम, क्योंकि टर्की की हूरें ख़ुद ही सारी दुनियाँ में मशहूर हैं।

यूरुप के देशों में भी सुन्दरियों का आदान-प्रदान होता है। फरासीसी सुन्दरियाँ इंग्लैंड को, इंग्लिश नवेलियाँ फ्रांस और जर्मनी को, आस्ट्रियन लड़कियाँ हंगरी और सरविया को ले जाई जाती देखी गई हैं। जर्मनी की स्त्रियाँ अधिकतर बलकान में खपती हैं।

पूर्वीय देशों (एशिया) में भी यह कुप्रथा मौजूद है। ईजिप्ट से बम्बई को स्थायी रास्ता बना हुआ है। ईजिप्ट में पूर्वीय देशों की

सप्लाई का अड्डा है, जहाँ पर स्टाक जमा होता है। रूमानियाँ के एक अफ़सर ने बतलाया कि पोलैंड और रूमानियन लड़कियों का काफ़िला का काफ़िला बम्बई, शंघाई, हांगकांग और जापान जाया करता है।

इस बात की भी रिपोर्ट मिली है कि बहुत ही छोटी उम्र की चीनी लड़कियों को अमेरिका भेजा जाता है। वहाँ के पश्चिमीय प्रान्त के शहरों में उनकी अच्छी क़दर होती है।

पाठकों को यह नहीं समझना चाहिए कि दलाल या तिजारती लोग किसी एक देश में अपने मन के मुताबिक़ माल पाकर, तुरन्त ही सीधे और जल्दी के रास्ते से उसे लेकर रवाना हो जाते हैं। उन्हें रास्ते का किराया, उड़ाई हुई लड़की को कम से कम दिक़्क़त से ले जाने की सुविधा, अधिकारियों की दृष्टि से बचे रहने की चेष्टा, आदि कई बातों का विचार करना होता है। ख़र्चे के सम्बन्ध में इतना कह देना अलम् होगा कि व्यापारी को विशेष चिन्तित नहीं होना पड़ता। वह ठहर ठहर कर, कई मुक़ाम करता हुआ अपनी जगह पहुँचता है और राह में, जहाज़ पर, रुकने के मुक़ामों पर कुछ न कुछ लड़की से पैदा करवाता जाता है। वह यह ध्यान रखता है कि ज़्यादती न होने पावे, लड़की का मन उचटने न पावे। उसे ख़ुशी भी हासिल हो, अच्छे ख़ूबसूरत नौजवानों का संसर्ग हो, चाहे पैसा कुछ कम ही मिले। इस तरह एक फ़ायदा यह भी होता है कि लड़कियों की काम-

वासना उत्तेजित हो जाती है और वे जगह पर पहुँचते पहुँचते इस घृणित काम के करने में अभ्यस्त हो जाती हैं।

कभी कभी ये लड़कियाँ अपने बने हुए संरक्षकों को परेशान भी कर देती हैं। एक आदमी का बयान है—"मैं एक युवा को जानता हूँ जो क़ुस्तुन्तुनियाँ गया था और वहाँ से एक सोलह-सत्रह साल की सुन्दरी ले आया। वह लड़की यहूदी थी और बहुत हसीन थी। वह उसके साथ एलजियर्स में ठहरा और एक रात एक अच्छे अमीर से उसने समय नियत कर लिया। परन्तु उसके आने पर शयनागार में लड़की ने बड़ा हो-हल्ला मचाया। अमीरज़ादा नाराज़ और मायूस होकर चला गया। लड़की के रक्षक के ग़ुस्सा का क्या ठिकाना, पर वह मौक़ा देखकर क्रोध को पी गया और लड़की को पुचकार कर, प्यार कर बहुत दम-दिलासा देता रहा। दूसरे ही दिन उसने मैक्सिको का टिकट कटा लिया और वहाँ उससे धीरे धीरे पाप-कर्म का अभ्यास कराया। उस लड़की को जो एक बार देख लेता था, वह मर मिटता था। कोई छः महीने के बाद वह उस लड़की को ठिकाने पर ला पाया और अब उसके सहारे मालदार हो गया है। उस लड़की के साथ एक रात रहने के लिए, लोगों ने पाँच पाँच-सौ डालर का चेक दिया है।"

तिजारती यह ख़ूब जानता है कि किस ओर से और किस जहाज़ी कम्पनी से जा सकने में सुभीता है, क्योंकि कई कम्पनियाँ ऐसी हैं जिनमें इन बातों की जाँच-पड़ताल नहीं होती। अतएव

यात्री अपने मतलब के जहाज़ों से सफर करता है। यात्री यहाँ तक वाक़िफ रहते हैं कि किस जहाज का कप्तान कैसा है। जो कप्तान भला, सीधा या स्त्री-परायण होता है वही इनके मतलब का होता है उससे इन्हें बहुत सुभीता रहता है और काम भी निकल जाता है।

तिजारती यह भी जाने रहता है कि किस बन्दरगाह पर उतरना मुनासिब है। "पनामा में वे ऐसा रास्ता ग्रहण करते हैं कि पकड़े ही न जा सकें। कोलोन जानेवाले यात्री जो यूरुप या हवाना से आते हैं, पोर्ट लीमन या कास्टारीका का टिकट लिये रहते हैं। वहाँ से कोलोन का अलग टिकट खरीद कर छोटे छोटे स्टीमरों में चढ़कर चले जाते हैं, क्योंकि इन लोकल स्टीमरों के यात्री जाँचे या रोके नहीं जाते हैं। कभी कभी ये लोग छोटे छोटे टापुओं में उतर पड़ते हैं और वहाँ से नावों में चढ़कर, वेष बदल कर अपने इच्छित देश को चले जाते हैं।

अपने देश के राजदूतों के जरिये से विदेशों में पासपोर्ट आसानी से मिल जाते हैं, क्योंकि वे क्या जानें कि कौन आदमी कैसा है। वह देश की भाषा जानता हो और उसी देश का वासिन्दा हो, बस इतना सुबूत पा जाने पर उसे पासपोर्ट दे दिया जाता है।

कभी कभी सौदागर या दलाल लोग, रास्ते की आफ़तों से बचने के लिए लड़कियों को एक जहाज पर रवाना करके स्वयं एक दो दिन बाद दूसरे जहाज से चलते हैं। परन्तु यह देखा गया

है कि इस तरीक़े से लड़कियाँ रास्ते ही में गुम हो जाती हैं या जहाज पर के दूसरे दोस्तों के साथ चली जाती हैं। विदेशों से जो अभ्यस्त वेश्यायें लाई जाती हैं उनके जानेका खतरा नहीं रहता, अत एव वे सदा ही इस तरह से थर्ड क्लास में भेजी जाया करती हैं।

इस पेशे वाले, भूठे कागज़ात तैयार करने में बड़े निपुण होते हैं। एक एक यात्री के पास तीन तीन तरीक़े के पासपोर्ट पाये गये हैं। गत यूरुपीय महायुद्ध के बाद से प्रायः सभी देशों में यात्रियों की विशेष छानबीन होने लगी है, फिर भी इनका काम आसानी से चलता है। वे स्वयं भूठे कागज़ात तो तैयार करते ही हैं, साथ ही अधिकारियों से भी पासपोर्ट वग़ैरह बड़ी बड़ी तिकड़मों से प्राप्त कर लेते हैं। ब्याह-शादी-पैदाइश और पहचान के सही प्रमाण-पत्र बना लेना इनके बायें हाथ का खेल है। जहाँ अधिकारी भूठे प्रमाणों से धोखा खा जाने के लिए बराबर रोया करते हैं, वहाँ ये दूसरी दुनियाँ के फितरती लोग अपनी तिकड़मों की सफलता पर नाज करते हैं। वे तो दावे के साथ कहते हैं कि हमारे कागज़ात को कोई होशियार से होशियार आदमी देखने पर नहीं पकड़ सकता, बाद में उसकी जाँच होने पर क़लई खुल जाना दूसरी बात है। कलेक्टरों, कमिश्नरों, गवर्नरों और पासपोर्ट देनेवाले अधिकारियों के हस्ताक्षरों की अक्षर अक्षर ऐसी नक़ल की जाती है कि पहचान करना, यदि असम्भव नहीं, तो बड़ी कठिन बात है।

समय समय पर अधिकारियों के काम करने के सादे कागज-

पत्र चोरी चले जाते हैं, जो इन लोगों के पास पहुँच जाते हैं। जरूरत के वक्त उन्हींको मन के मुताबिक भरकर और वैसी ही मुहर लगाकर ये अपना काम चलाते रहते हैं।

अधिकारी गण सच्चे और झूठे पासपोर्ट की जाँच कैसे कर सकते हैं? सोवियट रूस में छत्तीस अलग अलग स्टेटें हैं, जिन्हें सबको पासपोर्ट जारी करने के अधिकार हैं। भारतवर्ष में प्रान्त प्रान्त की सरकार को पासपोर्ट देने के हक़ हैं। ऐसा ही क़ायदा अमेरिका में है, अतएव पाठक पासपोर्टों की जाँच करनेवाले अफसर की स्थिति को समझ सकते हैं। यात्री लोग ज्यादातर पति-पत्नी के रूप में सफ़र करते हैं, और यदि औरत हुई तो वह साथ वाली युवती को अपनी लड़की या भतीजी बतलाते हैं। ऐसी स्थिति में उनको पकड़ सकना आसान काम नहीं है।

४—अन्तर्राष्ट्रीय समझौता

लड़कियों और स्त्रियों को बाहर ले जाने के लिए काम दिलाने का बहाना बहुत काम करता है। इससे मार्ग की कठिनाइयाँ भी कम हो जाती हैं। नाचने, गाने और कला की शौक़ीन युवतियों को बाहर जाने में कितना ख़तरा रहता है इसका जिक्र तो हम पिछले परिच्छेद ही में कर चुके हैं, इसके अलावा भी अन्यान्य कार्यों के ऐसे प्रलोभन हैं जिनके द्वारा सौदागर ख़ासा चकमा देते रहते हैं।

यूरुपीय महायुद्ध के बाद कई देशों की जन-संख्या इतनी कम हो गई थी कि उन्हें जमीन को बोने-जोतने के लिए एक बड़े जन-समुदाय की आवश्यकता हुई। ऐसे अवसर पर विदेशी महिलाओं की सहायता ही ग़नीमत समझी गई। जिन देशों में स्त्रियों की संख्या ज्यादा थी और बेकारी, और दरिद्रता भयावह थी, वहाँ की महिलायें दूसरे देशों में जाकर स्वल्प वेतन पर काम करने लगीं। पोलैंड की बहुसंख्यक स्त्रियाँ फ्रांस भेजी गई थीं, अतएव दोनों देशों की सरकारों ने उनकी रक्षा की काफ़ी चेष्टा की, फिर भी वे पेशेवर व्यापारियों के चंगुल में फँस ही गई और कोई २० फ़ीसदी भगा ले जाई गई। श्रमजीवियों के रूप में ये तिजारतपेशा लोग पोलिश वेश्याओं को भी ले आये और इस तरह वहाँ भी पैसा कमाते रहे।

युवतियों को बाहर ले जाने का एक तरीक़ा यह भी है कि उनसे विदेश में बड़े आदमियों के यहाँ दाईगीरी पर रखने का वादा किया जाता है। पोर्टसईद नामक जगह पर ग्रीक और दूसरे व्यापारी अपने घरेलू कामों के लिए प्रायः यूरोपियन लड़कियाँ ही रखते हैं, उनमें जो अधिक खूबसूरत होती हैं वे मिस्ट्रेस या रखेलियों की तरह रख ली जाती हैं।

अरजेंटाइन की गवर्नमेंट ने बतलाया कि विदेशी स्त्रियों को लाने में दो ही मुख्य तरीक़े काम में लाये जाते हैं। एक तो शादी करा देने या स्वयं कर लेने का वादा और दूसरे कोई अच्छी नौकरी दिलवा देने का विश्वास। भयानक बेकारी के कारण युवतियाँ दो में से किसी भी प्रस्ताव पर राजी हो जाती हैं। यहाँ तक कि उन्हें नियुक्ति-पत्र भी दे दिये जाते हैं, जो उसी कार्य में लगे हुए, या सहायता करते हुए किसी व्यापारी की दूकान, या आफ़िस के होते हैं।

पहले बतलाया जा चुका है कि स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को बन्द करानेवाले सन् १९०४ और १९१० के प्रस्तावों को माननेवाले तेरह चौदह ही देश थे, पर लीग के प्रयत्न से सन् १९२१ में उन्हीं प्रस्तावों के माननेवाले बहुत से देश हो गये और उनके प्रतिनिधियों ने वेश्या-वृत्ति को रोकने के लिए अपनी स्वीकृति-सूचक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते पर हस्ताक्षर भी कर दिया। जिन देशों ने दस्तख़त किये उनके नाम ये हैं—

१—अल्बेनिया, २—आस्ट्रेलिया, ३—आस्ट्रिया, ४—बेल्जियम, ५—बृटिश साम्राज्य, ६—बल्गेरिया, ७—कनाडा, ८—चीन, ९—क्यूबा, १०—ज़ेकोस्लेविया, ११—फ़िनलैंड, १२—फ़्रान्स, १३—जर्मनी, १४—ग्रीस, १५—हंगरी, १६—हिन्दुस्तान, १७—इटली, १८—जापान, १९—लेटविया, २०—नीदरलैंड, २१—न्यूज़ीलैंड, २२—नारवे, २३—पोलैंड, २४—सिटी ग्राफ़ डैनज़िग, २५—पुर्त्तगाल, २६—रूमानिया, २७—स्याम, २८—दक्षिण अफ्रिका, २९—स्पेन, ३०—स्वीडन, ३१—स्विट्ज़रलैंड, ३२—उरुग्वे, ३३—ब्रेज़िल, ३४—चाइल, ३५—कोलम्बिया, ३६—कोस्टारीका, ३७—इस्तोनिया, ३८—लीथूनिया, ३९—फारस, ४०—डेनमार्क, ४१—पनामा, ४२—पीरू।

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को रोकने के लिए अमेरिका ने लीग के सारे सिद्धान्त मान लिये हैं और जो तरीक़े उसने बतलाये हैं वे वहाँ काम में भी लाये जाते हैं, पर उस देश के शासन-विधान के कारण अभी हस्ताक्षर नहीं हो पाये हैं। पाठकों को उनके दस्तख़त हुए से ही मानने चाहिए, क्योंकि क़ानूनी कठिनाइयाँ भी अब हल हो रही हैं।

जिन देशों ने इस अन्तर्राष्ट्रीय समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किये हैं, उनकी नामावली इस प्रकार है—

१—एबीसीनिया, २—अफ़ग़ानिस्तान, ३—अरजेन्टाइन, ४—बोलीविया, ५—डोमीनेकन रिपब्लिक, ६—ईक्वेडर, ७—ईजिप्ट, ८—ग्वाटेमाला, ९—हाइटी, १०—हेजाज़, ११—हानडूराज़,

१२—लाइबेरिया, १३—लिचन्सटीन, १४—लक्सेमबर्ग, १५—मैक्सिको, १६—मोनाको, १७—निकारागुआ, १८—पैराग्वे, १९—सालवेडर, २०—सरविया, २१—टर्की, २२—सोवियट, रूस, २३—वेनीजुला।

यह खास तौर से नोट करने की बात है कि अरजेन्टाइन, ईजिप्ट, सर्विया और टर्की आदि उन देशों ने हस्ताक्षर नहीं किये हैं जो महिला-व्यापार के मुख्य क्षेत्र या गढ़ कहे जाते हैं। इसका कारण क्या है, यह हम कैसे कह सकते हैं।

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को प्रत्येक क़ानूनी उपाय से रोकने के अन्तर्राष्ट्रीय समझौते पर, जिन इकतालीस मुल्कों के हस्ताक्षर हैं, उन देशों की सरकारें स्त्रियों के क्रय-विक्रय को हर तरह से रोकने में सचेष्ट हैं। बन्दरगाहों और स्टेशनों पर आने-जाने-वाली बालिकाओं और स्त्रियों की देख-रेख रखने के लिए विशेष पुलिस रक्खी गई है। रेलवे के कर्मचारी और अधिकारी भी ख़ास व्यवस्था रखते हैं और जिन पर सन्देह होता है उनको रोक रखते हैं। ऐसी युवतियाँ, जो क़र्ज़े के चंगुल में फँसकर अपना जीवन नष्ट करने को बाध्य होती हैं, सरकारी सहायता से त्राण पाती हैं। बहुत से देशों ने विदेशी स्त्रियों को अपने देश में वेश्यावृत्ति करने की मनाही कर दी है। कई सरकारें अपने देश की लड़कियों को जो दलालों के चक्कर में पड़कर विदेशों में चली जाती हैं, सरकारी खर्चे और सहायता से वापस बुलाने की फ़िक्र भी करती हैं। बेकारी की मुसीबत से पीड़ित

युवतियों को नौकरी और काम दिलाने के लिए एजेन्सियाँ क़ायम की गई हैं। उसी प्रस्ताव के अनुसार जो व्यक्ति पैसा पैदा करने, व्यभिचार कराने या किसी पुरुष की काम-वासना की पूर्ति करने के लिए युवतियों या नाबालिग लड़कियों के बाहर ले जाने की चेष्टा करेगा, उसे कठोर दण्ड दिया जायगा। स्त्रियों के व्यापारियों, दलालों और उनके नौकरों को खोज खोज कर जेलखाने में पहुँचाना भी इस अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के विधान का एक अंश है, जिसे इंग्लैंड, कनाडा आदि देशों ने बड़ी ख़ूबी से कार्यरूप में परिणत कर अपने देश में होने वाले इस पापाचार को बहुत कुछ रोक दिया है।

इस क्षेत्र में सेवा-समितियों और स्वयंसेवकों ने बहुत खोज-बीन की है और वेश्या-वृत्ति रोकने में प्रशंसनीय कार्य कर अच्छा नाम कमाया है।

५—अरजेन्टाइन

अरजेन्टाइन-प्रजातंत्र ने सन् १९०४, सन् १९१० या सन् १९२१ के अन्तर्राष्ट्रीय समझौते में योग नहीं दिया। परन्तु वहाँ की सरकार ने लीग के विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई प्रश्नावली का उत्तर भेजा जिस पर लीग ने उचित रूप से विचार किया। अरजेन्टाइन के उच्च अफसरों, म्यूनिसपल अधिकारियों, पुलिस, और स्वास्थ्य-विभाग के कर्मचारियों से मिलकर सच्ची स्थिति का अनुभव भी किया गया। सेवा-समितियों और स्वयं-सेवकों के साथ लीग के सदस्यों ने कान्फ्रेंस की और उनके द्वारा जो कुछ उपयोगी सामग्री मिल सकी, संचित की। जाँच करनेवालों ने बदनाम लोगों से सम्बन्ध स्थापित कर वहाँ उस दुनियाँ की बहुत सी ज्ञातव्य बातों का पता लगाया। अतएव यह रिपोर्ट बहुत अंश में सही और पूर्ण कही जा सकती है, इसमें कोई संशय नहीं।

ब्यूनास एरीज़ (Buenos Aires), अरजेन्टाइन की मशहूर राजधानी है। यह दक्षिण अमेरिका का सबसे प्रसिद्ध और धनाढ्य शहर है। ब्यूनास एरीज़ ने चाँदी के निर्यात का केन्द्र होने की वजह से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पाली है। यहाँ वेश्या-वृत्ति पर म्यूनिसिपैलटी के कठोर नियमों द्वारा नियंत्रण है। २२ वर्ष

से ऊपर की उम्र की सभी महिलाओं को, जो वेश्या-वृत्ति में लगी हों, म्यूनिसपल-रजिस्टर में दर्ज करना ज़रूरी है। म्यूनिसिपल कानून के अनुसार वेश्या केवल लाइसेन्स-शुदा मकानों में रह सकती हैं; एक ब्लाक में वेश्या का एक ही मकान हो सकता है; एक मकान में केवल एक ही वेश्या रह सकती है; कोई भी चकला किसी गिरजा, देवालय या स्कूल के समीप नहीं हो सकता। प्रत्येक वेश्या केवल एक ही नौकरानी रख सकती है जिसकी अवस्था ४५ साल से ऊपर होना ज़रूरी है। उस खाला का भी म्यूनिसिपैलटी में नाम लिखाना ज़रूरी है। इन सबका प्रति सप्ताह डाक्टरी मुआयना हुआ करता है। सन् १९२२ में वहाँ ४९७ चकले थे, पर सन् १९२३ में उनकी संख्या ५८५ हो गई और सन् २४ में उनकी संख्या बढ़ कर ६३० हो गई। चकलों की संख्या अब घटने लगी है।

इस सम्पूर्ण संख्या में ७५ फ़ीसदी विदेशी वेश्याओं की गणना की गई है। बाकी २५ फ़ीसदी वेश्यायें देश की हैं।

पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार वहाँ पाँच-सौ या इससे ज्यादा ही वेश्याओं के दलाल हैं। यह संख्या तो वह है जिन्हें पुलिसवाले जानते हैं, या जिनकी हिस्ट्री और फोटो उनके पास हैं।

हमारा ख़याल है कि पुलिसवाले इस समस्या से भली भाँति परिचित हैं और या तो इन कामों में वे ख़ुद भी मिले-जुले रहते हैं,

या क़ानूनी कठिनाइयों के कारण सख्त कार्यवाही कर सकने में असमर्थ रहते हैं।

अरजेन्टाइन में कोई ऐसा क़ानून नहीं है जिससे इन कुकर्मों का दमन किया जाय। वहाँ पर रजामन्दी के साथ ले जाई गई या वेश्या-वृत्ति करती हुई २२ साल से ऊपर की युवती के सम्बन्ध में कोई दण्ड-विधान भी नहीं है। फिर भी म्यूनिसिपल क़ानूनों के कारण वहाँ की वेश्यायें स्वतंत्र वृत्तिवाली हैं, उनके निजके मकान हैं और वे क़र्जदार नहीं हैं। वहाँ की म्यूनिसिपैलटी-वाले कुछ ऐसे कामों की लिस्ट बना रहे हैं और ऐसा कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं जिसमें वेश्यावृत्ति को छोड़ कर स्त्रियाँ स्वाभिमान और इज्जत से रोटियाँ कमावें।

दूसरी रिपोर्ट दूसरी तरह की है। लीग के एक कर्मचारी की कुछ ऐसे लोगों से मुलाक़ात हो गई जो क्लब खोले हुए थे। वह कर्मचारी उन्हींमें मिलकर क्लब का मेम्बर हो गया। वहाँ धीरे धीरे उसे पता चला कि यह एक टोली है जो अनेक चकलों का सञ्चालन करती है। इन्हीं लोगों के द्वारा लड़कियाँ बेची और ख़रीदी भी जाती हैं। एक दिन इस व्यक्ति और क्लब के एक अनुभवी सदस्य से जो मनोरञ्जक वार्तालाप हुआ वह जरा ध्यान से सुनिए। उसने कहा—

"मैं मानता हूँ कि ब्यूनास एरीज में लड़कियों के मतलब की बहुत सी बातें हैं। लेकिन यह तो तुम मानो ही गे कि लड़कियों, युवतियों, मिसों और वेश्याओं सभी को किसी न किसी

पुरुष की सहायता चाहिए। अन्यथा उनको ऊँचे हुए और धनी-मानी ग्राहक कहाँ से मिलेंगे? कौन जाकर उनको लायेगा, कौन जानकर अमुक आई हुई सुन्दरी की उनसे प्रशंसा करेगा? लोग समझते हैं कि यहाँ कुटनियाँ, दलाल और कमीशन-एजेन्ट नहीं हैं, पर यह गलत है, हम लोग सब यही काम करते हैं। हमारे जैसे इस शहर में कई लाख हैं।

इस पेशे के लिए खास जगह पर, खास तरह के मकानात चाहिए। सभी मकान तो नहीं मिल सकते और जो अच्छी जगह पर हैं उनके किराये बहुत हैं। कोई लड़की इतना भाड़ा देकर शुरू में पेशा प्रारम्भ नहीं कर सकती, जब तक कि कोई उसकी सहायता न करे। ऐसी सहायता हमीं लोग कर सकते हैं। मह उनके लिए मकान ढूँढ़ देते हैं और आवश्यक टीम-टाम में पैसा भी लगा देते हैं।

मेरे स्वयं कई मकान हैं। मैंने उनको जब खरीदा था तब वे कच्चे और भद्दी शक्ल के थे। अब मैंने उनको अपने किरायेदारों के मतलब के अनुसार बनवा लिया है। मेरे हर एक मकान में कोई वेश्या या मिस है, जो अपनी आमदनी का आधा भाग मुझे देती है। इससे किराया और ब्याज सभी कुछ वसूल हो जाता है। प्रत्येक मकान में मैं एक दरवान रखता हूँ जो आने-वाले ग्राहकों की संख्या लिखा करता है। यह व्यक्ति सदा मेरा विश्वासपात्र आदमी होता है। मैं और मेरी पत्नी हर हफ्ते मकानों में जाती रहती हैं और रुपया वसूल करती रहती हैं।

जब लड़की की रजिस्ट्री होती है तब उसके स्वास्थ्य की जाँच करके एक कार्ड दिया जाता है। हर हफ्ते लड़की को डाक्टरी जाँच के लिए अस्पताल में जाना पड़ता है, जहाँ कार्ड की साप्ताहिक खानापूरी होती है। दरवान सदा इस कार्ड को अपने पास रखता है और आगन्तुकों को युवती के स्वास्थ्य से आगाह करने के लिए दिखला देता है। इस तरह हमारा व्यापार मजे में चलता रहता है।

जब स्त्री वेश्यावृत्ति में रजिस्ट्री कराने के लिए जाती है तो उसे मकान-मालिक का एक रुक्का दिखलाना पड़ता है कि वह उस जायदाद को उसके हाथ बेच देगा। हम लोग जिस वक्त उसे अपना दस्तखती कागज देते हैं तो अपनी खैरियत के लिए उससे भी एक झूठा रुक्का लिखा लेते हैं कि मैंने १००० पिसूज इनसे पाया। इसके अलावा हम लोग सरकारी स्टाम्पदार कोरे कागज पर भी इन युवतियों के दस्तखत ले लेते हैं, क्योंकि जब कभी ये बेईमानी करना चाहें, या हमें सताना चाहें तब हम जो चाहें सो मनमाने ढँग से कोरे कागज पर लिख कर उन्हें मुसीबत में डाल सकते हैं। इसलिए ये लोग हमसे कभी तक़रार नहीं मोल लेतीं और न कभी हमको किसी कठिनाई में डालती हैं। हम भी, जो कुछ हो सकता है, अपना हित-अनहित मद्दे नजर रखते हुए, इनकी भलाई करते रहते हैं।"

इन जगहों पर केवल स्थायी रूप से रहने वाले ही नहीं जाते, प्रत्युत देश-विदेशों के आये हुए जहाजी लोग और मुसाफिर बहुत

पहुँचते हैं। मकानों के अलावा कितनी ही युवतियाँ घूम-फिर कर सड़कों पर, थियेटरों में, या होटलों में शिकार खोजा करती हैं। खुफिया-पुलिस के डाइरेक्टर की निम्नलिखित रिपोर्ट पढ़िए—

"ब्यूनास एरीज के अमुक थियेटर में कोई सौ, डेढ़-सौ गुप्त रूप से व्यभिचार करनेवाली वेश्यायें हर रात में बाहर और भीतर ग्राहकों की तलाश में मड़राया करतीं हैं। इन औरतों को थियेटर के मालिक बिना टिकट ही अन्दर दाखिल हो जाने देते हैं। इनके कारण थियेटर में नौजवानों की भीड़ लगी रहती है जिनके आगमन से थियेटर-वाले अच्छा नफ़ा कमाते हैं। इनमें ज्यादातर विदेशी युवतियाँ दिखलाई देती हैं। नई नवेलियों से थियेटर-हाल गूँजा करता है, उनमें से बहुतों ने मुझसे तस्लीम किया है कि वे हाल ही में यहाँ आई हैं और उनका उद्देश्य पैसा कमा कर स्वदेश को लौट जाना है। अरजेन्टाइन में क़ानून के अनुसार केवल सड़क पर, या आम जगह पर, जहाँ सब लोगों की नज़र पड़ती हो, व्यभिचार करना मना है। इसके अलावा सब क्षम्य है। यहाँ से बढ़ कर सुन्दर युवतियों की जमात शायद ही कहीं दिखाई पड़ती है।"

एक और बयान देखिए—"एक रात हम लोग ब्यूनास एरीज के एक क्लब में पहुँचे। उस क्लब में खाने, पीने, नाचने और गाने का, सभी प्रकार का, प्रबन्ध था। हमने मालूम किया कि यहाँ का सारा कार्य यौवनवती युवतियों के हाथ में था, वहाँ कोई पुरुष काम करता हुआ नहीं दीख पड़ता था। खाना खिलाने के बाद

युवतियों का क़ाफ़िला आगन्तुक ग्राहकों के बीच में आ बैठा, और जुआ खेलने और शराब पिलाने लगा। जिन्हें नाचना आता था, या जो नाचना चाहते थे, उनके साथ उन युवतियों ने खूब बेशरमी से नाचा और गले में हाथ डाल डाल कर उन्हें लुभाया। उनमें से अनेक युवकों ने युवतियों के साथ रात के आराम का बन्दोबस्त कर लिया।"

अरजेन्टाइन से विदेशों में बाहर जाने वाली स्त्रियों की संख्या बहुत कम है, पर यूरुप के सभी भागों से यहाँ आने वाली, या लाई जाने वाली युवतियों की तादाद बहुत ज्यादा है। यूरुप में आर्थिक कठिनाई में पड़ी हुई स्त्रियों का खयाल है कि अरजेन्टाइन की सड़कों पर चाँदी और सोना लुटता है। परन्तु अरजेन्टाइन की सरकार का कहना है कि हमारे यहाँ व्यभिचार के उद्देश्य से आने-वाली स्त्रियों की संख्या बिल्कुल घट गई है। जो कुछ हो, इसका असली आभास पाना तो बड़ा कठिन है, पर इन दोनों वक्तव्यों के बीच में कहीं सचाई हो सकती है। हाँ, यह बात जरूर है कि बन्दरगाहों पर कड़ी जाँच होती है और दर्जनों विदेशी लड़कियों को सन्देह में उनके देशों को पहले जहाज से वापस भेज दिया जाता है।

सन् १९२४ में कुछ तार पकड़े गये थे, जिनकी अविकल नक़ल सरकारी विभाग ने ले ली थी। तारों की उस नक़ल का कुछ अंश नीचे दिया जाता है। जहाँ पर मज़दूर (Workmen) शब्द का प्रयोग है उनको आप वेश्यायें समझिए—

तार कहाँ से— भेजा गया	तारीख	मजमून	हस्ताक्षर
फ्रांस ...	13th February	Sending you six workmen and to seamstresses. अर्थात तुम्हारे पास ६ मजदूर और दो दर्जिनें भेज रहे हैं।	Adolfo
आस्ट्रिया ...	7th June	Today without fail wait at Station. आज बिलानागा, स्टेशन पर इन्तजार करो।	Manual
पोलैंड ...	7th June	Am not sending the young girls till Thursday गुरुवार तक मैं जवान लड़कियाँ नहीं भेज रहा	Manual
"	4th January	Await seven workmen at Station स्टेशन पर ७ मजदूरों का इन्तजार करो।	Adolfo
"	...	Confirm at once if today can despatch passengers फौरन यह बात पक्की करो, यदि आज मुसाफिर भेज सको।	Tinsky
वारसा ...	...	To labourers are going दो मजदूर जा रहे हैं।	Adolfo

अहोल्फो, मनुअल और टिस्की रक्खे हुए उपनाम हैं जो उस देश में काफी विख्यात हैं। ये प्राणी देश-विदेशों में खूबसूरत और कम उम्र की युवतियों की तलाश में सदा घूमा-फिरा करते हैं।

ऐसे तारों के पाने पर लोग 'रिसीव' करने के लिए जेटी पर आ जाते हैं और रात के समय शेष अन्तर्देशीय यात्रा समाप्त करते हैं। कई होटल-वाले भी इनकी साजिशों में मिले रहते हैं जो ऐसे आसामियों, या आई हुई युवतियों को अपने यहाँ बिना पैसा-कौड़ी के टिकाते हैं, क्योंकि इस व्यापार के व्यापारियों के साथ उनके चालू खाते पड़े हुए हैं। इन सब बातों से प्रत्यक्ष है कि स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार से अधिक से अधिक रुपया कमाने के लिए व्यापारी लोग अरजेन्टाइन में दिन-दहाड़े उन विचित्र तिकड़मों और धोखा-धड़ी से काम लेते हैं जिनकी कोई आदमी कभी कल्पना भी नहीं कर सकता।

६—आस्ट्रिया

आस्ट्रिया वह मुल्क है जिसने १९०४ का अन्तर्राष्ट्रीय समझौता माना था और १९१० तथा १९२१ में भी सहयोग दिया। आस्ट्रिया ने स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार के दमन के लिए हस्ताक्षर भी कर दिये और उसके दमन करने का उपाय भी किया।

वायना में लाइसेन्सशुदा मकानों को खत्म कर दिया गया है। वहाँ वेश्यायें अपने ही मकानों में रहती हैं। वे बहुधा अकेली या एक दो लड़कियों के साथ होती हैं। वायना में छोटे छोटे होटल हैं। जिन पेशेवर या ग़ैर पेशेवर वेश्याओं, या महिलाओं को मकान में जगह नहीं मिलती, या सुविधा नहीं होती, वे उन होटलों में, घंटे के हिसाब से भाड़ा देकर, ग्राहकों को ले जाती हैं।

लगभग सभी पेशेवर वेश्यायें रजिस्ट्री-शुदा हैं। फ़ी हफ़्ते वे अपनी डाक्टरी जाँच कराने स्टेट-अस्पताल में जाती हैं। क़ानून के अनुसार २१ वर्ष से कम उम्र की युवतियाँ इस पेशे में नहीं दाखिल हो सकतीं।

यह तो मान लेना चाहिए कि बहुतेरी स्त्रियाँ दर्ज की हुई नहीं हैं, क्योंकि लीग की जाँच-कमेटी के मेम्बरों ने जाँच की तो मालूम हुआ कि पैसे की जरूरत होने पर आसपास के क़स्बों और गाँवों से हसीन तन्दुरुस्त लड़कियाँ शहर में बहुधा आ जाया करती हैं।

वायना की सड़कों पर दिन के वक़्त भी छोकड़ियाँ घूमा करती हैं। ये पेशेवर तो नहीं हैं, पर मक़रूज़ हैं और अपने महाजन का पैसा चुकाने के लिए व्यभिचार करती हैं। देखने-वालों का यही अनुभव है कि अधिकांश युवतियाँ २१ वर्ष की अवस्था से नीचे की हैं।

जाँच-कमेटी के एक मेम्बर के सामने एक लड़की ने इस प्रकार बयान दिया था—

"हम लोग एक थियेटर में भरती हो गई थीं। उसकी सञ्चालिका ने हमें आधा वेतन भी न दिया और हमसे मनमाने ढँग से कुकर्म कराना शुरू किया। धीरे-धीरे उसके अत्याचार असह्य हो गये''आखिर एक दिन उसने थियेटर का स्वांग तोड़ डाला और हम लोगों को बिना पैसा कौड़ी दिये निकाल दिया। तबसे हम लोग बहुत मजे में हैं। वह तो थियेटर नहीं, बिल्कुल बदमाशों का अड्डा था, अब कभी मैं किसी मालिक या मालकिन के पास काम न करूँगी। मैं इस हालत में ज्यादा कमाती हूँ और ज्यादा सुखी हूँ। जहाँ चाहूँ वहाँ जा सकती हूँ, जिस जवान को पसन्द करूँ, उसके साथ मौज मार सकती हूँ। वहाँ तो मेरा तन, मन, धन सभी उसके हाथ मानों बिका हुआ था, गोया मैं उसकी ज़रख़रीद ग़ुलाम थी। हफ़्ते में एक दिन की छुट्टी मिलती थी। किसी किसी दिन पन्द्रह पन्द्रह आदमी मेरे साथ दुराचार करते, पर मैं जबान न हिला पाती। वहाँ मेरी जिन्दगी का मूल्य ही क्या था, तन्दुरुस्ती चौपट हो रही थी। इन मकानों में लड़कियाँ

तीन-चार साल से ज्यादा नहीं टिकतीं। ज्योंही उनका रूप भाई मारने लगता है, गालों की लाली कम पड़ने लगती है और यौवन बहुत कुचला जाने के बाद ढलने लगता है कि वे किसी न किसी बहाने से निकाल दी जाती हैं, फिर वे चाहे जितनी भी फरमा- बरदार और पैदा करने वाली क्यों न रही हों, इसका कोई लिहाज नहीं करता।

यहाँ पुलिस की बड़ी सख्ती है। चाहे भी जितनी कम तन- ख्वाह-वाला पुलिस-वाला हो, वह घूस नहीं लेता। घूस लेना पुलिस-विभाग की सबसे बड़ी बेइज्जती है। उनको फौजी सिपाहियों की ऐसी ट्रेनिंग दी जाती है और सेवा और ईमानदारी का मुख्य पाठ पढ़ाया जाता है, अतएव कुछ दे-ले कर यहाँ काम चला लेना हमारे लिए असम्भव है। यहाँ की पुलिस का चरित्र भी बड़ा उच्च है। वे हम लोगों से बातचीत तक नहीं करते, वरना उन पर जुर्माना होता है। हम लोगों के पास कार्ड होते हैं। पुलिस- वाले हम लोगों की शक्लों से बहुधा भिज्ञ हैं, पर जब नई स्त्रियाँ आ जाती हैं तब वे परेशान होते हैं, उनको मना करते हैं और इस पर भी जब वे नहीं मानतीं तो उनको मकानों में तब तक रखते हैं जब तक वे बालिग न हो जायँ। इस पर भी कन्या- दलाल बड़ी चालाकी करते हैं और भोली लड़कियों को बहका बहका कर गुप्त स्थानों में ले जाकर पैसे पैदा करवाते हैं।

यहाँ हम लोगों को होटलों और काफों में जाना मना है। यद्यपि होटल-वाले चाहते हैं कि हम लोग वहाँ जाने पावें ता

उनकी आमदनी बढ़े, पर ऐसा होने से उनका लाइसेन्स ही छिन जाय। हाँ, जो लड़कियाँ उनमें काम करती हैं वे अच्छा धन कमाती हैं, पर वे भी होटल के घंटों में कहीं नहीं जा सकतीं और केवल रात में जब होटल के दरवाजे बन्द हो जाते हैं तब जा सकती हैं।

ये सब युवतियाँ किसी न किसी दलाल की निगरानी में रहती हैं। उनका प्रभाव इतना अधिक है कि आमदनी का आधा या तिहाई हिस्सा उनके पास घर बैठे पहुँच जाता है। वे और उनके कर्मचारी प्रायः पीछे पीछे घूमा करते हैं और हमारी आमदनी की थाह लगाये रहते हैं। यदि हम उन्हें न दें तो वे तरह तरह का त्रास देकर हमारी आमदनी पर आघात पहुँचाते हैं।"

एक दलाल ने बतलाया कि पुलिसवाले जब जब हम लोगों को पकड़ पाते हैं तो बड़ी लेथन करते हैं। वाइना की पुलिस से हम लोग बहुत डरते हैं और सदा चौकन्ने रहते हैं।

आस्ट्रिया की सरकार ने विदेशी वेश्याओं को देश से निकाल देने की नीति बना रक्खी है, फिर भी देश में ज़ेकोस्लेविया और हंगरी की काफ़ी लड़कियाँ मौजूद हैं जो अपने को आस्ट्रियन बतलाती हैं।

महिला-दलाल बतलाते हैं कि आस्ट्रियन लड़कियों को बाहर ले जाने में कोई कठिनाइयाँ नहीं पड़तीं। उन्हें लोग हैम्बर्ग और पैरिस जैसी जगहों की सैर के लिए ले जाते हैं और वहाँ से अपने देश के राजदूत से इजाज़त लेकर दुनियाँ में चाहे जहाँ

निकल जाते हैं। चाइना में लाइसेन्सशुदा मकानों के बन्द होने पर काफ़ी लड़कियाँ विदेशों को गई हैं। ज्यादातर लड़कियाँ इटली, अमेरिका और हैम्बर्ग को गई थीं और अब भी वहीं हैं।

आस्ट्रिया में सुन्दरता बहुत है और साथ ही साथ ग़रीबी भी बहुत है। कुछ अंश में वहाँ का व्यभिचार आवश्यक बुराई के समान है, या है जीवन-मरण का आर्थिक प्रश्न।

७—बेल्जियम

बेल्जियम ने लीग आफ़ नेशन्स के शर्त्तनामे पर हस्ताक्षर कर दिये हैं और अपने यहाँ स्त्रियों के व्यापार को दबाने की भरसक चेष्टा की है।

बेल्जियम में वेश्यावृत्ति की देखरेख रखने का क़ानूनी अख्तयार है। इस क़ानून में वेश्याओं की डाक्टरी जाँच और उनका साप्ताहिक निरीक्षण सभी कुछ आजाता है। एन्टवर्प और ब्रुसेल्स में लाइसेन्सशुदा मकानों के अलावा होटलों और प्राइवेट अहातों में भी युवतियों का रोजगार होता है। इन जगहों में शराब बेची जाती है और होटल के बन्द होने पर युवतियाँ पुरुषों के साथ चली जाती हैं। सड़कों पर भी ये कार्यवाहियाँ होती रहती हैं।

बेल्जियम के बहुत कम स्थलों में २१ साल से कम उम्र की स्त्रियाँ वेश्या के रूप में मिलती हैं। होटलवाले भी नाबालिग़ लड़कियों को अपने यहाँ नहीं रखते।

सन् १९२५ से वेश्याओं के रहने के सरकारी मकान तोड़ दिये गये हैं और रजिस्टर्ड वेश्यायें एक साथ रहने से रोक दी गई हैं। यहाँ यह भी पता चला कि इस व्यापार-वाले परस्पर मिले हुए हैं और अपने यहाँ की लड़कियों को दूसरों के यहाँ

भेजकर, और दूसरों की लड़कियाँ अपने यहाँ लेकर तथा उन्हें एक शहर से दूसरे शहर में ले जाकर नवीनता का ढोंग रचकर, पैसा पैदा करते हैं। ब्रुसेल्स वग़ैरह बड़े बड़े शहरों में इन लोगों के अड्डे बने हैं।

एन्टवर्प के नाचघर व्यभिचार के मुख्य केन्द्र हैं। ये खुल्लम खुल्ला शराब और नशीली चीज़ें बेचते हैं। इनमें काम करनेवाली स्त्रियाँ आचरण-भ्रष्ट युवतियाँ हैं। वे शराब पीती हैं और पिलाती हैं और ग्राहकों को ऊपर के कमरों में ले जाती हैं। जब पुलिसवालों से पूछा तो वे कहने लगे कि हम क्या करें? किसी साधारण कमरे में किसी स्त्री-पुरुष के साथ जाने पर हम क़ानूनन क्या कर सकते हैं, किसी के प्राइवेट स्थान में झाँकने को क़ानून रोकता है। यहाँ जब जाँच-पड़ताल करनेवाले गये और बहुत समय तक बैठे रहे तो उन्हें कोई जोड़े ऊपर जाते न दीख पड़े। जब वे चलने लगे तो दो जोड़े ऊपर चढ़ रहे थे। एक युवती ने आगे बढ़कर पूछा कि क्या आप ऊपर प्राइवेट रूम में न चलेंगे?

"क्यों वहाँ क्या होगा?" कमेटी के एक मेम्बर ने पूछा।

"जीवन का आनन्द"—उसने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं चुप हो गया और चुपचाप बाहर चला आया।"

नाचघरों की लड़कियों ने बतलाया कि उन्हें एक रात के २० से २५ बेल्जियम फ्रैंक मिलते हैं। लेकिन वहीं से खाना और

कपड़ा खरीदना उनके लिए अनिवार्य है। पुरुष कर्मचारियों को घूस भी देनी पड़ती है और जिसे न दो वही तंग करता है। अतएव उसमें से तो कुछ बचता नहीं, हाँ जो कुछ यात्री खुश होकर दे जाता है वही बच जाता है। सन् १९१५ से १९२४ तक मन्टवर्प में व्यभिचार पर निर्भर रहने वाली युवतियों की संख्या इस प्रकार बढ़ी है—

सन्	संख्या
१९१५	२१४
१९१६	२८६
१९१७	३९४
१९१८	४०६
१९१९	४४२
१९२०	३७४
१९२१	४६१
१९२२	५५८
१९२३	५९०
१९२४	६५२

किसी रजिस्टर्ड मकान में नाबालिग लड़की रखना या नाबालिग युवक का प्रवेश करना, जुर्म में दाखिल है। वेश्याओं का खिड़कियों पर खड़ा होना, इशारों से किसी को बुलाना और सड़कों पर खड़ी होना भी क़ानून के खिलाफ़ है।

एन्टवर्प की वेश्याओं ने बतलाया कि यहाँ आमदनी अच्छी नहीं है। इस पर भी उन सुन्दर सलोनी युवतियों से हमें होड़ लेनी पड़ती है, जो इस रोजगार में नहीं हैं, प्रत्युत तफ़रीह के लिए या कभी कभी पैसे के लिए निकलती घूमती फिरती हैं।

विदेशी वेश्यायें बेल्जियम में नहीं रह सकतीं। रजिस्ट्री होते समय ही वे या तो निकाल बाहर की जाती हैं, या पता लगते ही देश से निर्वासित कर दी जाती हैं।

विदेशी महिलायें बिना रजिस्ट्री कराये होटलों में रहकर दलालों की सहायता से रोजगार करती हैं। इनमें फ्रेंच लड़कियाँ सबसे ज्यादा होती हैं।

बेल्जियम की युवतियाँ फ्रांस, जर्मनी और हालैंड में बहुत हैं। फ्रांस में जाने की किसी को कुछ रोक-थाम नहीं है, पर सन्देह होने पर जर्मनी और हालैंड-वाले विदेशी वेश्याओं को निकाल देते हैं।

एन्टवर्प के एक होटल-वाले ने जाँच के लिए गये हुए व्यक्ति से कहा—"अजी, यहाँ चाहे जितनी लड़कियाँ कौड़ी के मोल ले लो और उन्हें चाहे जहाँ ले जाओ। परन्तु बाहर जाने के लिए पैसा मिलना चाहिए। उनके सबके साथ [illegible] कोई दलाल लगा हुआ है। उन्हें अकेले ले जाना मुश्कि[illegible] उस दलाल को भी कुछ मिलना चाहिए। मेरे यहाँ ए[illegible] खूबसूरत इंग्लिश छोकड़ी रात में काम करने आती [illegible]

है। आज रात में आकर उससे बातें करो और एक रात उसके साथ रहो। शायद वह बाहर जाने को तैयार हो जायगी। एक दलाल के द्वारा वह इंग्लिस्तान से उड़ा लाई गई थी, पर अब वह उसके साथ नहीं रहती। मेरे यहाँ उसके आने से रोजगार चमक गया है और ग्राहकों का तांता लगा रहता है।"

होटलवाले को क्या मालूम था कि जिससे वह यह अहवाल बयान कर रहा है वह कौन है, और किस मतलब से आया है।

के अनुसार ३५० से लेकर १००० रुपये सालाना तक देनी पड़ती है।

लड़कियों की अवस्था वग़ैरह की वहाँ कोई जाँच नहीं की जाती। रोजगारी, और वेश्यायें रजिस्टर भेज देती हैं जिन पर लड़की के हस्ताक्षर होते हैं कि वह २१ साल या इससे ज्यादा की है। ये लड़कियाँ बहुधा १५ से १८ साल की होती हैं। ब्रेज़िल में १५ से २० साल की लड़कियाँ इन कार्यों में बहुत फँसी हैं।

सड़कों पर पुलिसवाले इसलिए घूमा करते हैं कि वेश्यायें या युवतियाँ सड़कों पर खड़ी होकर ग्राहकों को न बुलायें। युवतियाँ उनकी कुछ परवाह नहीं करतीं, वे भी सख़्ती नहीं करते, क्योंकि उनका हफ़्तेवार मेहनताना बँधा रहता है, जिससे नौकरी से कई गुना ज्यादा आमदनी होती है। कहते हैं कि ब्रेज़िल की

८—ब्रेज़िल

ब्रेज़िल, लीग आफ़नेशन्स के १९२१ वाले समझौते को मानने वाला मुल्क है।

लीग के अधिकारियों ने वहाँ कई शहरों और कस्बों में जाकर स्वयं जाँच की थी। उस समय ब्रेज़िल की राजनैतिक परिस्थिति खराब थी, अतएव साओपालो, सन्तोष, बाहिया, परनामब्यूको जैसे शहरों में जाकर स्थिति न देखी जा सकी। ऐसी परिस्थिति में सरकारी आँकड़ों, या जनता के सेवकों की गवाहियों पर ही रिपोर्ट तैयार की गई।

रायोडि जनीरो (ब्रेज़िल की राजधानी) के प्रत्येक मुहल्ले में वेश्यायें दीख पड़ीं जो दलाल की संरक्षता में दुराचरण कर रही थीं। अमीर और ग़रीब, सभी मुहल्लों में प्रचुरता के साथ वे आबाद थीं।

वहाँ पर इस बात की कोई सख्ती नहीं है कि एक मकान में एक ही वेश्या रहे। जो स्त्री या पुरुष सरकारी लाइसेन्स लिये है, वह वेश्याओं, मिसों और सभी तरह की युवतियों की जमात इकट्ठा करने का अधिकार रखता है। जाँच करने-वालों ने एक एक जगह पर दर्जनों युवतियों को देखा है।

ऐसे मकानों का किराया १३० डालर, या कोई ३५० रुपया महीना है। वार्षिक लाइसेन्स की फ़ीस आमदनी और परिस्थिति

के अनुसार ३५८ से लेकर १००० रुपये सालाना तक देनी पड़ती है।

लड़कियों की अवस्था वग़ैरह की वहाँ कोई जाँच नहीं की जाती। रोज़गारी, और वेश्यायें रजिस्टर भेज देती हैं जिन पर लड़की के हस्ताक्षर होते हैं कि वह २१ साल या इससे ज्यादा की है। ये लड़कियाँ बहुधा १५ से १८ साल की होती हैं। ब्रेज़िल में १५ से २० साल की लड़कियाँ इन कार्यों में बहुत फँसी हैं।

सड़कों पर पुलिस-वाले इसलिए घूमा करते हैं कि वेश्यायें या युवतियाँ सड़कों पर खड़ी होकर ग्राहकों को न बुलायें। युवतियाँ उनकी कुछ परवाह नहीं करतीं, वे भी सख्ती नहीं करते, क्योंकि उनका हफ़्तेवार मेहन्ताना बँधा रहता है, जिससे नौकरी से कई गुना ज्यादा आमदनी होती है। कहते हैं कि ब्रेज़िल की पुलिस बेहया और घूसखोर है।

प्रायः सभी लड़कियाँ दलालों के अधिकार में होती हैं। वे ही आदमियों के लाने और सौदा पटाने का बन्दोबस्त करते हैं। आमदनी का आधा हिस्सा वे रोज़ बाँट लेते हैं, तब लड़की को बाहर निकलने देते हैं।

अस्पतालों में देखा गया कि कितनी ही १६-१७ साल की लड़कियाँ पुरुषों की ज्यादती के फलस्वरूप पड़ी हुई इलाज करा रही हैं। उनके मालिक कभी कभी पन्द्रह और बीस बीस आगन्तुकों को ख़ुश करने के लिए उन्हें मजबूर कर देते हैं। कोई कोई आगन्तुक बलिष्ट और बहुत बदमाश होते हैं जो तरह तरह

में यूरोपियन सुन्दरियों को ही पसन्द करते हैं। वहाँ के अमीर आदमी अनेक विदेशी रखेलियाँ रखते हैं। थोड़े थोड़े दिन बाद नई युवतियों से उनकी बदली करते रहते हैं। रूस, फ्रांस, पोलैंड और इटली की सुन्दरियाँ रामोडी जनीरों में ८० फ़ीसदी हैं। रामोडी जनीरों में महिला सौदागरों के बाक़ायदे फर्म खुले हुए हैं जिन्हें इस विषय में दिलचस्पी लेने-वाले सभी जानते हैं। वे हर वक्त, हर क़िस्म का 'माल सप्लाई करने की गारंटी' करते हैं और कहते हैं कि हम फुटकर सौदागर नहीं, प्रत्युत थोक माल बेचते हैं। उनके अनेक दलाल और संरक्षक यत्र तत्र सर्वत्र घूमा फिरा करते हैं।

रामोडी जनीरो शहर के दो दलालों से जाँच करनेवालों ने विशेष जान-पहचान पैदा कर ली थी और वे खुलकर अपने रोज़गार के राज़ बतलाने लगे थे। उन्होंने बतलाया कि "हम लोग लड़कियों से व्यभिचार कराकर जितना पैदा नहीं करते, उससे दूना शहर के अमीरों को कमसिन लड़कियाँ सप्लाई करके करते हैं। यहाँ फ्रांस की छोटी उम्र की (१५-१६ साल) सुन्दरियों की वे बहुत क़द्र करते हैं और उनके लिए हमें बहुत इनाम देते हैं। इस शहर में कोई बड़ा आदमी ऐसा नहीं है जिसके पास चार-छः सुन्दरियाँ न हों। जब वे उन्हें वर्ष दो वर्ष में निकाल देते हैं तब वे फिर हमारे पास आती हैं और हम उनसे वेश्यावृत्ति कराते हैं। इस कार्य के लिए कितने ही अमीरज़ादे हमें तनख्वाहें देते हैं, और इनाम इक़राम के अलावा यूरुप आने-जाने का

के व्यभिचारों से बेचारी कमसिन लड़कियों को ऐसा परेशान और बेज़ार कर डालते हैं कि हफ़्तों के लिए वे नाकाम हो जाती हैं। हाँ, ऐसे लोग दलाल और मकान के मालिक को क़ीमत बहुत काफी दे जाते हैं।

बूढ़ी कुटनियाँ सड़कों पर फिरा करती हैं, या लोगों के मकानों में आया-जाया करती हैं। जहाँ किसी पति-पत्नी में झगड़ा हुआ कि उन्होंने पत्नी को स्वाधीन जीवन बिताने का लालच दिखाया। ये लोग फिर उन्हें दलालों के पास ले जाती हैं और भेंट कराने के लिए दो तीन रुपया ले लेती हैं।

जिन मकानों में ये दुष्कर्म बहुधा होते हैं, वे बड़े गन्दे, चारों ओर से बन्द और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। उनमें एकान्त भी कम होता है और व्यभिचार सस्ता होता है। दलालों का काफ़िला सदा आनेवाले जहाज़ों के स्वागत के लिए डटा रहता है, क्योंकि मल्लाह, सिपाही और निम्न कोटि का यात्री ही उनकी आमदनी का कारण है।

ब्रेज़िल की बहुत कम युवतियाँ बाहर देशों में ले जाई जाती हैं। इसका कारण यह है कि वे न तो बहुत सुन्दर होती हैं, न फैशन से लकदक, और न सुशिक्षित हैं। वे ज़्यादातर देश की जरूरत को ही पूरा करती हैं।

हाँ, विदेशों से सुन्दरियाँ हज़ारों की तादाद में ब्रेज़िल आती हैं। कोई ऐसा यूरुपीय देश नहीं जिसकी युवतियाँ ब्रेज़िल में न हों। अच्छी कोटि के बाहर से आनेवाले यात्री और धनी ब्रेज़िल

में यूरोपियन सुन्दरियों को ही पसन्द करते हैं। वहाँ के अमीर आदमी अनेक विदेशी रखेलियाँ रखते हैं। थोड़े थोड़े दिन बाद नई युवतियों से उनकी बदली करते रहते हैं। रूस, फ्रांस, पोलैंड और इटली की सुन्दरियाँ रामोडी जनीरों में ८० फीसदी हैं। रामोडी जनीरों में महिला सौदागरों के बाक़ायदे फर्म खुले हुए हैं जिन्हें इस विषय में दिलचस्पी लेने-वाले सभी जानते हैं। वे हर वक्त, हर क़िस्म का 'माल सप्लाई करने की गारंटी' करते हैं और कहते हैं कि हम फुटकर सौदागर नहीं, प्रत्युत थोक माल बेचते हैं। उनके अनेक दलाल और संरक्षक यत्र तत्र सर्वत्र घूमा फिरा करते हैं।

रामोडी जनीरो शहर के दो दलालों से जाँच करनेवालों ने विशेष जान-पहचान पैदा कर ली थी और वे खुलकर अपने रोज़गार के राज़ बतलाने लगे थे। उन्होंने बतलाया कि "हम लोग लड़कियों से व्यभिचार कराकर जितना पैदा नहीं करते, उससे दूना शहर के अमीरों को कमसिन लड़कियाँ सप्लाई करके करते हैं। यहाँ फ्रांस की छोटी उम्र की (१५-१६ साल) सुन्दरियों की वे बहुत क़द्र करते हैं और उनके लिए हमें बहुत इनाम देते हैं। इस शहर में कोई बड़ा आदमी ऐसा नहीं है जिसके पास चार-छः सुन्दरियाँ न हों। जब वे इन्हें वर्ष दो वर्ष में निकाल देते हैं तब वे फिर हमारे पास आती हैं और हम उनसे वेश्यावृत्ति कराते हैं। इस कार्य के लिए कितने ही अमीरज़ादे हमें तनख्वाहें देते हैं, और इनाम इक़राम के अलावा यूरुप आने-जाने का

किराया भी देते हैं। लड़कियों का लाना आजकल कुछ कठिन काम नहीं है। पोलैंड और आस्ट्रिया की एक से एक बढ़कर सुन्दरी थोड़े रुपयों में आ जाती है। फ्रांस में भी आर्थिक कठिनाई है, सच पूछिए तो, अगर इन देशों में पैसे की दिक़्क़त न हो तो हमारा रोज़गार ही ठंडा पड़ जाय।" निःसन्देह गत यूरूपीय महायुद्ध ने संसार को आर्थिक सकट में ऐसा डाला है कि जो कुछ न हो जाय वह थोड़ा है। स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को रोकने के लिए संसार का पुनः आर्थिक निर्माण करना और भावी महायुद्ध को रोकना सबसे ज़रूरी और उपयोगी है।

उन दिनों लड़कियों की दशा बड़ी दयनीय थी। वे बदक़िस्मत युवतियाँ रात-दिन घरों में बन्द रक्खी जातीं और प्रतिदिन ज्यादा से ज्यादा पैदा करने के लिए मजबूर की जातीं। न उनकी कोई आवाज थी, और न उनकी कहीं सुनवाई थी। निर्लज्ज सौदागर बड़ी बेरहमी के साथ मनमाने तौर से उनके यौवन और सौन्दर्य की बिक्री करके फलते-फूलते थे। युवतियों के शरीर ही उनकी दूकान थी, उनके आफ़िस थे, जो विकृत होते ही छोड़ दिये जाते, हटा दिये जाते और उनके स्थान पर दूसरे नये और अधिक सुन्दर कलेवर आ विराजते। लड़कियों की आमदनी और उनका सभी कुछ ले लिया जाता था। यहाँ तक कि यदि कोई अमीर आदमी उसके सहवास से खुश होकर उसे अँगूठी या नोट निजी तौर पर दे जाता, यानी फ़ीस के अलावा जो कुछ इनाम-इक़राम दे जाता, वह भी दूसरे दिन सुबह होते ही नंगाझोरी लेकर छीन झपट लिया जाता। लड़कियों को केवल भोजन और कपड़ा मिलता, इसके अलावा जो पैसे दिये जाते उनका हिसाब क़र्ज़ में लिख लिया जाता। जब ये युवतियाँ बीमार पड़तीं तो दवादारू करना तो दूर रहा, वे नर राक्षस उन्हें रातोंरात घर से बाहर निकाल देते और कहीं सौ पचास मील की दूरी पर भीख माँग कर पेट भरने के लिए छोड़ आते। सरकार ने इस प्रथा के विरुद्ध सन् १९१३ में क़ानून बनाया था, पर सन् १९२५ से पहले वह कठोरता-पूर्वक काम में न लाया जा सका। इससे पहले क्यूबा की सरकार

को वेश्याओं से टैक्स में बड़ी आमदनी होती थी, पर बाद में उसने वेश्या-वृत्ति का पैसा लेना बन्द कर दिया।

सन् १९२५ के बाद से तो सरकार ने अखबारों, किताबों, नोटिसों और क़ानून के ज़रिये जनता को जगाया, दलालों को ढूँढ़ ढूँढ़ कर देश से निकाला और विदेशी-वेश्याओं का आना एकदम रोक दिया। पुलिस को अधिकार दे दिये गये कि वह वेश्यालयों में घुस घुस कर कमसिन लड़कियों को निकालें। इसके आवरण में क्यूबा को सरकार ने वेश्याओं को ऐसा सताया कि उनका अधिकांश समुदाय भाग कर मैक्सिको चला गया। जहाँ पहले वेश्याओं के मुहल्ले थे वहाँ सन् १९२६ में एक भी वेश्या नज़र न आती थी।

जाँच करने-वाले क्यूबा की अनेक वेश्याओं से भी मिले और उनके दुख-दर्द पूछे। इस पर प्रायः सभी ने पुलिस की सख्ती का और आमदनी न होने का रोना रोया।

क्यूबा की लड़कियों के बिक्री के लिए बाहर ले जाने का हाल बहुत कम, या नहीं के बराबर मिला। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि क्यूबा की सरकार के प्रयत्न से वहाँ का यह घृणित व्यापार बिल्कुल बन्द हो गया।

१०—जैकोस्लोवाकिया

सन् १९२३ में अकेले प्रेग (Prague) नामक शहर में क़रीब २५०० वेश्यायें थीं। सन् १९२४ में वे बढ़कर ४२०८ हो गई। इसके अलावा हजारों ऐसी युवतियाँ इस व्यापार में लग रही थीं जिनका नाम सरकारी रजिस्टर में दर्ज नहीं था। सन् १९२२ में जबसे लाइसेन्सशुदा मकान तोड़े गये तबसे सड़कों पर घूम कर ग्राहक ढूँढ़ने की प्रथा जोरों से चल पड़ी। जैकोस्लोवाकिया में ग़रीबी बहुत है। इस पर भी पाश्चात्य सभ्यता के जोर शोर के कारण लोगों का खर्च काफ़ी बढ़ गया है। साबुन और तेल-सेंट के लिए पैसा चाहिए, बाल कटाने, कंघा, शीशा और पाउडर के लिए पैसा चाहिए, खाने-पीने और रेशमी मोजों, जूतों और फ्राकों के लिए पैसा चाहिए, पर पैसा आने का रास्ता बहुत तङ्ग है, क्योंकि उस देश में खेती-बारी या व्यापार की ऐसी स्थिति नहीं है कि वहाँ के बासिन्दों का पालन इन तमाम खर्चों के होते हुए भी शान्ति और सुविधा के साथ हो सके।

कई लड़कियों ने बतलाया कि हमें रोज आठ-आठ घंटे सड़कों पर घूमना पड़ता है। हम थक जाती हैं, पसीने पसीने हो जाती हैं, पर इस आशा से मुहल्ले मुहल्ले के चक्कर काटती रहती हैं कि शायद कहीं कोई ऐसा मनचला मिल जाय जो हमारे शरीर का उपभोग करके कुछ पैसे दे सके। यहाँ इतने पर भी आमदनी

इतनी कम होती है कि गुज़ारा नहीं चलता, अतएव लड़कियों के दलालों से उधार ले लेकर काम चलाना पड़ता है।

हाँ, जो लड़कियाँ छोटी उम्र की हैं, अर्थात् जो १६, १७ साल की हैं, और बहुत ख़ूबसूरत हैं उनके ग्राहक तो यहाँ भी हज़ारों हैं। वे पैसा भी अच्छा कमा लेती हैं, पर वे इनी-गिनी हैं, ज्यादातर स्त्रियाँ भिखारिणी हो रही हैं।

सब वेश्यायें अपने अपने दलालों की निगरानी में रहती हैं। उन्हें वे कमीशन देती हैं और जहाँ जहाँ वे ले जाते हैं, वहीं उनकी पालतू बिल्ली की तरह पीछे पीछे चली जाती हैं। इस पर भी मुसीबत के दिन काटे नहीं कटते। वे सभी स्त्रियाँ ज़िल्लतें और उपहास सहती हैं तथा तरह तरह की तकलीफें उठाती हैं। किस लिए? पैसे के लिए। दुनियाँ में पैसे की कुछ ऐसी तंगी हो गई है कि अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए, इफ़रात से वह हाथ में आ ही नहीं पाता।

प्रेग और जैकोस्लोवाकिया में उसी देश की लड़कियों की इतनी इफ़रात है और वे स्वयं इतनी सुन्दरी हैं कि विदेशी वेश्यायें वहाँ बहुत कम जाती हैं और जो जाती हैं वे आमदनी न होने और आपस की होड़ की सरगरमी से भाग निकलती हैं। वहाँ मुश्किल से आस्ट्रिया और फ्रांस की दो तीन फीसदी लड़कियाँ देखने को मिलती हैं।

यहाँ की लड़कियाँ विदेशों में बड़ी कठिनता से जा पाती हैं। पासपोर्ट के नियम बहुत सख्त रक्खे गये हैं और सारे मामलों

११—मिस्र

लड़कियों के व्यापार की जाँच के सम्बन्ध में लीग आफ़ नेशन्स के अधिकारी मिस्र के प्रायः सभी बड़े बड़े नगरों में गये थे, जिनमें अलेक्जेन्ड्रिया, कैरो और पोर्टसईद के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

सन् १९१४ से, यानी यूरुपीय महायुद्ध के शुरू होने के कुछ दिन बाद ही से, मिस्र ने टर्की से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है और अँगरेजों की मातहती में अपनी सरकार स्थापित की है। जो स्वराज्य की व्यवस्था अँगरेजों ने मिस्र के लिए की है वह बहुत परिमित और संकुचित है। उसी के फल-स्वरूप मिस्र की सरकार के बड़े बड़े ओहदों पर अँगरेज कर्मचारी नियुक्त होते हैं। विदेशियों के मुक़दमे उसी देश के प्रतिनिधि की अदालत में हो सकते हैं। उदाहरण के लिए किसी फरासीसी ने यदि कोई जुर्म किया तो देश की पुलिस उसकी सूचना फ्रेंच राजदूत के पास भेजेगी और केवल उसकी सम्मति या आदेश ही से बदमाश की तलाशी ले सकेगी, या उसके घर पर छापा मार सकेगी। मुक़दमा होने पर दोनों देशों की सरकारों के प्रतिनिधि जूरी होंगे और प्रधान विचार-पति विदेशी राजदूत ही होगा। अतएव कितने ही विदेशी लोग मिस्र में नाम मात्र को अपने फर्म और आफिस

की जाँच व्यक्तिगत रूप से की जाती है। इतने पर भी उस देश के निवासी ही झूठे विवाह करके उन्हें विदेशों में निकाल ले जाते हैं, पर ये बहुत थोड़े हैं। ऐसे लोग जब पकड़े जाते हैं तब जेलखानों में उनके होश दुरुस्त हो जाते हैं। किसी तरह का सन्देह हो जाने पर अधिकारी लड़कियों को देश की सीमा से बाहर नहीं होने देते। इस तरह प्रति वर्ष सैकड़ों लड़कियाँ रोक ली जाती हैं। हाँ, इटली, ट्यूनिस, आस्ट्रिया, हंगरी आदि पड़ोस के देशों में ये सैर करने के बहाने चली जाती हैं या ले जाई जाती हैं। लड़कियों को ले जाने वाले दलाल बड़े तिकड़मी होते हैं जो अधिकारियों की आँखों में धूल झोंक कर उनको ले जाते हैं, उन देशों में महीनों लड़कियों से पैसा पैदा करवाते हैं और मौका मिलने पर झूठा पासपोर्ट तैयार करके सुदूरस्थ विदेशों में चले जाते हैं. जहाँ वे मनमाने ढंग से चैन की बंशी बजाते हैं!

११—मिस्र

लड़कियों के व्यापार की जाँच के सम्बन्ध में लीग आफ़ नेशन्स के अधिकारी मिस्र के प्रायः सभी बड़े बड़े नगरों में गये थे, जिनमें अलेक्ज़ेन्ड्रिया, कैरो और पोर्टसईद के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

सन् १९१४ से, यानी यूरुपीय महायुद्ध के शुरु होने के कुछ दिन बाद ही से, मिस्र ने टर्की से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है और अँगरेज़ों की मातहती में अपनी सरकार स्थापित की है। जो स्वराज्य की व्यवस्था अँगरेज़ों ने मिस्र के लिए की है वह बहुत परिमित और संकुचित है। उसी के फल-स्वरूप मिस्र की सरकार के बड़े बड़े ओहदों पर अँगरेज़ कर्मचारी नियुक्त होते हैं। विदेशियों के मुक़दमे उसी देश के प्रतिनिधि की अदालत में हो सकते हैं। उदाहरण के लिए किसी फरासीसी ने यदि कोई जुर्म किया तो देश की पुलिस उसकी सूचना फ्रेंच राजदूत के पास भेजेगी और केवल उसकी सम्मति या आदेश ही से बदमाश की तलाशी ले सकेगी, या उसके घर पर छापा मार सकेगी। मुक़दमा होने पर दोनों देशों की सरकारों के प्रतिनिधि जूरी होंगे और प्रधान विचार-पति विदेशी राजदूत ही होगा। अतएव कितने ही विदेशी लोग मिस्र में नाम मात्र को अपने फर्म और आफ़िस

खोले बैठे हैं जिनमें वे कहने को तो तम्बाकू या रुई का व्यापार करते हैं, पर वे यूरुपियन मिस्रों के अड्डे हैं। ऐसी घटनाओं के प्रत्यक्ष होने पर पुलिस वाले जब तक राजदूत के पास तक रिपोर्ट पहुँचावें और उसका स्वीकृत-पत्र लें, तब तक ये लोग रफूचकर हो जाते हैं। कितने ही राजदूत अपने देशवासी बदमाशों को मिस्र से निकाल देते हैं पर कितने ही उनका पक्ष करते हैं और पुलिस के इस हस्तक्षेप को नापसंद करते हैं। इसका कारण यह भी कहा जाता है कि उन देशों की सरकारें बदमाशों को अपने देशों में वापस नहीं बुलाना चाहती हैं।

मिस्र में लाइसंस-शुदा मकानों में दो तरह की वेश्यायें हैं।

एक तो वे जो खाना, कपड़ा और मकान लेकर, आमदनी का सारा या आधा भाग मकान-मालिकों को दे देती हैं।

दूसरी वे जो अपनी सारी आमदनी ख़ुद ही रखती हैं और कपड़े, भाड़े और खाने के लिए दलालों के बिल चुकाती हैं।

मिस्र में ऐसे मकान भी बहुत से हैं, जिनमें गुप्त रूप से व्यभिचार होता है। इनमें विवाहित स्त्रियाँ या तो अपने शौहरों की बग़ैर रज़ामन्दी और जानकारी से आती हैं, क्योंकि उनके ठाट-बाट से रहने के ख़र्च बढ़े-चढ़े होते हैं और उनके पति उन्हें काफ़ी ख़र्च करने को नहीं देते, या उनके पति ख़ुद ही उन्हें भेज कर, व्यभिचार द्वारा पैसे पैदा कराते हैं। इन स्थलों में कम उम्र की लड़कियाँ भी आती हैं जिन्हें या तो उनका विचित्र स्वभाव खींच लाता है, या उनके सिद्धान्तहीन माता-पिता स्वयं उन्हें रोज़ी

कमाने को भेज देते हैं। उन कमसिन बालिकाओं का भी इनमें अभाव नहीं है जो महिला-दलालों या व्यापारियों से सम्बन्धित हैं। इन सुन्दरियों का नाम सरकारी रजिस्टर में दर्ज नहीं होता। इन जगहों पर बहुधा पुलिस छापा मारा करती है और अपराधियों से कुछ ले देकर मामले को दफन कर देती है, या घूस न मिलने पर मुक़द्दमा चलवाती है।

इन मकानों में ऐसी ऐसी लड़कियाँ भी मिलीं जिन्होंने नौ-दस साल की अवस्था से ही इस पेशे में पदार्पण किया था। जाँच करने वाले को एक दलाल ऐसी सीरियन लड़की के पास ले गया जो १७ साल की थी। उसने बतलाया कि मैं इसे सीरिया से तब लाया था जब यह १० साल की थी और वहीं उसी उम्र में पहले पहल मैंने इसको व्यभिचार के लिए बाध्य किया था। लड़की ने इस बात को मंजूर किया।

मिस्र में कम उम्र की लड़कियों की, यानी २१ साल से नीचे की बालिकाओं की भरमार है। लोग अपने घरेलू कामों के लिए बहुधा ऐसी ही छोकड़ियों को नौकर रखते हैं जो १५ या १६ साल की होती हैं और फिर उनके साथ स्वयं व्यभिचार करते या दूसरों से करवाते हैं। होटलों के सञ्चालक, जो कम उम्र की लड़कियों को होटलों में नौकर नहीं रख सकते, अपने यहाँ घरों पर उन्हें रखते हैं और उन्हें अपनी महिलाओं की नौकरानियाँ या सखियाँ बतलाते हैं। दरअसल वे उनकी पैदा करने वाली

मिसें हैं जो रोज़ रात के वक्त आगन्तुकों की पर्यंक-शायिनी बनाई जाती हैं।

ज्यादातर फ्रेंच युवतियाँ मिस्र में आती हैं। वे बहुधा बिना पासपोर्ट के, जहाज़-वालों की दया से, लुक छिप कर आती हैं और यहाँ अँधेरी रात में जहाज़-वालों की आँख बचा कर उतर जाती हैं। उतरते वक्त अगर बन्दरगाह की पुलिस की निगाह पड़ गई तब तो वे पकड़ जाती हैं, अन्यथा जेटी से बाहर हो जाने पर वे वेश्या-वृत्ति करने के लिए स्वतंत्र हैं।

मिस्र में सभी देशों की युवतियों और लड़कियों की माँग बहुत है। ख़ास कर जाड़ों के महीनों में, जब देश-देशान्तरों के यात्री आते हैं तब उनकी माँग बहुत बढ़ जाती है। इन महिलाओं में से बहुत सी तो विदेशी वेश्यायें होती हैं और बहुत सी पेट की ज्वाला की सताई हुई हैं। इनका आगमन ज्यादातर अलेक्जेन्ड्रिया के बन्दरगाह से होता है, हालांकि बहुत सी सईद बन्दर होकर भी आती हैं, अथवा "बेरूट" होकर खुश्की के रास्ते प्रवेश करती हैं।

एक दलाल ने बातचीत के दौरान में बतलाया—"मैं फ्रांस से हर मास आठ लड़कियाँ उड़ा लाता हूँ। वे आसानी से चली आती हैं और रास्ते में दिक्क नहीं करतीं। जैसा समझा दो वैसा ये कर देती हैं। फ़ी लड़की के पीछे मेडम मुझे पचास पौंड देती हैं। मैं वहीं से छाँट छाँट कर उम्दा शक्ल सूरत की लड़कियाँ लाता हूँ, जो मालकिन को पसन्द पड़ें और वे उनके ज़रिये ग्राहकों से

खासी बना सकें। मिस्र के व्यापारी भी उनको खरीद लेते हैं। यहाँ उनको सभी देशों के दलाल मिलेंगे जो संसार भर से मिस्र देश के बाजार के लिए युवतियाँ लाते रहते हैं। मिस्र में तुम कुछ भी करो, कोई रोकने-टोकने वाला नहीं है। १५ वर्ष की लड़की को वहाँ आसानी से २१ वर्ष का लिखा दिया जाता है और पुलिस का कोई डर नहीं रहता।"

उक्त दलाल ने बतलाया कि कोई एक पखवारा हुआ कि अमुक जहाज से १८ लड़कियाँ उतरी थीं जिन्हें लाने वालों ने अच्छी दर पर लोकल दलालों के हाथ बेच दिया। ध्यान रहे कि वे सब कमसिन अर्थात् १५ से १८ साल तक की उम्र की युवतियाँ थीं। .

जाँच करने वाले खुद ऐसी दर्जनों लड़कियों से मिले जो १७, १८ साल की थीं और उनमें कोई दो, कोई तीन साल से रजिस्टर्ड थीं। अर्थात् जब वे १५।१६ वर्ष की थीं तभी २१ वर्ष की बतलाकर बालिग लड़कियों के रजिस्टर में लिख दी गई थीं।

कितनी ही नाबालिग लड़कियाँ हर साल एलेक्जेंड्रिया के बन्दरगाह पर रोक ली जाती हैं। सन् १९२३ में ऐसी ७७४ नाबालिग लड़कियाँ रोकी जाकर वापस कर दी गई थीं। फिर भी हजारों की संख्या में वे मिस्र में आती रहती हैं। दलालों ने बतलाया कि फर्स्ट क्लास में आने वाले मुसाफिरों की मिस्र में बिल्कुल जाँच नहीं होती, इसलिए सभी कम उम्र की छोकड़ियों को हम लोग पहले दर्जे में लाते हैं।

झूठे पासपोर्ट और काग़ज़ात बनाने और मिलने के अड्डे मारसेलीज़, कुस्तुन्तुनिया, नेपल्स और एथेन्स में हैं। ऐसी भी अनेक घटनायें हुई हैं जिनमें घूस देकर मिस्र के पासपोर्ट, विदेशों में लड़कियों के पास, डाक के ज़रिये भेज दिये गये और वे उनके सहारे वहाँ चली आईं।

यूरुप से कोई जहाज़ ऐसा नहीं आता जिसमें कम से कम चार छः और आठ-दस सुन्दरियाँ न आती हों। जहाज़ के पहुँचते ही दलालों को समाचार मिलता है कि फलाँ फलाँ दर्जे में इतनी लड़कियाँ और युवतियाँ आ रही हैं। जहाज़ों के दो चार मल्लाह सदा मिले जुले रहते हैं। दलाल लोग रात में बन्दरगाह की पुलिस से मिलते हैं और उनसे मिल कर सारा प्रोग्राम बना कर, रातोंरात उन्हें जहाज़ पर से निकाल ले जाते हैं। पुलिस वालों की मदद के बिना काम नहीं चल पाता, इसीलिए दलाल लोग उन्हें मिलाये रखते हैं। जहाज़ के कर्मचारी, कभी कभी कमसिन लड़कियों को लड़कों के वेष में ले आते हैं, उन्हें अपना लड़का या भतीजा बताते हैं और दृश्य-दर्शन के बहाने मिस्र में उतार देते हैं। कई बार मारसेलीज़ से आये हुए जहाज़ों पर लड़कियाँ लड़कों के वेष में पकड़ी जा चुकी हैं। बाल कटाने से लेकर पोशाक और पहनाव का यूरुपियन फ़ैशन ऐसी स्थिति पर जा पहुँचा है कि बहुत बार लड़के और लड़कियों में बड़े से बड़े होशियार पहचानने वाले भी धोखा खा जाते हैं।

मिस्र से बाहर जाने वाली लड़कियों की संख्या बहुत कम है।

१२—फ्रांस

स्त्रियों और बच्चियों के संसार-व्यापी व्यापार में फ्रांस का विशिष्ट स्थान है। फ्रांसीसी युवतियाँ संसार के कोने कोने में फैली हुई हैं। सुन्दरता और फ़ैशन के क्षेत्र में फ्रांस देश के बड़े नाम हैं। युवतियों के बाल कटाने का रिवाज वहीं से चला था। फरासीसी सुन्दरियों ने ही रहन-सहन के प्राचीन ढंग को पैरों-तले रौंद कर बाब और सिंगिल एथर का फैशन चलाया था। उन्होंने स्त्रियोचित लम्बी पोशाकों को काट-छाँट कर शार्ट्स के रूप में बदल दिया। उन्हींकी कृपा से नित्य नये नये फैशनों का आविष्कार होता रहता है जिसे फिर सारा यूरुप और बाद में अमेरिका और एशिया अपनाता है। फ्रांस की कटाई-सिलाई मशहूर है, तथा धुलाई जगत्-विख्यात है। फ्रांस के इत्रों, तेलों, और सेंटों को सारी दुनियाँ में क़द्र है। थोड़े में इतना कह देना अलम् होगा कि अर्वाचीन संसार में जो कुछ रंग और आकर्षण दीख पड़ता है, एवं पाश्चात्य सभ्यता और फैशन का जो दौर-दौरा है उसका श्रेय बहुत कुछ फ्रांस ही को है। पैरिस, उसी फ्रांस की प्रियतमा राजधानी है। कहते हैं कि पैरिस इस दुनियाँ की इन्द्रपुरी है, अमरावती है और अलकापुरी है। पैरिस से बढ़ कर सौंदर्यमयी नगरी इस पृथ्वी-मण्डल पर दूसरी नहीं है।

अतएव सारे देशों में फ्रांसीसी सुन्दरियों की माँग बहुत है। गत यूरुपीय महायुद्ध में फ्रांस की अपरिमित हानि हुई थी। लाखों फ्रांसीसीयों की जानें रणक्षेत्र पर कुर्बान हुई थीं, जिसके फल-स्वरूप वहाँ वेवा स्त्रियों की संख्या बहुत बढ़ गई। कहते हैं कि फ्रांस में पुरुषों से स्त्रियों की संख्या ग्यारह-बारह लाख ज्यादा है। ये स्त्रियाँ प्रायः सभी अधेड़ या नई उम्र की हैं। कुछ तो वहाँ बालिकाओं की पैदाइश ही ज्यादा है और कुछ जर्मन जंग में, लाखों युवाओं की मृत्यु के कारण, विधवा युवतियों की संख्या ज्यादा हो गई है। फ्रांसीसी महिलाओं के यत्र तत्र सर्वत्र फैले होने का यही मुख्य कारण है।

देश ही में फरासीसी वेश्याओं की संख्या बहुत ज्यादा है। जो वेश्याओं की लिस्ट में दर्ज नहीं हैं ऐसी युवतियों की संख्या भी बीसों हज़ार है।

पैरिस की पुलिस ने वहाँ की वेश्याओं के जो आंकड़े दिये उसका ब्यौरा इस प्रकार है—

सन्	वेश्याओं की संख्या (पैरिस नगर में)
१९१९ ...	... ५३१७
१९२० ...	.. ५२९५
१९२१ ...	... ५१६५
१९२२ ...	... ४८१३
१९२३ ...	... ४३५५

इसके अलावा लाइसेंसशुदा मकान कोई २३६ हैं जिन्हें २१०० वेश्यायें चलाती हैं।

इनके सिवा गाने-बजाने और नाचने के पेशे में लगी हुई हजारों युवतियाँ ऐसी हैं जो वास्तव में वेश्याओं की कोटि की हैं। पैरिस के काफों (होटलों) में इनके झुण्ड के झुण्ड घूमा करते हैं।

इस विषय के विशेषज्ञों का कथन है कि ऐसी ग़ैर रजिस्टर्ड युवतियाँ २५००० (पचीस हजार) से कम नहीं हैं जो पैरिस में घूम फिर कर और यौवन बेच कर रोजी कमाती हैं। इनमें वे सब मिसें शामिल हैं जो दिन में किसी आफिस में टाइप का काम करती हैं, या किसी दूकान पर सौदा बेचने का काम करने के लिए नौकर हैं।

फ्रांस में युवतियों को लाइसेन्सशुदा मकानों में जाने की कोई जरूरत नहीं है। उनके लिए पुलिस में नाम लिखा देना ही काफी है। अठारह साल की कोई भी सुकुमारी पति से झगड़ा होने पर, पृथक होने पर, माँ-बाप का ठीक वर्त्ताव न होने पर, या खर्च के लिए काफी पैसा न मिलने पर, बिना रोक टोक के ख़ुद-ब-ख़ुद जाकर अपना नाम दर्ज करा आती है। हाँ, उसके पति या माँ-बाप को मौक़ा दिया जाता है कि वे लड़की की शिकायत या कठिनाई को दूर कर सकें तो करें, परन्तु वहाँ इन झमेलों में कौन पड़ता है।

अठारह वर्ष से कम उम्र की लड़की की रजिस्ट्री नहीं की जाती। परन्तु अधिकारियों के पास कौन सा ऐसा थरमामीटर है जो १६, १७ या १८ के फ़र्क को बता सकें। फिर भी यदि ऐसे मामले पकड़ लिये जाते हैं तो वे ऐसी अदालतों के सामने पेश किये जाते हैं, जो कम उम्र के बालकों के मुक़द्दमों का फ़ैसला करती हैं, और साथ ही उनके सुधार का इन्तज़ाम भी करती हैं।

पैरिस की पुलिस को इस तरह की घटनायें देखने को मिलीं जिनकी लिस्ट नीचे दी जाती है—

लड़कियों की अवस्था	सन् १९१९	सन् १९२०	सन् १९२१	सन् १९२२	सन् १९२३
१६ से कम	३८	२८	२५	२०	१७
१६ से १८	२८८	२०९	२०८	११५	८२
१८ से २१	२१२३	१४५५	११३२	८२३	९०६
टोटल:—	२४४९	१६८६	१३६५	९५८	१००५

लीग आफ़ नेशन्स के विशेषज्ञों की रिपोर्ट है कि फ्रांस युवतियों और लड़कियों की भरती का मुख्य केन्द्र है।

प्रत्येक देश में, नई नई युवतियों को लाकर वेश्यावृत्ति में दाखिल करना मुख्यतः दलाल का काम है। उन लड़कियों को, जो अपने गाँवों और घरों से दूर, फैक्टरियों में काम करती हैं, या अपने संरक्षकों से दूर रहती हैं, बहकाने में ये लोग बड़े सिद्धहस्त होते हैं। फिर वे इन लोगों को फुसला कर, बड़े बड़े लोभ-लालच

दिखला कर, उन्हें व्यभिचार के मार्ग में डाल देते हैं। यह वह दलदल है जिसमें से लड़कियाँ ज्यों ज्यों निकलने की कोशिश करती हैं त्यों त्यों उनके पैर फँसते जाते हैं।

फ्रांस के वेश्यावृत्ति के दलाल सबसे ज्यादा उस्ताद होते हैं। ये लोग अपने अड्डे छोटे छोटे काफ़ों में जमाये रहते हैं। एक दलाल ने बतलाया कि "शाम के वक्त काम से छुट्टी होते ही, सारी तितलियाँ काफ़ी पीने, और आइस क्रीम खाकर तरोताजा होने के लिए इन्हीं काफ़ों में आती हैं। उम्दा से उम्दा माल इन्हीं जगहों में मिलते हैं। यहीं से मैं अपने लिए एक रूप की रेखा उड़ा ले गया था, जो फूल की तरह कोमल है, चाँदनी की तरह उज्ज्वल है और सेब के रंग सी गुलाबी, खूबसूरत है। ये लड़कियाँ बिल्कुल होशियार नहीं होतीं, बल्कि बड़ी भोली होती हैं। इनको बहका लेना और ख़ुश करना बड़ा आसान काम है। ये लोग ज्यादातर कहीं न कहीं दिन में काम करती हैं। इनमें बहुतों के चाहने वाले भी हैं, जो उन्हें जरूरत के सामान खरीद देते हैं, ये वेश्यायें नहीं होतीं, पर जवानी की उमंग और मुहब्बत की दीवानी होती हैं। इनमें से अधिकांश नजदीक के देहातों से रोजी कमाने आई हैं। वह देखो, जो गुलाब के फूल सी खिली हुई नवेली उधर बैठी है वह अभी परसों ग्राम्य जीवन से निकल कर आई है। उसके मुखड़े पर शहर के जीवन की एक रेखा भी नहीं पड़ी, उसे फँसाना कितना आसान है......!

......बाद में मालूम हुआ कि एक सप्ताह भी न बीतने पाया

कि दलाल ने उसे फँसा लिया। एक ख़ूबसूरत जवान ने, जो उन्हीं के दल का था, उससे दोस्ती पैदा की, नाश्ते के पैसे दिये और चार पाँच पौंड ख़र्च कर फ़ैशन के सामान ख़रीद दिये। उसीने उसे श्रीहीन कर दिया। उसका उठता हुआ यौवन और सौंदर्य्य लूट कर महीने भर में उस बदमाश ने, उस भोली-भाली लड़की को पूरी तरह अपने चंगुल में फाँस लिया और एक दिन गिरजे में जाकर झूठ मूठ उसके साथ विवाह कर लिया। लड़की समझती थी कि ऐसे सुन्दर नौजवान के साथ उसकी उमंगें पूरी होंगी और उसका जीवन सुनहला हो जायगा। हनीमून मनाने के बहाने उस शैतान ने उस बालिका को यात्रा करवाई और घूमते-घूमते मैक्सिको पहुँचा। जब लड़की पर तरह तरह के अत्याचार और बलात्कार होने लगे तब उसने असली मामला समझा। परन्तु बहुत देर हो चुकी थी, सब कुछ नष्ट हो चुका था, घर-द्वार और बन्धु-बान्धव हज़ारों मील की दूरी पर छूट चुके थे। वहाँ परदेश में उसकी सुनने वाला कौन था? रेस का सीज़न चल रहा था, अमेरिकन युवक आ-आ कर उसकी ख़ूबसूरती पर मरते थे और बहुत पैसा दे जाते थे। पहले ही साल उस बदमाश दलाल ने बेबस और बेकस युवती का शरीर बेच बेच कर आठ-नौ हज़ार रुपये कमाये। लड़की ने समझ लिया कि अब इस जीवन से छुटकारा नहीं मिलने का, अतएव उसने विरोध करना भी छोड़ दिया······!"

फ़्रांस में, देशी और विदेशी हज़ारों वेश्याओं के दलाल हैं।

पुलिस उनका कुछ बिगाड़ नहीं पाती, क्योंकि देश का क़ानून बड़ा संकुचित है।

फ्रांस की सरकार का कहना है कि हमारे यहाँ से नाबालिग लड़कियाँ बहुत कम भगाई जाती हैं, पर कमीशन ने जो कुछ जाँच की उससे यही पता चलता है कि १६ से २० वर्ष तक की युवतियों पर ही दलालों का विशेष दाँत रहता है और उन्हींको बाहर ले जाने की तादाद बहुत ज्यादा है।

जो लोग औरतों को उड़ाने के काम में लगे हुए हैं उनकी उम्र २५ से ४५ साल तक की होती है। प्रायः वे लोग देखने में सुन्दर और स्वस्थ होते हैं।

क्यूबा, मैक्सिको, पनामा, ब्रेजिल, उरुग्वे, अरजेन्टाइन, स्पेन और मिस्र में फ्रेंच स्त्रियाँ बहुत जाती हैं। ये लोग ज्यादातर स्पेन देश के बन्दरगाहों से चढ़ती हैं। बात यह है कि प्रत्येक देश के बन्दरगाहों पर बाहर जानेवाली युवतियों की कड़ी जाँच होती है, परन्तु स्पेन के बन्दरगाहों पर इतनी कठिनता नहीं होती।

झूठे पासपोर्ट बनाने का काम फ्रांस में बहुत होता है। मारसेलीज की पुलिस ने अनेक बार ऐसे कई गिरोहों को पकड़ा है जिनके पास सादे पासपोर्टों की सैकड़ों प्रतिलिपियाँ मिली हैं।

फ्रांस में बाहरी मुल्कों से बहुत ही कम स्त्रियाँ लाई जाती हैं। हाँ, अमेरिका जानेवाली यूरोपियन देशों की स्त्रियाँ फ्रांस की

भूमि पर होकर गुजरती जरूर हैं। कहते हैं कि बाहरी युवतियाँ फ्रांस में पाँच फ़ीसदी से भी कम हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि फ्रांसीसी स्त्रियाँ स्वयं ही काफ़ी सस्ती हैं और साथ ही इतनी सुन्दर, फैशनेबिल और आकर्षक हैं कि दूसरी महिलाएँ उनके रूप, गुण और कम क़ीमत के सामने टिक ही नहीं पातीं। सच बात तो यह है कि लोग कुछ ज्यादा खर्च करके भी फ्रेंच युवतियों के पास ही जाना पसंद करते हैं।

१३—अलजीरिया

अलजीरिया में लाइसेंसशुदा मकानों की प्रथा है। इनकी डाक्टरी जाँच भी होती है। जाँच करनेवाले ऐसे सोलह मकानों में गये थे। इनके अलावा अरब लोगों के मुहल्ले में सैकड़ों ऐसी कोठरियाँ हैं जिनमें विना लाइसेंस के वेश्यालय चल रहे हैं।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार २०० ऐसी रजिस्टर्ड वेश्यायें हैं जो लाइसेन्सशुदा मकानों में हैं और कोई ५८० ऐसी हैं जो मकानों के अलावा अपना पेशा चलाती हैं। इनमें ४१ वेश्यायें स्पेन और इटली की, और बाक़ी देशी हैं। अलजीरिया फ्रांस का उपनिवेश है, अतएव फ्रेंच वेश्यायें वहाँ कसरत से हैं।

जो लड़कियाँ यह तस्लीम करती हैं कि उनकी अवस्था २१ वर्ष से कम की है, वे लाइसेन्स-हाउसों में घुसने नहीं दी जातीं। उस दुनियाँ के लोग बतलाते हैं कि हमारे यहाँ इक्कीस वर्ष से कम उम्र की कितनी ही लड़कियाँ हैं। क़रीब ५०० ऐसी लड़कियाँ और युवतियाँ इस व्यापार में लगी हुई हैं जो न तो वेश्यायें हैं और न पेशेवर व्यभिचारिणी हैं, पर वैसी महिलाएँ हैं जो प्रेम के लिए, तफ़रीह के लिए, या पैसे की तंगी के पीछे कभी कभी, यानी हफ़्ते में एक-दो बार आजाया करती हैं।

एक महिला ने, जो एक मकान चला रही थी, जाँच-कमेटी

के मेंबरों को बतलाया कि मेरे यहाँ दो कमसिन लड़कियाँ पोलैंड की आई हैं। एक महीना हुआ तब वे आई थीं। उनकी अवस्था सत्रह-अठारह वर्ष से ज़्यादा नहीं है। उनके पासपोर्टों में उम्र २१ और २२ वर्ष की दर्ज है। यह कहकर वह उन दोनों को मेम्बरों के सामने ले आई और बोली कि तुम ख़ुद देख लो कि ये कमसिन हैं या नहीं। वह समझ रही थी कि मेम्बर लोग वेश्यागामी हैं और किसी अच्छी सी युवती की फिराक में आये हैं।

ऐसे ही एक दूसरे मकान में जाँच-कमेटी के मेम्बरों ने १७ साल की ऐसी लड़कियाँ देखीं जिनकी उम्र २४ और २८ वर्ष तक दर्ज थी। चूँकि नवयुवतियों की माँग बहुत रहती है अतः अमीर लोग उनकी आर्थिक सहायता करते रहते हैं और चाँदी के जूते से उन लड़कियों की उम्र २२, २४ और २५ वर्ष की लिखा लेते हैं, जो वास्तव में नाबालिग़ होती हैं।

अलजीरिया के अधिकारियों से यह भी मालूम हुआ कि स्थानीय लड़कियों को वे लोग १४ साल की अवस्था ही से वेश्याओं के रजिस्टर में दर्ज करने को बाध्य होते हैं, क्योंकि इसी अवस्था से वहाँ की लड़कियाँ कुकर्मों में प्रवृत्त होने लगती हैं और जब तक वे रजिस्टर में दर्ज न हों तब तक उनका डाक्टरी इम्तहान होने में कठिनाई रहती है। ऐसी लड़कियों को हरे कार्ड दिये जाते हैं, परन्तु यदि वे आगे चल कर पेशेवर बन जाती हैं तो हरे कार्ड वापस लेकर, लाल कार्ड दे दिये जाते हैं, जो पेशेवर

वेश्या होने के सुबूत हैं। हरे कार्ड विदेशों से आई हुई किसी स्त्री को नहीं दिये जाते।

अलजीरिया में, अलजियर्स की सड़कों पर दिन दहाड़े देशी और विदेशी कमसिन सुन्दरियाँ घूमती रहती हैं और ग्राहकों को फँसाती हैं। उनके दलाल और रखवाले भी घूम-फिर कर उनके काम में मदद देते रहते हैं। देखा गया कि दिन के ग्यारह बजे से रात के बारह बजे तक इन लोगों के कारनामे बन्द नहीं होते। एक अनुभवी दलाल का बयान है—

"यहाँ पर अरबी, तुर्की तथा अलजीरिया की बहुत अच्छी अच्छी लड़कियाँ मिलती हैं—और वे बाहर जाने को ख़ुशी से तैयार हो जाती हैं। इनमें मैंने एक से एक ख़ूबसूरत सुन्दरियाँ देखी हैं जो किसी अंश में फ्रांस की सुन्दरियों से कम नहीं। कई तो ऐसी परियों सी हैं कि फ्रांस जैसे परिस्तान में जाकर भी अपनी धाक जमा लेती हैं।"

अलजीरिया में विदेशी युवतियों की माँग अस्थायी होती है, क्योंकि केवल जाड़ों के महीनों में (दिसम्बर से फरवरी तक) बाहरी देशों के यात्री आते हैं। इस अस्थायी माँग को पूरा करने के लिए फ्रांस वालों ने ही अपने काम खोल रक्खे हैं, जो पेरिस वगैरह से अपनी युवतियाँ लाकर क्षणिक माँग को पूरा कर देते हैं और फिर फ्रांस को वापस चले जाते हैं। कहने का मतलब यह है कि वे व्यापारी केवल सीजन पर अपनी दूकानों के ताले खोलते हैं।

१४—ट्यूनिस (Tunis)

ट्यूनिस फ्रांस देश के अधीन है। वहाँ की आबादी ३००,००० है जिसमें १६०,००० अरब, ४०,००० इटालियन, ३०,००० फ्रेंच, १०,००० माल्टा-निवासी और ६०,००० यहूदी हैं। जाड़े के मौसम में अमीर यात्री काफी तादाद में यहाँ आते हैं।

सरकारी आँकड़ों के अनुसार ट्यूनिस में ११५ यूरोपीयन वेश्यायें हैं जिनमें ९७ फ्रेंच, १४ इटालियन, २ बेल्जियन, १ स्विस, और १ माल्टा की है। अधिकारियों ने बतलाया कि यहाँ पर इस सम्बन्ध में क़ानून की कड़ाई न होने से बहुत-सी ग़ैर पेशेवर मिसें भी यही काम करती हैं। अन्दाज़ यह है कि ५०० से ज़्यादा ऐसी मिसें होटलों, काफ़ों और प्राइवेट मकानों में रहती हैं। एक दलाल का बयान है—

"हम लोग एक ऐसे मकान में गये जिसकी सञ्चालिका एक फरासीसी महिला थी। उससे हमने पूछा कि क्या वह एक अठारह वर्ष की स्पेनी लड़की को रख लेगी। वह बोली कि मेरे यहाँ इस वक्त १० लड़कियाँ हैं, जो सभी २० वर्ष से कम उम्र की हैं। अगर तुम्हारी लड़की देखने में मनोहर होगी तो जगह न होते हुए भी मैं उसे ले लूँगी।" हमने पूछा—"क़ानून तो २१ साल की लड़की रखने का है ?"

वह बोली—"उसकी तुम्हें क्या परवा है, मैं ख़ुद सब ठीक

कर लूँगी। यही काम करते करते मैं बूढ़ी हो गई और क्या बरस दो बरस की छुटाई-बड़ाई में ठीक नहीं कर सकती ? लड़की को एक महीने का पेशगी भाड़ा देना होगा। मेरे रेट २५ से ५० फ्रैंक रोजाना हैं। जैसा कमरा लेगी, वैसा भाड़ा लगेगा। इसके अलावा बिजली, आग और फुटकर खर्च अलग लगेगा। शनिवार, इतवार और त्यौहारों तथा छुट्टियों के दिन उसे छुट्टी नहीं मिलेगी, वैसे हफ़्ते में एक बार किसी दूसरे रोज़ उसे छुट्टी दी जायगी। और हाँ, हफ़्ते में एक बार डाक्टरी मुआयना होगा जिसकी क़ीमत १० फ्रैंक भी उसीको देनी होगी। मेरे पास उम्र के सर्टीफ़िकेट अनेक हैं, उसका कुछ भी डर न करो, और उस छोकड़ी को मेरे पास ले आओ।"

यहाँ पर ऐसी घटनायें भी देखने में आईं कि लड़कियों के माँ-बाप उनसे व्यभिचार करवाते थे और उसी रोज़ी पर गुज़र करते थे।

अरब की लड़कियों की क़ौमी मुमानियत है कि वे इस देश के निवासी के अलावा किसी विदेशी से व्यभिचार न करें। यदि वे किसी यूरुपियन के साथ पकड़ी जाती हैं तो उनकी दुर्दशा की जाती है और पीटी भी जाती हैं।

यहाँ पर अरब की और यूरुपियन मुल्कों की वेश्यायें अलग अलग रहती हैं। दोनों के दलाल और व्यापारी यद्यपि जुदे जुदे नहीं हैं, परन्तु वे इन प्रचलित प्रथाओं पर ध्यान ज़रूर रखते हैं।

१५—जर्मनी

जर्मनी की राजधानी बर्लिन में लाइसेन्सशुदा मकान नहीं हैं, लेकिन हैमबर्ग के समीपवर्त्ती अल्टोना में वेश्याओं की पृथक् बस्ती है। दोनों ही शहरों में वेश्याओं की डाक्टरी होने का नियम है। बर्लिन में लाइसेंस-हाउसों के न होने पर भी ऐसे फ्लैटों की कमी नहीं है जहाँ पर्याप्त मात्रा में दुराचार होता है। यहाँ फ्लैट मकानों के खण्डों को कहते हैं, एक एक फ्लैट में दो से लेकर चार युवतियाँ तक रहती हैं। उस मकान मालकिन को, जिसने लड़कियों के नाम अपनी जगह का स्थायी भाड़ा लिखा होता है, लड़कियों की आमदनी का ५० फ़ीसदी, यानी आधा भाग मिलता है। यह मालकिन शायद ही कभी इन जगहों में स्वयं आती है। युवतियाँ ढीले-ढाले आकर्षक वस्त्र पहने खिड़कियों पर डटी रहती हैं और नीचे निकलने-वालों को तरह तरह के आकर्षणों और इशारों से ऊपर बुलाने की चेष्टा करती हैं। कुछ लड़कियों के बँधे हुए ग्राहक हैं, और कुछ दलालों पर निर्भर रहती हैं। ये स्थान आम तौर से रात को ११ बजे से सुबह ७ बजे तक चालू रहते हैं, पर इन घंटों के अलावा भी जाने वाले तिकड़मों से जा सकते हैं।

अल्टोना में जो ब्लाक बने हैं, प्रायः दिन में उनके फाटक बंद रहा करते हैं।

किसी भी विदेशिन को इनमें आ सकने की इजाज़त नहीं है। यहाँ सभी जर्मन और आस्ट्रियन स्त्रियाँ हैं। उनमें से कोई भी २५ बरस से कम उम्र की नहीं प्रतीत होतीं।

पुराने हैम्बर्ग में ऐसे मकानों की लाइनें की लाइनें हैं जिनमें कई कई लड़कियाँ रहती हैं। ये लड़कियाँ बहुधा खिड़कियों और दरवाजों पर भी बैठी हुई मिलती हैं।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार बर्लिन में कोई ६००० पेशेवर और कोई १२००० ग़ैर पेशेवर मिसें हैं। हैंमबर्ग में रजिस्टर्ड वेश्यायें २२०० हैं।

जर्मनी में अदालत और माँ-बाप के मना करने पर भी यदि लड़कियाँ वेश्यावृत्ति का पेशा करना चाहती हैं तो २१ साल से कम उम्र की लड़कियों को भी पास मिल जाते हैं। प्रायः वे सुधरने के लिए वहाँ के रिफ़ारमेटरी स्कूलों में भेज दी जाती हैं।

परन्तु इससे क्या, २१ साल से कम उम्र की व्यभिचारिणी युवतियाँ वहाँ घर घर हैं। घर घर से मतलब उन मकानों से है जहाँ ये काम होते हैं। प्राइवेट मुहल्लों में बहुत सी जगहें ऐसी हैं जिनमें एक एक कमरा भाड़े पर लिये दो दो लड़कियाँ रहती हैं। उनमें से अधिकांश १६ साल की होती हैं और व्यभिचार पर ही गुजर करती हैं। दिन के समय में ही इनका काम हो सकता है, क्योंकि रात में पुलिस की सख्ती बहुत रहती है। रात में ये लोग कारों में चली जाती हैं और अस्थायी रूप से होटलों में कमरा लेकर दोस्तों के साथ रहती हैं। पूछने पर पता चला कि इन सब

के साथ दलाल या लड़के लगे हुए हैं जो ग्राहकों को खोज खोज कर लाने के लिए आमदनी का पंचमांश पाते हैं।

पुराने हैम्बर्ग में एक मुहल्ला ऐसा है जहाँ शनिवार और रविवार को मज़दूरों और सिपाहियों की भीड़ जमा होती है। यहाँ १५-१६ साल की उम्र की सैकड़ों लड़कियाँ आती हैं।

ये लड़कियाँ, पैसा मिलने पर, नंगी, और तरह तरह की व्यभिचार करती हुई तस्वीरें खिंचवाती हैं। ऐसी तस्वीरों को इनके दलाल भी बेचते हैं और ये स्वयं भी ग्राहकों को दिखलाने के लिए अपने पास रखती हैं।

एक दिन रात को जब जाँच-कमेटी के मेम्बर जाँच के सम्बन्ध में घूम रहे थे तब उन्हें एक जर्मन नौजवान मिला। उसने कहा—"चलिए, हम आपको ऐसी जगह ले चलेंगे, जहाँ हूर की परियों का नंगा नाच होता होगा। वहाँ ख़ूब पियेंगे, साथ में नाचेंगे और रात भर चैन से काटेंगे। यह नाच रात को एक बजे शुरू होगा और सुबह पाँच बजे तक समाप्त हो जायगा।"

बात बिल्कुल ठीक थी। वे लोग पहुँचे तब नाच हो रहा था। बड़ा वीभत्स, बड़ा निर्लज्ज और पाप-पूर्ण नज़ारा था! छैले बैठे हुए थे, वाह-वाही के नारे लग रहे थे, शराब और कबाब के दौर चल रहे थे। चुम्बन और आलिंगन में लोग मस्त थे। रह रह कर लोग प्राइवेट कमरों में चले जाते थे और पाँच, दस और पंद्रह मिनट बाद लौटते थे। इससे पहले कामदेव के कमीने कारनामे इस नंगे रूप में शायद ही कहीं देखने में आये थे।

एक बयान पढ़िए—

"एक मेम्बर ने एक नंगी तस्वीर लेने का विचार जाहिर किया तो एक दलाल सैकड़ों प्लेटें लिये हुए हमारे कमरे में आ पहुँचा। मालूम हुआ कि यह शख्स लड़कियों के हाथ कोकीन बेचता है, उनके साथ बैठकर भद्दी तस्वीरें उतरवाता है, दलाली करता है और इस फन में पक्का उस्ताद, पक्का गुण्डा है। उससे लड़कियाँ डरतीं और उसकी बात को शायद ही कभी टालती थीं।"

जर्मनी में बाहर से बहुत कम लड़कियाँ लाई जाती हैं, पर जर्मन कुमारियाँ बाहर कसरत से भेजी जाती हैं, या ले जाई जाती हैं।

पहले तो लोग इन्हें अपने दफ़्तरों में रख लेते हैं, इनसे टाइप और शार्टहैंड का काम लेते हैं, धीरे धीरे उन्हें बिगाड़ कर उनसे अपनी वासना भी पूरी करते हैं और बाद में पैसा पैदा करने के वास्ते विदेशों में ले जाते हैं। इन रोजगारियों के हथकंडे बड़े जबर्दस्त और बहुधा समझ के बाहर होते हैं।

थियेटर, नाटक, सरकस और नाचने-गाने के बहाने ये लोग कम्पनियाँ बनाते हैं। उन पगली, नासमझ युवतियों की आँखें अखबारों के विज्ञापनों को देख कर चकाचौंध हो जाती हैं और कलामय जीवन व्यतीत करने की हवस में इनमें शामिल हो जाती हैं। उनके माँ-बाप देहात में रहते हैं और उनके इस जीवन का हाल सुन सुन कर खुश होते हैं कि हमारी लड़की ने ऐसे अच्छे व्यवसाय में जगह प्राप्त कर ली! उन्हें फिर मासिक मनीआर्डर

से मतलब रह जाता है। लड़कियाँ माँ-बाप से अपनी झूठी उम्र भी दर्ज करा लेती हैं और वे ख़ुशी से दर्ज कर देते हैं।

इटली में जर्मन युवतियाँ बहुत पसन्द की जाती हैं। वे पहले ट्रीस्टी जाती हैं और बाद में दक्षिणी प्रदेश में घूम-फिर कर अच्छी कमाई करती हैं। इटली में उनके साथ व्यवहार भी अच्छा होता है और दोनों सरकारों में दृढ़ मैत्री-सम्बन्ध होने के कारण किसी बात की सख्ती नहीं है। मालूम यहाँ तक हुआ है कि जर्मन युवतियाँ इटली पहुँचने के बाद वहाँ इतनी रम जाती हैं कि वे घर को भूल जाती हैं और जर्मनी लौटने का नाम तक नहीं लेतीं।

१६—इंग्लैंड

इंग्लैंड में लाइसेन्सशुदा मकानों और रजिस्टर्ड वेश्याओं का प्रचलन नहीं है। किसी समय उस देश में वेश्यावृत्ति पर सरकारी प्रतिबन्ध था, पर सन् १८८६ से वह भी उठा दिया गया है।

इंग्लैंड में इस बात की पूरी जानकारी होना नामुमकिन हो गया था कि यहाँ वेश्यावृत्ति में लगी हुई स्त्रियों की तादाद कितनी है और उनमें विदेशिनों की संख्या क्या है। वहाँ वेश्याओं के नियंत्रण या गणना के लिए कोई सरकारी लिखा-पढ़ी नहीं की जाती। इंग्लैंड में देशी और विदेशी सभी महिलाओं के प्रति एक-सा बर्ताव होता है और तब तक अधिकारी-वर्ग का ध्यान उनकी ओर नहीं जाता, जब तक वे अति न करने लगें, सड़कों पर खड़ी होकर ग्राहकों को न बुलावें और सार्वजनिक स्थानों में गड़बड़ी न पैदा करें। हाँ, सन् १९१४ के बाद से इंग्लैंड में दाखिल होनेवाली वेश्याओं के प्रति कड़ाई होने लगी है जिसके फलस्वरूप यहाँ विदेशी वेश्याओं का आना बहुत कम हो गया है।

अन्यान्य बड़े शहरों के समान ही लन्दन के सामने, वेश्याओं की समस्या बड़ी गम्भीर है। यहाँ वेश्यायें सड़कों पर घूमती हैं और कुछ गलियों में, खास कर (West End) वेस्ट एन्ड नामक प्रदेश में, उनकी मौजूदगी, काफी तादाद में, दर्शकों को दिखाई देती है। पुलिस उन्हें तंग नहीं करती और तब तक उनके

मार्ग में विघ्न नहीं डालती, जब तक वे शान्ति भंग करके सार्वजनिक हित के विरुद्ध कोई उपद्रव नहीं खड़ा करतीं। उनकी संख्या बढ़ रही है या घट रही है, यह कहना कठिन है। एक अनुभवी व्यक्ति का कहना है कि लंदन में पेशेवर वेश्याओं की संख्या पहले से कम हो चली है।

प्रायः प्रत्येक देश में लड़कियाँ दलालों की संरक्षता में काम करती हैं। परन्तु इग्लैंड में ऐसी हजारों युवतियाँ और लड़कियाँ हैं जो किसी दलाल से ताल्लुक़ नहीं रखतीं। उसके दो मुख्य कारण हैं। एक तो लन्दन उस विशाल बृटिश साम्राज्य की राजधानी है जहाँ सूर्यास्त ही नहीं होता। कोई ५० करोड़ जनसंख्या वाले देशों पर इंग्लैंड का राज्य है जिनके लाखों आदमी नित्य व्यापार, व्यवसाय, दृश्य-दर्शन, प्रभुओं के दर्शन, पठन-पाठन, और राजनैतिक कार्यों से लन्दन की यात्रा किया करते हैं। अकेले भारत ही से इतने मनचले युवा, अमीरजादे, नवाब और शाहजादे एवं राजा महाराजे प्रति सप्ताह लंदन के तीर्थ-तट की प्रदक्षिणा करने जाते हैं कि वहाँ की युवतियाँ कभी भूखी नहीं मर सकतीं। विजित और विजेता का सम्बन्ध होने के कारण, हिन्दोस्तानियों को लूटने के लिए, वहाँ की युवतियाँ, बीच के मध्यस्थों की जरूरत काहे को रक्खें? इंग्लैंड की गौराङ्ग महिलाओं पर न्यौछावर होने वाले ऐसे हजारों भारतीय युवक अभी जीवित हैं जो उच्च शिक्षा और बैरिस्ट्री के नाम पर उस विदेश में जाकर माँ-बाप की गाढ़ी कमाई का पैसा पानी की तरह बहाते

नहीं शरमाते ! यह ऐसे नवाबजादों, राजाओं, और राजकुमारों की भी कमी नहीं है जो प्रति वर्ष स्वास्थ्य-रक्षा के नाम पर विदेशों में जाकर लाखों रुपया खर्च करते हुए नहीं सकुचाते, हमारा दावा है कि इनमें से अधिकांश ऐसे दुर्बुद्धि होते हैं जो पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में पड़कर, उन ठंडे मुल्कों में फैशन करने, शराब पीने, मांसाहारी बनने और सर्वोपरि गुलाब सी गुलबदनों के गलों में बाँह डाल कर नाचने, गाने और मौजें मारने के लिए जाते हैं। यहाँ की सुन्दरियाँ इन लोगों के तौर-तरीक़ों से इतनी परिचित हो गई हैं और इनके साथ रहने की इतनी अभ्यस्त हो गई हैं कि वे दलालों को बीच में डालना अनावश्यक ही नहीं, प्रत्युत आर्थिक कारणों से हानिकर भी समझती हैं। किसी दिन हम अखबार में पढ़ते हैं कि अमुक मिस्टर ए० को एक फरासीसी युवती की खातिर दस लाख का चेक देना पड़ा, तो किसी दिन पढ़ते हैं कि लन्दन के फ़लाँ होटल से अमुक महाराजा का पाँच लाख का जवाहिरात गायब हो गया। अब तो ऐसी खबरें भी नित्य आने लगी हैं कि वेस्ट एन्ड (लन्दन) की एक मिस रोज़ से एक महाराष्ट्र धनी-मानी विद्यार्थी ने शादी कर ली, फ़लाँ बंगाली भाशा ने इंग्लिश पत्नी कर ली और फ़लाँ पंजाबी लाला ने एक षोडशी से प्रेम की गाँठ बांध ली। विषयान्तर होने के डर से हम अधिक कुछ नहीं कह सकते, पर हाँ, इतना जानते हैं कि यदि हमारा खोया हुआ विवेक वापस आ जाय और हम इन लन्दन और आक्सफोर्ड को छोड़ कर अपने काश्मीर और हिन्दु-

विश्वविद्यालय पर ध्यान देने लगें, तो वहाँ की कुमारियों की दशा अत्यन्त शोचनीय हो जाय और ये भी दलालों को रख कर, विदेशों में जाकर, वृत्ति करने का सहारा ढूँढ़ने लगें। आजकल तो लन्दन ही में हजारों सुन्दरियाँ चन्द घंटे घूम फिर कर कम से कम २० शिलिंग (रु० १३-८-०) रोज़ मज़े में कमा लेती हैं।

चूंकि इंग्लैंड टापू है और उसके चारों ओर समुद्र है, अतएव इस देश में आने का जल-मार्ग के सिवा कोई ख़ुश्की का रास्ता नही है। इंग्लैंड में आने वाले यात्रियों की पूरी जाँच होती है। जो लोग यहाँ बस कर किसी नौकरी या रोज़गार की तलाश में आते हैं उनको तो १ साल से ज्यादा का पास ही नहीं मिलता। इंग्लैंड में बीसों लाख आदमी बेकार हैं, अतएव विदेशी यात्रियों की जाँच होना सर्वथा वाञ्छनीय है। इंग्लैंड, भारत नहीं है, जहाँ का दरवाज़ा देश में करोड़ों आदमियों की बेकारी होते हुए भी, प्रत्येक यूरोपियन के स्वागत के लिए सदा बिना रोक टोक के खुला रहता है। यदि इंग्लैंड में ऐसा हो जाय तो उस देश-वाले पूर्वीय देशों की प्रतिद्वन्द्विता से बेजार होकर भूखों मरने लगें। परन्तु भारत भारत है और इंग्लैंड इंग्लैंड है।

उपर्युक्त वर्णन से पाठकों को यह न समझना चाहिए कि इंग्लैंड में वेश्याओं के दलाल हैं नहीं, वहाँ दलाल हैं ज़रूर, पर उनकी संख्या परिमित है। उन लोगों का विदेशों के दलालों के साथ काफी घनिष्ट सम्बन्ध है।

इंग्लैंड में जब कोई विदेशी नाबालिग़ सुन्दरी, यह पेशा करती हुई पकड़ी जाती है तो बहुधा उसे उसी देश को वापस भेज दिया जाता है जहाँ की वह रहने वाली है और उसके देश की सरकार को तदनुसार सूचना भी दे दी जाती है। इनमें अधिकतर संख्या फ्रेंच पोडशियों की होती है।

इस सम्बन्ध में एक बड़ी विचित्र तिकड़म का पता चला है। व्यापारी लोग विदेशी युवती की शादी किसी बृटिश प्रजा-जन से करा देते हैं। इन लोगों को शादी के फलस्वरूप दस-पन्द्रह पौंड मिलते हैं। शादी होने के बाद पुरुष तो उन पौंडों को पाकेट में डाल कर चलते बनते हैं और स्त्रियाँ बृटिश नागरिक बन कर मनमाना व्यभिचार करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ इंग्लैंड में पाँच फ़ीसदी से ज़्यादा नहीं हैं।

जाँच करने वाले लोग सभी बड़े बड़े शहरों के होटलों, बारों और भोजन-गृहों वग़ैरह में गये। वेश्याओं, प्रेमिकाओं, कुमारियों, विवाहित सुन्दरियों और मिसों के सर्वत्र ठट्ट लगे हुए थे। पुरुषों के साथ घूमने-फिरने, नाचने, चुम्बन और आलिंगन करने तथा अकेले एकान्त स्थलों में दूर सुदूर प्रदेशों की यात्रा करने को, वहाँ लोग बुरा नहीं समझते। ये बातें वहाँ जीवन के आनन्द और कौतूहल-वर्द्धक कामों में शुमार की जाती हैं। लंकाशायर के हज़ारों मिलों में काम करने वाली, लाखों लड़कियाँ शनिवार और रविवार को निकट के बड़े बड़े शहरों की सड़कों पर ग्राहकों को

तलाश में डोलती दीख पड़ती हैं। होटलों में भी अच्छी जान-पहचान पैदा करके ये अच्छी रकम कमाती हैं।

विदेशों में इंग्लैंड की लड़कियों का जाना वहाँ की सरकार पसन्द नहीं करती, अतएव देश में ही उसने सब तरह की सरलतायें और सुविधायें दे रक्खी हैं। क़ानून की कड़ाई और बन्दरगाहों पर अधिकारियों की सख़्ती के मारे अँगरेज़ युवतियाँ—ख़ास कर वे, जो कम उम्र की हैं, विदेशों को बहुत कम जा पाती हैं।

यही कारण है कि दूसरे देशों में वे अँगरेज़ सुन्दरियाँ, जो इस रोजगार में लगी हों, कम मिलती हैं। उनकी कुछ संख्या इटली, मिस्र, और फ्रांस में मिलती है, पर सबसे ज्यादा वे अमेरिका में पाई जाती हैं। वहाँ उनकी माँग भी अच्छी है, और उन्हें आमदनी भी अच्छी होती है। पारस्परिक कौटुम्बिक और राजनैतिक सम्बन्धोंके कारण अँगरेज़ लड़कियों के मार्ग में इंग्लैंड से अमेरिका आने-जाने में कोई विशेष प्रतिबन्ध और देखरेख भी नहीं है। इसी कारण सुना गया है कि अँगरेज़ युवतियों का अमेरिका जाना, आर्थिक, सामाजिक, सार्वजनिक और राजनैतिक कारणों से महत्त्वपूर्ण समझा जाता है और उन्हें वहाँ जाने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन भी दिया जाता है।

दलालों का कहना है कि अँगरेज़ युवतियाँ बहुधा इतनी स्वतंत्र प्रकृति की होती हैं कि उनके साथ किसी तरह भी सौदा

पड़ना मुश्किल हो जाता है। खास कर उन मुल्कों में, जहाँ व्यभिचार अधिक है, वहाँ तो इन्हें भेजना असम्भव है। इसमें कोई शक नहीं कि अँगरेजी सौंदर्य की बड़े बड़े मुल्कों में काफी क़द्र है, पर वे लड़कियाँ इतनी घर-घुस्सू हैं कि थोड़े ही समय में उनका मन बाहर ऊब जाता है और वे किसी न किसी तरह इंग्लैंड को चल देती हैं। यह कहना भी अधिक उपयुक्त होगा कि वे बाहरी व्यापार के मतलब की नहीं, और दुनियाँ के भिन्न भिन्न काम-विज्ञान के मामलों में अनुभव शून्य हैं।

जो सरकस, पार्टियाँ, गायन-मंडलियाँ या नाचने की कम्पनियाँ विदेशों में जाती हैं और जिनमें बालिग़ लड़कियाँ और लड़के होते हैं, उनकी पूरी पूरी जाँच होती है। जब तक ज़िला-मजिस्ट्रेट प्रत्येक व्यक्ति के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी नहीं प्राप्त कर लेता और नाबालिग़ के सरपरस्तों से इजाज़त नहीं ले लेता तब तक पासपोर्ट नहीं मिलता। इन लोगों के पासपोर्टों और अन्यान्य काग़ज़ों की प्रतिलिपियाँ इंग्लैंड के उस राजदूत के पास भेज दी जाती हैं जो उस देश में रहता है जहाँ कि पार्टी जा रही होती है। वह राजदूत उनकी देखरेख रखता है और उनके ठहरने तक की जगह की जाँच करता है। चूंकि ऐसी पार्टियाँ लन्दन से पैरिस बहुत आती जाती रहती हैं, अतः पैरिस में एक अँगरेजी होस्टल ही बन गया है, जहाँ एक पौंड फी सप्ताह के हिसाब से खाने और रहने का कम से कम खर्च लिया जाता है। इस पर भी व्यभिचार तो होता ही है। इन पार्टियों का असली

मतलब और असली पेशा गुप्त रूप में वही रहता है, हाँ नियंत्रण के कारण अँग्रेजी कम्पनियाँ विदेशों में जाकर टूटने से बच जाती हैं और उसके कार्यकर्ता स्त्री-पुरुष वेश्याओं के महल्लों में आर्थिक कठिनाइयों से बैठने को मजबूर नहीं होते।

इंग्लैंड के क़ानून के अनुसार युवतियों और लड़कियों को चकलों में रखने के लिए फँसाना जुर्म है। उनसे रोजी पैदा करना और करवाना भारी अपराध है।

इंग्लैंड में कितनी पेशेवर वेश्यायें हैं, और कितनी मिसें हैं, इसका उल्लेख कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में कहीं न करने का पक्षपात दिखलाया है। लीग के कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में प्रायः सभी बड़े बड़े देशों की पेशेवर और ग़ैर पेशेवर महिलाओं की तख़मीनन संख्या का उल्लेख किया है, पर उसने इंग्लैंड के आँकड़े साफ़ उड़ा दिये हैं। हमारी समझ से, इंग्लैंड में भले हि वेश्याओं की रजिस्ट्री होने का नियम न हो, पर उनकी संख्या फ्रांस की तुलना में अधिक कम नहीं हो सकती। पूर्वीय देशों में, और ख़ास कर अपने देश में, जिसे व्यभिचार कहा जाता है उसकी तादाद यहाँ पर्याप्त है। विदेशी दलाल नहीं, तो देश के दलाल, मेडम्स और लैंडलेडीज़ ही क्या कम हैं, जो युवतियों का यौवन और शरीर बेच कर विदेशियों से ख़ासी रक़में मटकती हैं। उत्तरदायित्त्वपूर्ण आँकड़ों के अभाव में हम इससे ज्यादा कुछ भी कह सकने में असमर्थ हैं।

———

१७–ग्रीस

ग्रीस की परिस्थिति, दरिद्रता के कारण, सदा से शोचनीय थी। यूरूपीय महायुद्ध के बाद उसकी स्थिति और भी भयंकर हो गई।

टर्की और ग्रीस में पुश्तैनी शत्रुता थी। वह शत्रुता अब कमालपाशा के प्रयत्नों से मैत्री के रूप में परिवर्त्तित हो गई है। दोनों देशों की सीमाओं पर अक्सर रणभेरी बजा करती थी। कमालपाशा के नेतृत्व में टर्की की सेनाओं ने ग्रीस की फ़ौजों को बुरी तरह हराया और उन्हें देश की सीमाओं से पीछे बहुत दूर तक खदेड़ दिया। टर्की के एशिया भाग में रहनेवाली ग्रीस की जनता भी मार मार कर भगा दी गई, अतएव महीनों तक टर्की के सभी भागों से लाखों ग्रीक भाग भागकर ग्रीस देश में शरण लेने के लिए आ गये। ग़रीबी, बीमारी और दुर्भाग्य इनका चिरसंगी था। टर्की से आने वालों में अधिकांश संख्या स्त्रियों और बच्चों की थी, क्योंकि पुरुष या तो युद्ध-क्षेत्र पर ही काम आ गये थे, या रास्ते में पकड़े जाकर फाँसी पर लटका दिये गये थे। बहादुर लोग स्त्रियों और बच्चों पर हाथ नहीं लगाया करते, अतः वे जैसे-तैसे देश को वापस लौट आये। न तो इतने मकान थे कि वे उनमें बसाये जा सकते और न देश के पास इतना पैसा

आश्रय के लिए तत्काल नये कैम्प स्थापित किये जा सकते। जब तक इनके लिए कैम्प बने तब तक बहुतेरी युवतियों ने वेश्यावृत्ति अख़्तयार कर ली। क्या करें, मजबूरी थी। जब बच्चे भूखों मर रहे हों, जाड़े के मारे ठिठुर रहे हों और माँ-बाप चुल्लू भर दूध और दो कम्बलों का भी इंतजाम न कर सकें तो बड़े बड़े धीर वीर भी डिग जाते हैं फिर बेचारे साधारण प्राणी किस गिनती में हैं। ये सब लोग देश के कोने कोने में फैल गये, पर उनकी ज्यादा संख्या एथेन्थ में बस गई। दलालों ने बतलाया कि हम लोगों को अपने व्यापार के लिए एथेन्स से बहुत अच्छी अच्छी लड़कियाँ प्राप्त होती हैं। ग़रीबी ही उसका मुख्य कारण है। बहुतेरे माँ-बाप अपनी छोटी उम्र की लड़कियों को कुटुम्ब-निर्वाह के लिए बेचते रहे हैं।

जो स्त्रियाँ टर्की से वापस आई थीं उनमें अनेक वेश्यायें भी थीं। इन वेश्याओं ने दूसरी मुसीबतज़दा युवतियों और कुमारियों को कुमार्ग में ले जाने मे बहुत सहायता दी। इन वेश्याओं ने क्रय-विक्रय के व्यापार को भी काफ़ी मदद पहुँचाई।

यद्यपि ग्रीस में, पहले, वेश्यावृत्ति के नियंत्रण के लिए, सरकारी क़ानून थे और पुलिसवाले उन्हें भली भाँति अमल में लाने लगे थे, पर वह पुनस्संगठन का युग था जिसमें विदेश से लौटी हुई जन-संख्या ने उसका विच्छेद कर दिया, अब, कई वर्षों बाद यहाँ एक कमेटी बनाई गई है जिसके सदस्य ऊँचे शासन और

सरकारी स्वास्थ्य-विभाग के अधिकारी हैं। यह कमेटी वेश्याओं की रजिस्ट्री करती है, किनको सर्टीफिकेट देना चाहिए और किनको नहीं, इसका विचार करती है। लाइसेन्स-शुदा मकानों को रखना चाहिए या एक दम तोड़ देना चाहिए, यह बात कमेटी के सामने विचारने के लिए मौजूद है।

इस कमेटी के बनाये हुए क़ानूनों को पुलिस-विभाग बहुत उत्तमता से कार्य रूप में परिणत करता है। वहाँ के दलाल और वेश्याओं ने भी पुलिस की तारीफ़ की कि इस महकमे का कोई आदमी एक कौड़ी भी घूस नहीं लेता।

कमेटी का विचार है कि उन मिसों को, जो आर्थिक परिस्थिति के कारण विवश होकर इस पाप-व्यापार में पड़ी हैं, निकालकर किन्हीं अच्छे पेशों में लगा दिया जाय। कमेटी-वाले ऐसे व्यवसायों को खोलने की चेष्टा में हैं जिनमें पड़ कर युवतियाँ सम्मानित जीवन बिता सकें।

ग्रीस में रजिस्ट्री करने की उम्र १८ साल रक्खी गई है, लेकिन अधिकारियों ने स्वयं ही बतलाया कि इससे कम उम्र की बालिकाओं को भी लाइसेंस दे दिया जाता है।

एथेन्स में ५८ लाइसेन्स-प्राप्त मकान हैं और पिरास (Piraeus) में वेश्याओं की एक बड़ी सराय है। रजिस्टर में दर्ज ११०२ वेश्यायें हैं जिनमें ५१४ लाइसेन्स-शुदा मकानों में हैं, बाक़ी आज़ाद हैं और उनके बाहर काम करती हैं।

एथेन्स में वेश्याओं की कई श्रेणियाँ हैं। यहाँ उच्च कोटि की वेश्यायें भी हैं जिनके स्वयं मकानात हैं और उनमें वे बड़े ठाट-बाट से अपना व्यापार करती हैं। अधिकतर वेश्यायें निम्न श्रेणी की हैं जो अपने रोजगार के लिए दलालों और मकानों के मालिकों पर निर्भर हैं। वे अपनी आमदनी का आधे से ज्यादा हिस्सा मजबूरन दे देती हैं।

कम उम्र की लड़कियों से लाइसेन्स-प्राप्त मकानों में व्यभिचार कराने की सख्त मुमानियत है। इस तरह के मामले पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं। मुसीबत तो यह है कि कन्याओं के माँ-बाप ही अपनी १४-१५ साल की लड़कियों को आकर बेच जाते हैं। कमीशन के सदस्यों की मौजूदगी में ही एक ऐसी घटना घटी थी। एक पन्द्रह साल की लड़की को उसके बाप ने बहुत सा रुपया लेकर बेच दिया था। वह पकड़ा गया और उसे और खरीददार को कारावास का दंड हुआ। ऐसे बहुतेरे मामले होते रहते हैं जो क़ानून की निगाहों में नहीं आ पाते। ग्रीस के ग़रीब और मध्यम कोटि के लोगों में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि वे अपनी कन्याओं को, खासकर रूपवती कन्याओं को, अच्छा मूल्य लेकर बेच डालते हैं।

महिला-व्यापारी ग्रीस को अपना गढ़ समझते हैं। यहाँ उन्हें और देशों से कम मूल्य में और कम दिक्कत में १८ साल की सैकड़ों लड़कियाँ मिल जाती हैं जिन्हें वे टर्की और मिस्र में या तो

बड़े आदमियों के हाथ बेच देते हैं, अथवा उनसे व्यभिचार करवा के दाम वसूल करते जाते हैं। ग्रीस में १८ साल की लड़कियों को पासपोर्ट मिलने में कोई कठिनाई नहीं होती, हाँ, जो पन्द्रह-सोलह साल की होती हैं, उन्हें बाहर जाने के लिए विशेष कारण बतलाने पड़ते हैं। महिला दलालों ने बतलाया कि ग्रीस में तिजारत करना सबसे आसान काम है और कोई भी यहाँ से जितनी चाहे उतनी लड़कियाँ बाहरी देशों को ले जा सकता है। जब माँ-बाप खुद ही लड़कियों को बेचते और उनको बाहर ले जाने में हर तरह की सहायता देते हैं, तब रोकने वाला कौन है ? इस दशा में बड़े से बड़ा क़ानून इस पाप-व्यापार में संलग्न स्त्री-पुरुषों का बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

१८—हंगरी

हंगरी में भी बेहद ग़रीबी है। यद्यपि यहाँ २१ साल से कम की युवतियों को इस व्यापार में प्रवेश करने की मनाही है, पर जाँच करने वालों ने ऐसी दर्जनों लड़कियों को व्यभिचार में संलग्न पाया है जिनकी अवस्था १८ साल से भी कम है। लाइसेन्सशुदा मकान की एक मैडम ने बतलाया कि "हम लोगों को भयंकर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। हमको मकान-का किराया, लड़को के कपड़े, खाना और तेल-साबुन का बन्दोबस्त करना पड़ता है। बुदापेस्ट की सड़कों पर इतनी सुन्दर कमसिन मिसें घूमती रहती हैं कि उनके मारे हमको ग्राहक ही नहीं मिल पाते। वे लोग हफ़्ते में दो तीन बार निकलती हैं और किसी शाम को दो, और किसी रात को तीन डालर बनाकर सन्तुष्ट हो जाती हैं। वे रुपया, अठन्नी और चवन्नी में भी पुरुषों के साथ जाने में तैयार रहती हैं। हमारे यहाँ दूसरे देशों के अमीर यात्री भी नहीं आते, अतएव यहाँ के दलाल और व्यापारी दूसरे देशों में चले गये हैं, जहाँ वे अच्छी जीविका कमाते हैं!"

जब देश की स्त्रियों का यह हाल है तब यहाँ विदेशों से युवतियाँ कैसे आ सकती हैं।

१६—इटली

इटली में वेश्या बनने की किसी को कोई क़ैद नहीं है। चाहे जिस देश की स्त्री हो, यदि वह २१ या २१ से ऊपर है, तो ख़ुशी से वह इस पेशे में दाखिल हो सकती है। वहाँ हफ़्तेवार ऐसी सब महिलाओं की डाक्टरी देख-रेख होने का नियम है।

ऐसे स्थानों पर शराब, कोकीन आदि नशीली चीज़ों के बेचे जाने की मनाही है। लड़कियों को पैसा दे देकर मक़रूज़ कर देना और फिर उन्हें बहुत काल तक चकले में ठहरा रखना भी जुर्म समझा जाता है। ऐसे कर्ज़ों को सरकार अनुचित और ग़ैर क़ानूनी समझती है।

इटली में लाइसेन्स-प्राप्त मकान कितने हैं, यह कहना कठिन है, लेकिन ३५ मकान फ्लोरेन्स में हैं और २८९ दूसरे नौ शहरों में हैं, जिनमें जाँच करने वाले गये थे। पुलिस की रिपोर्ट है कि इन मकानों से बहुधा कम उम्र की लड़कियाँ प्राप्त होती हैं और ये लोग लड़कियों और युवतियों को बराबर एक जगह से दूसरी जगह हर दूसरे तीसरे महीने भेजते रहते हैं। ऐसे अनेक तार पकड़े गये हैं जिनमें फ्लोरेन्स के दलाल रोम के व्यापारी से नई, शक्ल की सुन्दर, नौजवान लड़की भेजने की दरख़्वास्त करते हैं।

महिला दलालों ने बतलाया है कि "हमारे ग्राहक हर दूसरे तीसरे महीने नया माल चाहते हैं। अतएव व्यापार के हित में

हमको लड़कियाँ बदलनी पड़ती हैं। यदि हम ऐसा न करें तो एक तो हमारे ग्राहक छूट जायँ और दूसरे हमारी आमदनी बहुत कम हो जाय। लड़कियों के आने-जाने में जो कुछ खर्च होता है उसे मँगाने-वाला देता है। जिसके यहाँ से युवती जाती है उसको अमुक प्रतिशत कमीशन बँधा हुआ है। जो माल फ्लोरेन्स के लिए पुराना है, वही रोम के लिए नया है। प्राय: सभी शहरों में हम लोगों की आँखें खुली हुई हैं, या हमारा कोई न कोई भाई इस काम को पूरा करने के लिए स्थायी रूप से मौजूद रहता है। वही स्टेशन या जेटी से उन्हें साथ लेकर, ठिकाने से पहुँचा देता है।"

इस तरह जब युवतियाँ देश के शहरों में घुमाई जा चुकती हैं तब दलाल उन्हें अपने विदेशों के कारखानों में भेज देता है। लीग के प्रयत्न से इटली में स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार का विनाश करने के लिए कई शहरों में शाखायें खोली गई हैं, जिनका हेड आफिस रोम में है।

इटली में १९२४ से पहले फ्रांस तथा सभी देशों की औरतों की माँग ज्यादा थी, पर आज कल जर्मन, आस्ट्रियन, हंगेरियन तथा चैकोस्लोवाकिया की युवतियों को ज्यादा क़दर है। हाँ छोटी उम्र की लड़कियों को लाने की मुमानियत है, अन्यथा पुलिस सम्बन्धी और क़ानूनी कोई दिक्कत नहीं है। जर्मनी की चर्चा में बताया जा चुका है कि ऐसे अनेक एजेन्ट हैं जिनके आफिस हैमबर्ग और रोम में हैं और वे एक देश की युवती को दूसरे देश के आकर्षण बता कर वहाँ भेजा करते हैं। एक जर्मन लड़की ने बतलाया कि

"मैं थोड़े दिनों के लिए आई थी, पर तीन वर्ष हो चुके और कर्ज नहीं चुकता। अगर मैंने एक दिन में १५० लिरा पैदा किये तो सब दे लेकर मेरे पास २५ लिरा से ज्यादा नहीं बचते। ७५ लिरा मालकिन को दे देने पड़ते हैं। २५ पेन्शन के, ५ डाक्टर को और ५ पुलिस को देकर ३५ बचते हैं। कपड़े की धुलाई और तेल-कंघी का खर्च जोड़ा ही नहीं, अतएव बचत पचीस से कम ही समझिए।" सचमुच वे लड़कियाँ अत्याचार की चक्की में घुन की तरह पिसती रहती हैं।

इटली की सरकार बाहर जाने वाली कमसिन युवतियों की बहुत निगरानी रखती है। जो १२ और १८ साल की वीच की उम्र की होती हैं उन्हें तब तक पासपोर्ट देने का नियम ही नहीं है जब तक कि उनका नजदीकी रिश्तेदार उनके साथ न जा रहा हो, या जब तक वे विदेश में अपने माँ-बाप के पास न जा रही हों। दूसरी हालत में माँ-बाप के द्वारा बुलाये जाने के असली पत्र का होना जरूरी है। रास्ते के लिए जब तक कोई सम्मानित इटालियन उनको संरक्षता न ले ले, तब तक उन्हें इटली से बाहर नहीं होने दिया जाता।

थियेटरवालों, तमाशा करने-वालों, और नाचने-गाने की पार्टियों पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। यहाँ इटली के कलाविदों का एक बड़ा संगठन है। उसके सदस्यों को दो वर्ष के लिए कभी भी पासपोर्ट मिल सकता है, जिसका, कमीशन के सदस्यों के

कथनानुसार, बहुत दुरुपयोग होता है। जो फर्स्ट क्लास में सफ़र करते हैं, उनकी जाँच होती ही नहीं, या जाँच के नाम पर तमाशा होता है। वे लोग साथ में प्रायः षोडशी कन्यायें ले जाते हैं और उनके ज़रिये पैसा कमाते हैं। जाली पासपोर्ट भी इटली में बहुत बनते हैं और ऐसे केसों मे प्रायः काम में लाये जाते हैं। इस काम के लिए झूठे और जाली पत्र भी बने हुए रिश्तेदारों से मँगवा लिये जाते हैं।

जब जाँच करने-वाले जेनोआ (Genoa) में थे तब फ़्लोरेन्स के अखबारों में "नाचनेवालियों की माँग" शीर्षक देकर विज्ञापन निकले। ब्यूनास एरीज़ जाने की इच्छुक युवतियाँ ही आवेदनपत्र भेजें, ये उस विज्ञापन के आखिरी शब्द थे। युवतियों से मतलब क्या है, यह युवतियाँ भी ख़ूब समझती हैं और व्यापारी भी। १८ लड़कियों ने अर्ज़ियाँ भेजीं जिनमें अधिकांश की उम्र २१ साल से कम थी। उनके वास्ते जाली जन्मतिथियाँ बनाई गई थीं। उनकी सीटें उसी कम्पनी के जहाज़ों पर रिज़र्व कराई गई थीं जो ऐसे कामों में दिलचस्पी लेती थीं और सिद्धहस्त थीं। चलते समय लड़कियों को देख कर अधिकारियों का सन्देह बढ़ गया। इससे वह पार्टी बन्दरगाह पर रोक रक्खी गई और ब्यूनासएरीज़ के इटालियन कांसल जेनरल से पूछ-ताछ की गई। जाँच करने पर पता चला कि जिस क्लब का नाम उस पार्टी के धूर्त संचालकों ने बतलाया था, वह दुराचारियों और महिला सौदागरों का अड्डा था। अतएव संचालकों पर मुक़दमा

चलाया गया और उन्हें कम उम्र की लड़कियों का व्यापार करने के जुर्म में जेलखाने की सजा दी गई।

यह भी मालूम हुआ कि माल ढोनेवाले जहाजों पर ऐसी लड़कियाँ छिपा कर बहुधा दूर देशों को ले जाई जाती हैं। जहाज के कोई न कोई कर्मचारी मिले रहते हैं और गोदामों में लड़की को छिपा रखते हैं। दूसरे देशों की पुलिस ने इटालियन जहाजों पर कितनी ही ऐसी लड़कियाँ पकड़ी हैं।

इटली की सुन्दरियाँ ज्यादातर मिस्र और ब्रेजिल जाती हैं। व्यापारियों का कथन है कि "इटालियन युवतियों को ले जाना सम्भव है, पर आर्थिक दृष्टि से बहुत हितकर नहीं है। इटली में विदेशी युवतियों की माँग है और हमको आमदनी भी अच्छी होती है, पर विदेशों में इटेलियन महिलाओं की उतनी पूछ नहीं है, जितनी फ्रेंच, आस्ट्रियन और पोल सुन्दरियों की, इस पर भी पासपोर्ट के झंझट और क़ानूनी कठिनाइयों से जी परेशान हो जाता है।"

२०—लैटविया

लैटविया में, सन् १९२३ में लाइसेंसशुदा मकानों को तोड़ दिया गया। अधिकारियों का कहना है कि यहाँ गुप्त रूप से व्यभिचार करने वाली वेश्याओं के चकलों की बहुतायत है, पर उनका काम इतना गुप्त चलता है कि किसी को पता नहीं चल पाता। सोलह साल या इससे ऊपर की उम्र में यहाँ वेश्याओं की रजिस्ट्री हो जाती है। जो वेश्यायें रजिस्टर्ड नहीं हैं, पर यह कार्य करती हैं, उनके लिए लाजमी है कि वे बोर्ड के सामने हाजिर हों जिसमें एक पुलिस इन्सपेक्टर, एक म्यूनिसपल कमिश्नर और एक डाक्टर रहता है। पुलिस-अफसर रजिस्ट्री के लिए वजूहात पेश करता है और बोर्ड निर्णय करता है कि उसको वेश्याओं की रजिस्टर्ड लिस्ट में लिखें या न लिखें। पुलिस का कहना है कि यहाँ गुप्त रूप से व्यभिचार करने वाली वेश्यायें कम से कम ४००० हैं जिनमें विदेशी महिलायें भी शामिल हैं।

यहाँ दलालों की संख्या काफ़ी है, पर उनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। दलालों की स्त्रियाँ (वेश्यायें) उतना नहीं पैदा कर पातीं जितना वे ब्यूनासेरीज इत्यादि जगहों में करती हैं, अतएव ये तम्बाकू और शराब का गुप्त व्यापार कर रुपया पैदा करते हैं। यहाँ के वेश्या-दलालों का कथन है कि लैटविया का रहन-सहन सस्ता होने से हम लोग अपने दूसरे देशों के भाइयों के समान ही बचा लेते हैं।

लैटविया में आने वाले विदेशी यात्री इन बदमाशों के फेर में पड़ने से बचे रहें, इसलिए सरकार ने स्टेशनों और बन्दरगाहों पर स्पेशल पुलिस का बन्दोबस्त कर रक्खा है, जो मुसाफिरों को खतरे से आगाह करती रहती है।

लैटविया में, कितनी ही ऐसी, लीथूनियन, पोल और यहूदी स्त्रियाँ एक ज़माने से रहती हैं। यद्यपि वे विदेशियों में शुमार की जाती हैं, पर उन्हें लैटवियन ही समझना उचित है। उनके और लैटवियन युवतियों के अधिकार बिल्कुल एक से हैं। लैटविया से कोई भी विदेशी वेश्यायें या मिसें निकाली नहीं जातीं।

लैटविया वह केन्द्र है, जहाँ से दक्षिण अमेरिका के लिए जहाज़ पर सवार होने को हज़ारों स्त्रियाँ हैम्बर्ग, एन्टवर्प, राटरडम, और चेरबर्ग जाती हैं। इनमें अनेक यूरुपीय देशों की स्त्रियाँ होती हैं जिनकी वार्षिक संख्या ५००० के क़रीब होती है। लैटविया देश की बहुत कम स्त्रियाँ विदेशों में ले जाई जाती हैं। सन् १९२५ में जिन जिन मुल्कों की युवतियाँ लैटविया होकर, जिन जिन देशों को भेजी गईं उनकी तालिका देखिए—

जिन देशों को भेजी गईं	यहूदी	रूसी	जर्मन	टोटल
अरजेन्टाइन	७७६	७७	२१	८७४
ब्रेज़िल	२२३	२९	१	२५३
उरुग्वे	२५३	२६६	१४	५३३

लैटवियन स्त्रियों के विदेश-गमन के प्रमाण इतने कम हैं कि हम उनकी तालिका देना निरर्थक समझते हैं।

२१—मैक्सिको

मैक्सिको ने सन् १९०४ के शर्त्तनामे पर दस्तख़त न किये थे और न १९१० और १९२१ के समझौते पर ही। लीग आफ़-नेशन्स की जाँच-कमेटी के निर्वाचित सदस्य वहाँ जाकर सरकारी अधिकारियों से मिले, मैक्सिको शहर में जाँच करने के लिए कई सप्ताह ठहरे, देश-विदेश के कन्या-दलालों से यहाँ की असली परिस्थिति के बारे में पूछ-ताछ करते रहे और येन-केन-प्रकारेण हर शहर में जाकर स्त्री और बच्चियों के व्यापार में लगे हुए लोगों से मिल कर परिचय प्राप्त करते रहे, जिसके फल-स्वरूप वे मैक्सिको का कच्चा चिट्ठा सार्वजनिक हित के लिए संसार के समक्ष रख सके।

मैक्सिको शहर में रजिस्टर्ड वेश्याओं की तादाद उस वक़्त २८९० थी जिनकी अवस्था १८ और ५० वर्ष के बीच में थी। ज्यादातर अठारह-बीस साल की युवतियाँ थीं। जो लड़कियाँ १८ साल से कम की अवस्था में दुराचार करती हुई पकड़ी जातीं वे सुधरने के लिए रिफ़ारमेटरी स्कूल में भेज दी जातीं। सरकार उनकी संरक्षक होती और माँ-बाप की संरक्षता क़ानूनन उसी घड़ी से समाप्त हो जाती।

मैक्सिको शहर खास में वेश्याओं के २५० मकान थे॥ इनमें पाँच फर्स्ट क्लास आलीशान महल थे जिनमें शहर की सारी

मशहूर और अमीर वेश्याओं के घर थे। २५ सेकेंड क्लास के मकान थे, जिनमें लड़कियाँ रहती तो नहीं थीं, पर दो चार घंटे के लिए रोज किराये पर ले लेती थीं। ६७ थर्ड क्लास होटल से थे, जिनके मालिकों ने वेश्यावृत्ति कराने के लिए सरकारी लाइसेन्स लिये थे। बाक़ी जगहें बैरकों के समान बनी हुई थीं जिनमें किसी में एक और किसी में दो कमरे थे। अधिकांश विदेशी लड़कियाँ इन्हीं में अपना रोजगार चलाती थीं।

अच्छे मकानों में तीस-पैंतीस लड़कियाँ थीं जिनमें अधिकांश कम उम्र की देशी और स्पेनी छोकड़ियाँ थीं। मैक्सिको में कम उम्र की लड़कियों की माँग सबसे ज्यादा थी। कई मकानों में जाँच-कमेटी के लोग वेष बदल कर गये, उनका हाल सुनिए—

"मकान के दूसरे मंजिल पर एक बड़ा हाल था जो नाचने का कमरा था। एक दूसरे बड़े कमरे में खाना-पीना होता था। इस कमरे के ठीक सामने कई बेड-रूम बने हुए थे जिनमें क़ीमती पलंग पड़े थे, जो रेशमी गुलगुले गद्दों से ढके थे। फ़र्श पर क़ीमती कालीनें बिछी थीं, आमने-सामने बड़े बड़े शीशे टँगे थे। बढ़िया से बढ़िया साबुन की बट्टियाँ, तेल फुलेल और तरह तरह के सेंट अपनी महक से ख़ुशबू उड़ा रहे थे। दूध सी सफ़ेद रोयेंदार तौलियाँ जगह जगह रक्खी हुई थीं। पास ही गुसल-खाना और पाखाना था। हाँ, झल झल करती हुई शैम्पैगनी की बोतलें भी रखी थीं जिनकी एक एक की क़ीमत दस दस डालर थी। बाल रूम के एक कोने में आबनूस का बड़ा बाजा

रक्खा था। वहाँ उस समय ७५ स्त्री-पुरुष थे, जिनमें दो-तीन ज्यादा उम्र की महिलायें थीं, बाकी युवतियाँ थीं। युवतियाँ एक से एक सुन्दर थीं, बूढ़ियाँ उनकी संरक्षक मालकिनें थीं।

आगन्तुकों ने अपनी अपनी पसन्दगी के मुताबिक़ सुन्दरियों को छाँट लिया। युवकों ने अंगूरी शराब ख़रीदी और युवतियों ने कार्क खोलीं। सोडे की बोतलें भी तूफ़ान बरपा करते हुए खुल पड़ीं। शराब की ख़ुशबू ने मस्ती पैदा कर दी। एक हाथ को सुन्दरियों की गोल गोल सुराहीदार गर्दनों में डाल कर, युवकों ने दूसरे हाथ से प्यालियाँ प्रेयसियों के लाल लाल लबों से लगा दीं। परियों के गुलाबी गालों पर सुर्ख़ी चमकने लगी। उन्होंने उठकर, आँखों में आँखें डाल, अपनी रस्म अदा की।...वे युवकों की गोद में बैठ गईं और शराब पिला पिला कर उन्हें मतवाला बनाने लगीं। वे युवतियाँ शराब की जितनी ही बिक्री करतीं, मालकिनों की उतनी ही कृपा-भाजन बनतीं और पैसे भी ज्यादा कमातीं। जब युवक और युवतियाँ सब मस्त हो गये तब नाचने की बारी आई। नाच क्या था, नाच के नाम पर झूम झूम कर आलिंगन और चुम्बन का दौर दौरा था। नाचते नाचते वे लोग शयनागारों में चले जाते। वहाँ से वापस आकर फिर वही शराब का दौर चलता, फिर वही नाचने-गाने का स्वांग होता, और अन्त में ख़ामोशी छा जाती, रात में सोने और आनन्द मनाने के लिए मकान का दरवाज़ा बन्द हो जाता। हम लोगों से एक बूढ़ी ने पूछा कि किस किस हूर की परी को तुमने पसन्द

किया ? हमारी लगातार खामोशी उसे बुरी लगी और हमें अच्छा ग्राहक न समझ कर उसने बाहर का रास्ता दिखला दिया। बाहर निकलते ही हमने देखा कि हाल की बत्तियाँ बुझ गईं और उस रात ७१ युवक युवतियों ने उस स्थान को अपना क्रीड़ा-क्षेत्र बनाया……!"

मैक्सिको में विदेशी युवतियाँ ज्यादातर मैडमों से पृथक् रहती हैं। कारण यह है कि ये मैडमें उनकी आमदनी का बहुत सा अंश नोंच लेती हैं।

दलालों ने बतलाया कि यहाँ कम उम्र की लड़कियों की रजिस्ट्री कराने में कोई कठिनाई नहीं है। स्वास्थ्य-विभाग किसी भी ऐसी लड़की को पास दे देता है जो १८ साल, या इससे ऊपर की उम्र की हो। यदि वह १६ वर्ष की हो, १७ वर्ष की हो और वह उम्र १८ वर्ष की बतला दे तो वे उसकी बात मान कर रजिस्टर में दर्ज कर लेंगे।

जाँच-कमेटी के मेम्बरों ने पूछा—पासपोर्टों में तो अवस्था का उल्लेख होता होगा ? विदेशों से जो कमसिन मिसें आती हैं उनकी उम्र का सही अन्दाज कागजात से लग जाता होगा ?

दलाल ने उत्तर दिया—"यहाँ कागजात देखता कौन है ? मैक्सिको में किसी का पासपोर्ट नहीं देखा जाता। लड़की हेल्थ-आफिसर के पास जाकर जो चाहे सो अपना नाम, उम्र और ठिकाना दर्ज करा देती है। विदेशियों को अपनी राष्ट्रीयता बतानी पड़ती है। अधिकारियों से पूछा तो उन्होंने भी तस्लीम किया कि

यहाँ काग़ज़ात देखने का नियम ही नहीं है। जो कुछ युवती ने बतला दिया वही सही मान कर लिख लिया जाता है।

दलालों के बारे में अफ़सरों ने कहा कि हम उनको पकड़ने की तब तक कोशिश नहीं करते जब तक वे युवतियों से रुपया लेने देने के काम में लगे रहते हैं। पर वे तो ऐसे बदमाश हैं कि लड़ाई-दंगा, शराबख़ोरी और क़त्ल के मुक़दमों में बहुधा फँस कर हमारे सामने आते हैं। जो दलाल केवल कन्या-दलाली में लगे हुए हैं, वे मज़े में हैं, उनको अधिकारी या पुलिसवाले क़तई तंग नहीं करते।

जाँच-कमेटी के मेम्बरों ने लिखा है—"एक दलाल दोस्त, जिसने हम लोगों से बहुत पैसा खाया था और हमारा उसका काफ़ी मेल-जोल हो गया था, एक दिन हमें एक बड़े गुप्त स्थान में ले गया। इस जगह पर दर्जनों फ्रेंच, अमेरिकन, पोल और स्विस लड़कियाँ थीं जो एक से एक रूपवती थीं। उनमें से एक भी १८ साल से ऊपर की उम्र की नहीं थीं। यह जगह वह थी जहाँ केवल वे अमीरज़ादे प्रवेश कर पाते थे जो संस्था के स्थायी ग्राहक थे, समझे बूझे हुए थे और काफ़ी धन व्यय करते थे। पच्चीस युवतियाँ सोफ़ों और आरामकुरसियों पर लेटी हुई अपने रूप का प्रकाश फैला रही थीं। वे हाल ही में भिन्न भिन्न देशों से लाई गई थीं। उन्हें सब तरह का आराम दिया जाता था। अच्छा खाना और बढ़िया कपड़ा देकर उनकी ९० फ़ीसदी से ज्यादा दैनिक आमदनी व्यापारियों और दलालों द्वारा छीन ली जाती

थी। उस जगह का यह नियम था कि साल दो साल से ज्यादा कोई युवती न रक्खी जाती, बाद में वे दूसरी ब्रांचों में भेज दी जातीं। मालूम हुआ कि नया से नया माल यहीं लाया जाता है। मैक्सिको की घुड़दौड़ संसार-प्रसिद्ध है। रेस के सीजन में लख-पती और करोड़पती युवकों का समूह इसी जगह आता है और एक एक युवती पर हजारों डालर न्यौछावर कर जाता है।

अधिकारियों ने बतलाया कि छोटी उम्र की विदेशी लड़कियों पर हमारी बहुत सख्ती है। हम बिना उनके संरक्षक के उन्हें देश में आने नहीं देते। इसका उत्तर देते हुए दलालों के मुखिया ने हमें गुप्त रीति से बतलाया कि "हम चाहें जितनी कमसिन लड़कियाँ फ्रांस से लाते हैं और हमारा कोई कुछ नहीं कर पाता। मैक्सिको में नये क़ानून बने हैं कि कम उम्र के आने वाले जब तक इस देश के सम्मानीय व्यक्तियों से सम्बन्धित न हों तब तक न आने पावें। मैक्सिको के कई अमीर आदमी और कल-कारखाने वाले हमसे मिले हुए हैं। वे धनीमानी और सम्मानित व्यक्ति समझे जाते हैं। उनका नाम ले देने पर फिर कोई नहीं टोकता। लड़कियों को हम अपनी लड़की, बहिन या भतीजी बता देते हैं और हम हीं उनके संरक्षक बन जाते हैं। हम लोग वेष भी बदलते रहते हैं और जुदे जुदे बन्दरगाहों से उतरते चढ़ते हैं। इसलिए अधिकारी हमको पहचान नहीं सकते और यदि कभी धोखा खा गये तो सौ दो-सौ पीसो खर्च देने पर मुक्ति पा जाते हैं। इस तरह यह व्यापार मैक्सिको में बेखटके चलता रहता है।"

मैक्सिको में सभी मुल्कों की सुन्दरियाँ और सभी क़ौमों के दलाल हैं। सभी युवतियाँ किसी न किसी स्त्री दलाल के नियंत्रण में व्यापार करती हैं।

यों तो यह पाप-व्यापार मैक्सिको राज्य में बारहों महीने चलता है, पर रेस-सीजन में ताया जुआना में इसकी हद हो जाती है। दलाल युवतियों को विवाह की झूठी अँगूठियाँ पहनाये रहते हैं और बहुत से उनसे झूठ मूठ ब्याह भी कर लेते हैं। किसी मामूली गिरजे में जाकर, थोड़े से पैसे पादरी को देकर, ब्याह और तलाक़ के काम पाश्चात्य देशों में एक दम आसान हो गये हैं।

जाँच-कमेटी के मेम्बरों को मैक्सिकली में एक अमेरिकन लड़की मिली। उसकी उम्र २४ साल की थी। वह साल्टलेकसिटी से छः मास हुए तब यहाँ आई थी। उसकी सहेलियों ने मैक्सि-कली की तारीफ की थी। यहाँ उसे १०० ग्राहक हर हफ़्ते मिल रहे थे जिनसे प्रत्येक से वह तीन डालर (सात आठ रुपया) पेशगी ले लेती थी। वास्तव में वह सुन्दरी थी। इस प्रगति से वह साल दो साल ही में अपना रूप, यौवन और तन्दुरुस्ती को चौपट कर लेगी, इसका उसे क़तई खयाल नहीं था, क्योंकि उसे भरोसा था कि दो तीन वर्ष में वह आजीवन सुख से बैठ कर खाने के क़ाबिल मालियत पैदा कर लेगी।

दलाल किस आसानी से विदेशी लड़कियों को ले आते हैं, उसका नमूना देखिए—

एक दलाल ने जाँच-कमेटी के मेम्बरों को तीन चार पत्र दिखलाये, उनमें लिखा हुआ था कि हम लोग फलाँ फलाँ जहाज से फलाँ फलाँ वक्त पहुँचेंगे। हमारे साथ में माल होगा, अर्थात् दो-तीन कम उम्र की सुन्दरियाँ होंगी। किसी पत्र में दो, किसी में तीन और किसी में चार सुन्दरियों की तादाद लिखी थी। उस दलाल ने कहा कि मैं अधिकारियों से मिल आया, पचास स्वर्ण मुद्रा देकर सब मामला तय हो गया। अब कोई झंझट न होगा और ये लोग आसानी से उतर आयेंगे। मैक्सिको से बढ़कर, आराम से यह तिजारत करने के लिए दुनिया में और कोई जगह नहीं है, यह कह कर वह हँस पड़ा। मेम्बरों को ताज्जुब हुआ, पर बात बावन तोला पाव रत्ती सही थी, अतएव उन्होंने उसे नोटबुक में दर्ज कर लिया।

मैक्सिको के बड़े बड़े शहरों का यही हाल है। वहाँ न तो कमसिन लड़कियों की रजिस्ट्री कराने की कठिनता है और न, कम उम्र की ग़ैर रजिस्टर्ड मिसों की कमी है। यह ग़रीब देश है, पर अमीर अमेरिका के निकट है, इसलिए पैसे वालों के कारण यहाँ अत्याचार और व्यभिचार अधिक से अधिक मात्रा में होता है। प्रत्येक देश के औरतों के सौदागरों और दलालों ने मुनाफ़े और व्यापारिक सहूलियत के लिए मैक्सिको को सर्वोपरि कहा है।

२२—हालैंड

हालैंड में वेश्याओं के लिए कोई बाक़ायदा प्रतिबन्ध नहीं है। जब तक वे सार्वजनिक स्थानों पर शान्ति भंग न करें, तब तक अधिकारी उनका कुछ नहीं कर सकते। म्यूनिसपल क़ानूनों के अनुसार वेश्यायें सड़कों पर फिर कर, या दरवाजों और खिड़कियों में बैठ कर जनता को नहीं बुला सकतीं। हालैंड की राजधानी राटरडम में २८ सम्मानीय व्यक्तियों की एक समिति है, जो देश के सारे दुराचारों के खिलाफ़ कार्यवाही करती है। हालैंड में सन् १९२५ से ही महिला पुलिस है, जो पुलिस-विभाग की सहायता से कम उम्र की लड़कियों की रक्षा करती है। २१ साल से कम की लड़कियों, या युवकों को हालैंड में नाबालिग समझा जाता है। जो लड़कियाँ इस अवस्था से कम में व्यभिचार करती हैं उन्हें रिफ़ारमेटरी स्कूल में भेज देने का नियम है।

सरकार का कथन है कि हमारे यहाँ सारी म्यूनिसपल कमेटियों को यह अधिकार है कि जो मकान किसी तीसरी पार्टी को वेश्यावृत्ति या व्यभिचार की ख़ातिर दिया हुआ समझा जाय, और पुलिस उसकी ताईद करे, तो वे उसको ज़ब्त कर लें, या उसमें ताला डाल दें।

हालैंड में चार प्रकार के स्थानों में व्यभिचार होता है। (१) उन होटलों में, जहाँ स्त्रियाँ और पुरुष साथ साथ ठहरते हैं। (२)

इन मकानों में जहाँ वेश्यायें अकेली रहती हैं (३) गुप्त व्यभिचार के चकलों में, जहाँ अच्छे अच्छे घरों की सुन्दरियाँ और मिसें भी तफ़रीहन या कभी कभी आमदनी करने आती हैं (४) उन मकानों में, जो मिलने-जुलने या मीटिंग वग़ैरह करने के लिए नियत होते हैं।

जाँच-कमेटी के सदस्य, सभी ख़ास ख़ास शहरों में गये और सभी जगह उन्होंने प्रायः एक सा बन्दोबस्त पाया, जिनमें से एक का हवाला पाठकों की जानकारी के लिए हम नीचे देते हैं—

एक महिला ने बतलाया—"मैंने ४ कमरे भाड़े पर ले रक्खे हैं जिनमें तीन लड़कियाँ स्थायी रूप से बसा रक्खी हैं। रात के समय मेरे यहाँ रोज़ दस-बारह लड़कियाँ आ जाती हैं। वे मेरे ही यहाँ खाना खाती हैं और रात में बारह बजे से पहले लौट जाती हैं। जो पुरुष इनके पास आते हैं वे कमरे का भाड़ा देते हैं। लड़कियाँ मेरी शराब बेचती हैं और नफ़े का ½ हिस्सा पाती हैं। यहाँ, हालैंड में सब बातें पुलिस की देख-रेख में होती हैं। मेरा मकान और मेरे पास-पड़ोस के सारे घर रहने के कमरों के तौर पर पुलिस के रजिस्टर में दर्ज हैं, पर मेरे ही समान सभी इसी पेशे में लगे हुए हैं।"

जाँच-कमेटी के मेम्बरों का कहना है कि हम लोग दूसरे [illegible] और मकानों में भी गये और देखा कि उस महिला का बन्दोबस्त [illegible] है। सभी में तीन तीन और चार चार दस लड़कियाँ हैं [illegible] यही पेशा करवा कर रुपया कमाया जाता है।

एम्सटर्डम में ये लड़कियाँ अधिकतर सबसे नीचे खण्ड में रहती हैं जिससे वे सड़कों पर गुजरने वालों को देख सकें और इशारों से बुला सकें। कहने को तो परदे पड़े रहते हैं, पर पुलिस-वालों की निगाह के हटते ही वे खिड़कियों पर बैठ जाती हैं, या परदों के पीछे से झाँकती हैं, या दरवाज़ों के पीछे से खट-खट की आवाज़ करती रहती हैं।

रात के समय सभी बड़ी बड़ी सड़कों पर उनके झुण्ड के झुण्ड मर्दों की तलाश में घूमते रहते हैं। उनकी पोशाक और तौर-तर्ज़ से कौन कह सकता है कि ये वेश्यायें हैं? विदेशों से आये हुए यात्री लोग उनके चंगुल में आसानी से फँस जाते हैं। ऐसी स्त्रियों की अवस्था २५ से ४० तक पाई गई है।

राटरडम में भी यही हाल है, पर वहाँ एक विशेषता यह है कि शराब की सारी आमदनी मालकिन की जेब में जाती है।

प्रायः इन सभी शहरों में सड़कों पर घूमने-वाली युवतियों की संख्या बहुत ज्यादा है और वे इतनी शोख हैं कि आदमियों को बहुधा अपने साथ चलने के लिए पकड़ लेतीं, और मजबूर कर देती हैं। उनके अच्छे कपड़े और अच्छे चेहरे देखकर बहुत से लोग लाचार होकर उनके साथ हो लेते हैं। इनमें अधिकतर डच, अर्थात् देश ही की युवतियाँ होती हैं, कुछ तादाद जर्मन युवतियों की भी है, पर वे डच के साथ इतनी मिलती जुलती हुई होती हैं और वही भाषा बोलती हैं कि उनका पहचानना असम्भव हो जाता है।

विदेशी स्त्रियों को तब तक हालैंड में ठहरना मना है जब तक कि वे किसी इज्ज़त के रोज़गार में न लगी हुई हों, या किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की ज़मानत न दे सकें। उस पर भी वे नियत काल तक ठहर सकती हैं। जो विदेशिनें लुक-छिप कर आ जाती हैं वे पुलिस की निगाह में पड़ते ही देश-निकाले की सज़ा पाती हैं। हर साल ऐसी सौ-डेढ़-सौ फ्रेंच, जर्मन, आस्ट्रियन या अन्यान्य युवतियाँ हालैंड से बाहर निकाल दी जाती हैं। सरकारी वक्तव्य के अनुसार ये स्त्रियाँ देश में हफ़्ते दो हफ़्ते से ज्यादा कभी नहीं ठहर पाती हैं।

हालैंड की सरकार ने लाइसेंस-शुदा मकानों को अपने यहाँ से बिल्कुल नष्ट कर दिया है। सरकार ने उसके बाद जो वक्तव्य निकाला था उसका मूल इस प्रकार था—

The Government considers that it was the licensed houses which, before they were abolished, were responsible for incoming traffic :—

"In the case of women or girls who, owing to their own natural frivolity or to special circumstances, are easy victims of the traffic, it is the existence of licensed houses which supplies the traffickers and their accomplices with a sure and permanent market for their services.

"As regards the traffic in children, it is proved that, before the abolition of licensed houses, the owners of the latter often found means to procure very young girls from abroad."

"हालैंड की सरकार का ऐसा ख्याल है कि तोड़े जाने से पहले लाइसेंसशुदा मकानों के कारण ही बाहर से युवतियाँ और लड़कियाँ इस देश में व्यापार के लिए लाई जाया करती थीं।

उस दशा में, जबकि स्त्रियाँ या लड़कियाँ, अपनी निज की स्वाभाविक कमजोरी, या मन-चले स्वभाव के कारण, अथवा किन्हीं विशेष परिस्थितियों में पड़ कर आसानी से इस तिजारत का शिकार हो जाती हैं, तब इन लाइसेंसशुदा मकानों की मौजूदगी ही, व्यापारियों और उनके साझीदारों की तिजारत के लिए एक निश्चित और स्थायी बाजार खड़ा कर देती है।

छोटी छोटी लड़कियों के व्यापार के सम्बन्ध में यह साबित हो चुका है कि लाइसेंस-शुदा मकानों के तोड़े जाने से पहले उनके मालिकों को बहुधा विदेशों से बहुत छोटी लड़कियाँ प्राप्त करने के साधन मिल जाते थे।"

लाइसेंसशुदा मकानों के समाप्त होने के बाद इस तिजारत में कमी हुई है और उन लड़कियों और युवतियों को, जो अनिच्छा-पूर्वक उनके अन्दर मनमाने तौर से रक्खी जाती थीं, ज़रा साँस लेने की दम मिली है। एक उदाहरण देखिए—

"एक हालैंडवासी सन् १९२५ में जर्मनी गया और एक १९ साल की जर्मन युवती के साथ व्याह कर लिया। वहाँ से वह उस युवती के साथ हालैंड लौट आया और उसे कई शहरों में वेश्यावृत्ति करने को मजबूर किया। एक साल बाद वह उसे जर्मन सीमा के एक क़स्बे में लेकर पहुँचा। एक दिन पुरुष किसी ग्राहक के पास सौदा तय करने गया हुआ था कि युवती घर से निकल भागी और जर्मन सीमा की पुलिस-चौकी में पहुँच कर शरण ली। वहाँ उसने अपने ऊपर होने वाले ज़ुल्मों का कच्चा चिट्ठा बयान कर दिया। पुरुष जब वापस आया और वहाँ अपनी पत्नी को न पाया तो पता लगाते लगाते वह जर्मन-सीमा में घुस आया, जहाँ पुलिस ने उसे गिरफ़ार कर लिया। उस पर व्यभिचार करवाने, औरतों की तिजारत करने और युवती पर अत्याचार करने का इल्ज़ाम लगाया गया और तीन साल की सख्त सज़ा दी गई। बाद में वह हालैंड की पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। जब एक सज़ा खत्म हो चुकी तब दूसरी चली और उसे काफी तकलीफ़ और जेलखाने की दिक्क़तें सहन करनी पड़ीं।

हालैंड में समुद्र के रास्ते युवतियों का आना बहुत कठिन है, पर वहाँ का सीमा-प्रदेश इतना विस्तृत है कि बेल्जियन और लक्सेमबर्ग की स्त्रियों को रोकना कठिन है।

हालैंड की युवतियों को बाहर जाने के लिए कोई मनाही नहीं है, चाहे वे विवाहित हों, या वेश्यायें। विवाहित पत्नियों को

माँ-बाप, या पति वग़ैरह किसी की स्वीकृति की ज़रूरत नहीं पड़ती। वहाँ पासपोर्ट आसानी से मिल जाते हैं। केवल उन बदमाशों को, जिन्हें पुलिस डाकाजनी या ख़ून के जुर्म के लिए पकड़ना चाहती है, पासपोर्ट नहीं मिलते, या २१ साल से कम उम्र की ऐसी मिसों को जो विवाहित नहीं हैं, पासपोर्ट देने से इनकार कर दिया जाता है। उम्र में वर्ष दो-वर्ष की छोटी होने पर भी, यदि युवती विवाहित है, तो उसे आसानी से पासपोर्ट मिल जाता है। इसलिए जिन्हें बाहर जाना होता है वे किसी डच से गिरजे में जाकर शादी का स्वांग कर लेती हैं और उसे कुछ ले-दे कर, उसके नाम का प्रयोग करती हुई मिसेज़ बन कर बाहर चली जाती हैं।

२३—पनामा

पनामा और पनामा केनाल जोन अलग अलग हैं। पहले में, जिसमें पनामा शहर और कोलोन मुख्य हैं, वेश्यायें, दलाल और महिला तिजारती बहुत हैं। केनाल अर्थात् नहर के दायरे में न तो लाइसेन्स-शुदा मकान हैं और न वेश्यायें हैं।

पनामा में हफ्ते में दो बार उन स्त्रियों की डाक्टरी होती है जिसका व्यय उन्हें एक डालर प्रति बार देना पड़ता है। जो युवतियाँ किसी बीमारी से पीड़ित होती हैं उन्हें डाक्टर फौरन अस्पताल भेज देता है और जब तक वे अच्छी न हो जायँ तब तक वहाँ से उन्हें हटने की इजाजत नहीं देता।

हब्शियों और पनामा-निवासियों की बहुत छोटी छोटी लड़कियाँ भी वेश्यावृत्ति करती पाई जाती हैं। उन हिस्सों में हब्शी स्त्रियों और गोरों के संसर्ग से पैदा हुई लड़कियाँ बड़ी बड़ी खूबसूरत पाई जाती हैं। उनके सुधार का कोई उपाय नहीं है, क्योंकि कोई संस्था और कोई स्कूल, जो गोरों के हैं, उन्हें अपने यहाँ दाखिल करने को तैयार नहीं हैं।

पनामा में चकलों के कमरे दो डालर से चार डालर रोजाना पर उठे हुए हैं। अमेरिका के फौजी या जहाजी लोग जो केनाल जोन में नियुक्त हैं, पनामा शहर में नहीं जाने पाते, अर्थात् स्थायी

सेना-वालों को वेश्याओं के यहाँ जाने की सख्त मुमानियत है, पर वे या अन्य जहाज़ जब अमेरिका लौटते हैं तब कोई सख्ती नहीं रह जाती। जाँच-कमेटी की उपस्थिति में ही एक लड़ाकू जहाज़ बलबोआ में पहुँचा। कमांडर ने सब फौजियों और जहाज़ियों को पूरी छुट्टी दे दी और चकलों में जाने की भी इजाज़त दे दी। फिर तो पनामा की सड़कों पर उस दिन तिल रखने की जगह न रही। सैकड़ों ही फ़ौजी, एक एक मकान में जाते और निकलते दीख पड़ते। कन्या-दलालों ने ऐसे कई झुण्डों की तस्वीरें खींच लीं जिन्हें कमीशन-वालों ने दाम देकर खरीद लिया। वह जहाज़ कोई हफ़्ते भर रुका था। दूसरे ही दिन आस-पास के शहरों से सैकड़ों मिसें और युवतियाँ आगईं जिन्होंने काफ़ी कमाया। मालूम हुआ कि जब जब कोई लड़ाकू जहाज़ पनामा केनाल से गुज़रता है तब तब स्त्रियों की माँग बहुत बढ़ जाती है। औरतों के दलाल पता लगाये रहते हैं कि कब कौन सा जहाज़ गुज़रेगा और तदनुसार पहले ही से काफ़ी लड़कियों को लाकर जुटा रखते हैं। पनामा शहर में स्थायी ६०० वेश्यायें हैं, पर मौक़े पर यहाँ इससे कई गुनी लड़कियाँ इकट्ठी हो जाती हैं, जिनकी संख्या चार हज़ार तक पहुँच जाती है।

अमेरिका का अटलान्टिक, या पैसेफ़िक सागर का जहाज़ी बेड़ा यहाँ साल में चार छः महीने चाँदमारी के लिए ठहरा करता है। जहाज़ों के अफ़सर और इंजीनियर किनारे पर ही रहते हैं। इन मौक़ों पर महिला-व्यापारी बहुत लाभ उठाते हैं और यूरुप के

दूर दूर देशों से, खास कर फ्रांस से, अच्छी अच्छी युवतियाँ लाकर उनकी जरूरत को रफ़ा करते हैं।

जाँच-कमेटी के एक मेम्बर का बयान है—"पनामा में एक थियेटर था। मैं उसके मालिक से मिला। उसने बतलाया कि मेरे यहाँ १८ लड़कियाँ हैं जो सबकी सब गाने-नाचने के साथ ही, व्यभिचार करने में पटु हैं। मैं वैसी कोई लड़की अपने थियेटर में रखता ही नहीं, जो हमारे ग्राहकों को हर तरह से खुश न कर सके। एक रूसी सुन्दरी से उसने मेरी भेंट करवाई जो देखने में २०।२१ साल की जँचती थी। निःसन्देह वह सर्वांग सुन्दर थी। अट्ठारह साल की अवस्था में वह अमेरिका आई थी और वहाँ से दलाल के हाथ पड़ने पर पनामा चली आई। व्यभिचार के साथ ही मकान-मालिक उससे शराब और कोकीन बिकवाता था। लड़की को काफी आमदनी हो जाती थी और उसने पनामा में स्थायी रूप से रहने का निश्चय कर लिया था।"

कुछ लड़कियों ने बतलाया कि कई दलाल पति और पत्नी के वेष में फिरा करते हैं और हम लोगों को बहका कर यहाँ ले आते हैं। वे फिर उनकी सारी आमदनी हड़प जाने की कोशिश करते हैं। जो लड़कियाँ जरा होशियार होती हैं वे पुलिस में रिपोर्ट करने का डर दिखा कर आमदनी बचा लेती हैं। कोई कोई तो रिपोर्ट कर भी देती हैं, पर ये कमबख्त ऐसे चालाक हैं कि पकड़ने में नहीं आते और खतरे की घंटी बजते ही भाग जाते हैं।

२४—पोलैंड और डैंज़िग

९ नवम्बर सन् १९२० को इन दोनों देशों के बीच एक सन्धि हुई। उसमें यह तय हुआ था कि दोनों देशों की वैदेशिक नीति एक होगी, और विदेशों में दोनों के प्रतिनिधि भी एक ही होंगे। फ़ौजदारी और दीवानी मामलों के सम्बन्ध में दोनों देशों के एक ही क़ानून होंगे। दोनों ही देशों ने अपने एक ही प्रतिनिधि द्वारा लीग के सन् १९२१ के शर्त्तनामे पर हस्ताक्षर किये थे, अतः दोनों ही मुल्कों की एक ही साथ जाँच की गई और जो परिणाम निकले वे प्रायः एक ही समान थे।

पोलैंड की सरकार के सामने पुनर्निर्माण का कार्य बहुत लम्बा चौड़ा है जिसके लिए बड़े धन की आवश्यकता है। सरकार की आर्थिक परिस्थिति ऐसी नहीं है कि वह समाज-सुधार के कार्यों में अधिक व्यय कर सके, इस पर भी स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को समाप्त करने के लिए जो कुछ हो सकता है, उसके लिए वह बराबर चेष्टा कर रही है।

पोलैंड की सरकार समाज-पीड़ितों की सहायता पर बहुत ज़ोर देती है और स्वयं सहायता देने के अलावा, जनसमुदाय को अपने दुखी भाइयों को मदद देने के लिए प्रोत्साहन देती है। सार्वजनिक संगठनों और समितियों को भी सरकारी सहायता मिलती है।

सरकारी क़ानून के अनुसार पोलैंड के किसी मकान में दो से अधिक वेश्यायें नहीं रह सकतीं।

सन् १९२५ में वारसा में २८८१ रजिस्टर्ड वेश्यायें थीं। ग़ैर रजिस्टर्ड की तादाद कम से कम इससे दूनी तिगुनी थी।

क्राको में, अधिकारियों ने बतलाया कि यहाँ सन् १९२२ ही से लाइसेन्सयाफ़्ता मकानों की इति हो गई थी, पर सोलह साल से ऊपर की लड़कियाँ रजिस्टर में दर्ज की जाती थीं। वहाँ ऐसी स्त्रियाँ भी बहुत सी थीं जो आमदनी की कमी के कारण कभी कभी व्यभिचार करती थीं।

डैंज़िग में भी लाइसेन्सशुदा मकानों का नियम नहीं है। वहाँ पुलिस की बहुत सख़्ती है। अगर सड़क पर ग्राहकों को बुलाती हुई कोई स्त्री मिल जाती है तो उसे तीन दिन से लेकर हफ़्ते भर तक का कारावास होता है। कोई विदेशी युवती वहाँ वेश्यावृत्ति नहीं कर सकती, क़ानूनन मुमानियत है। जो लड़कियाँ होटलों और काफ़ों में हैं, वे बहुधा कम उम्र की हैं और प्राइवेट व्यापार करती हैं, अन्यथा नाबालिग लड़कियाँ इस पापवृत्ति में दाख़िल होने से सख़्ती के साथ रोकी जाती हैं।

पुलिस के मतानुसार डैंज़िग में कोई बीस दलाल हैं। लड़कियों ने कहा कि यहाँ आमदनी इतनी अच्छी नहीं है कि अधिक दलाल आ सकें।

बाहर जानेवाली लड़कियों के सम्बन्ध में अधिकारी काफ़ी सतर्क रहते हैं। किसी भी प्राइवेट फ़र्म को यह हक़ नहीं है कि

वह विदेशों में लड़कियों को किसी काम पर भेजे। किन युवतियों को और कहाँ भेजना चाहिए, यह काम सरकार ने अपने हाथों में ले रक्खा है। १६ वर्ष से कम की लड़कियों का मामला हर हालत में उनके माँ-बाप की रजामन्दी पर निर्भर रहता है।

सच पूछिए तो कम उम्र की लड़कियों और युवतियों का विदेशों में जाना ही असंगत है। दुनियाँ के सभी देशों में इस भयानक बेकारी के जमाने में पोलैंड जैसे सुदूर देश से युवतियों को बुलाने की किसी को क्या जरूरत है, जब तक उनके मन में कुछ पाप नहीं है। पोलैंड में बड़ी ग़रीबी है, अतः माता-पिता की रजामन्दी का भी विशेष महत्त्व नहीं है। माँ-बाप क्या जानें कि यहाँ जाने पर लड़की को कैसी परिस्थिति में रहना पड़ेगा। उन्हें तो हर महीने रुपये की जरूरत है। अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए वह हर तरह से उस जरूरत को पूरा करेंगे। उनको आप समझा दीजिए कि तुम्हारी लड़की हमारे आफ़िस में चार-पाँच घंटे काम करके डेढ़-सौ रुपया महीना कमायेगी, वे ख़ुशी से मान जायेंगे और अपनी सुन्दरी कन्या को ख़ुशी से आपके साथ कर देंगे। पोलैंड से किसी हालत में भी युवतियों का बाहर जाना नैतिक दृष्टि से हितकर नहीं है, क्योंकि बाहर गई हुई अधिकांश लड़कियों की क़िस्मत में व्यभिचार ही लिखा रहता है। व्यभिचार के अलावा उन पर जो जुल्म होते हैं उससे, इतने सुदूर देश में, जहाँ न उनके मित्र हैं, न बांधव हैं, और जहाँ के निवासी न उनकी भाषा समझते हैं, वे कैसे बच सकती हैं। हम जानते हैं कि पौलैंड

की सरकार वहाँ की जनता की भीषण दरिद्रता के कारण यह कर सकने में असमर्थ है और खुशी से, या नाखुशी से अपनी युवतियों को बाहर जाने देती है, हाँ, छोटी लड़कियों को रोकने की वह काफी चेष्टा करती है। यही कारण है कि स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार के सभी मुख्य मुख्य केन्द्रों में पोलैंड की सुन्दरियों की संख्या काफी देखी जाती है।

पोलैंड में यहूदी (Jew) लोगों की आबादी काफी है। यहूदी युवतियाँ सुन्दरता में अपना सानी नहीं रखतीं, अतः दलालों का दाँत उन पर बहुत रहता है। यहूदी सुन्दरियों का अमेरिका, मैक्सिको और फ्रांस तक में मूल्य बहुत है। दलाल की यह कोशिश रहती है कि तीन-चार पोलिश लड़कियों के साथ वह कम से कम एक यहूदिन जरूर ले जाय, ब्रेजिल और ब्यूनासेरोज में पोलैंड की युवतियों की खपत बहुत बताई जाती है।

पैरिस में पता चला कि हर महीने तीन-चार दलाल अरजेन्टाइन, क्यूबा और मैक्सिको से वारसा जाते हैं। वारसा में एक बहुत अमीर और इज्जतदार ऐसा आदमी, जिसकी पहुँच अधिकारियों में दूर दूर तक है, इन लोगों की मदद करता है। इसके द्वारा प्रत्येक दलाल या व्यापारी कम से कम तीन-चार लड़कियों को ले जाता है। इसके यहाँ हर तरह का माल, हर वक्त तैयार मिलता है। लीग के रिपोर्टरों ने पुस्तकों में इसका नामकरण नं० ६ टी० के नाम से किया है। यह घूस देने और छोटे

छोटे पहरेदारों को मिलाये रखने में सिद्धहस्त गिना जाता है। पोलैंड की सारी वेश्यायें और मिसें इसे अपना महाजन या "महाराज" समझती हैं और अपनी जरूरतें रफा करती रहती हैं। जो महिलायें पोलैंड से बाहर जाती हैं वे वेश्यायें भी हैं और मिसें भी हैं। नं० ६ टी० । ने स्वयं बतलाया कि मेरे पास एक से एक बढ़ कर हूर को परियाँ हैं, जिन्हें मैं चाहे जहाँ बाहर भेज सकता हूँ, वे मेरा इतना कहना मानती हैं। सचमुच इस आदमी का प्रभाव बहुत है। इसके पास हवाना, ब्रेजिल, अरजेन्टाइन, दक्षिण आफ्रिका प्रभृति सुदूरस्थ देशों से पत्र आते रहते हैं कि हमें हर महीने चार, छः, आठ युवतियों की जरूरत है, आप कृपा कर बन्दोबस्त कर दीजिए। उनकी उम्र १६ और २० साल के बीच होनी चाहिए। नं० ६ टी० । ने जाँच-कमेटी के मेम्बरों से कहा कि तुम चाहो तो मैं आज ही तुम्हारे लिए एक-दो बहुत ही नायाब नवेलियों का बन्दोबस्त कर सकता हूँ।

हाँ, नं० ६ टी० ने अपने अनुभव की एक बात कमेटी के मेम्बरों को बतलाई और कहा कि मैं कभी अपनी लड़कियों को उन लोगों के साथ नहीं करता जो पोल या इडी भाषा न बोल सकें। इन्हीं दो भाषाओं को हमारी छोकड़ियाँ समझती हैं। अतएव हमने कई ऐसे आदमी रख छोड़े हैं जो ग्राहकों के साथ जाते हैं। ग्राहक उनके आने-जाने का किराया देते हैं। जो व्यापारी हमारी बोली नहीं जानते वे खतरे के मुक़ाम तक मजबूरन हमारे किसी आदमी को ले जाते हैं। उसने कहा कि यदि मैं इस बात का ध्यान

न रक्खूँ तो फँस जाऊँ, क्योंकि लड़कियाँ जो विदेशी होने के कारण उनकी बोली तक नहीं जानतीं, तंग आ जायँ और ज्यादा परेशान होने पर रिपोर्ट कर दें। दूसरे दलालों के साथ कई घटनायें हो चुकी हैं जिनमें उनके द्वारा भगाई गईं लड़कियाँ बीच ही से वापस आ गई हैं और वे स्वयं पकड़े गये तथा जेल में डाल दिये गये हैं।

बहुधा लड़कियाँ बहकाने तथा विवाह का प्रलोभन देने पर साथ हो लेती हैं। दलाल लोग वेप बदल कर कोई अमीर आदमी, कोई शाहज़ादा और कोई धनाढ्य व्यापारी बन जाते हैं। लड़कियाँ उनके तरह तरह के आकर्षणों पर मर मिटती हैं और साथ हो लेती हैं। ऐसी कुछ घटनायें पकड़ी भी जाती हैं, पर अधिकांश दलाल तिकड़मों से पैसा खर्च कर, बच कर साफ़ निकल जाते हैं।

पोलैंड में सरकारी क्लर्कों और कर्मचारियों को घूस देने पर पासपोर्ट मिल जाते हैं, पर उनमें खर्च ज्यादा पड़ता है। महिला-दलाल तो बहुधा झूठे पासपोर्ट बना लेते हैं और हमेशा दो या तीन पासपोर्ट अपने पास रखते हैं। पुलिस ने वारसा और लेमबर्ग में झूठे पासपोर्ट बनाने-वाली कई फैक्टरियाँ पकड़ी हैं।

यदि वहाँ की सरकार सख्ती न रक्खे, तो पोलैंड से बाहर जानेवाली युवतियों और लड़कियों की संख्या बहुत बढ़ जाय। पोलैंड में हजारों ही युवतियाँ और उनके माँ-बाप ऐसे हैं जो उन्हीं के शब्दों में रुपया कमाने के लिए कहीं भी जाने को तैयार हैं।

ऐसी कम से कम दस हजार सुन्दरियाँ हर साल विदेशों में जा सकती हैं, परन्तु जो रोज़गार की तलाश में बाहर गईं उनमें से अधिकांश बदमाशों के चंगुल में फँस गईं और जीवन बर्बाद कर बैठीं। इसलिए अधिकारी अब विशेष सजग हो गये हैं और जहाँ तक हो सकता है उन निर्यातों को रोकते हैं जो उनकी समझ में खतरे से और कठिनाइयों से खाली नहीं हैं। जहाँ उनको युवतियाँ जाकर बिना किसी दिक्कत के जीवन निर्वाह कर अमानुषिक ज़ुल्मों से बच सकती हैं वहाँ चाहे फिर वे वेश्यावृत्ति के लिए ही क्यों न जाती हों, अधिकारी आँखें मींच कर उन्हें जाने देते हैं। इससे देश को आर्थिक लाभ भी होता है और बढ़ती हुई बेकारी की समस्या को रोकने में भी वे समर्थ होते हैं।

पोलैंड और डैंजिग में विदेशी स्त्रियाँ बिल्कुल नहीं हैं।

२५—पुर्त्तगाल

पुर्त्तगाल में दो तरह की वेश्यायें हैं। एक तो वे जो लाइ-सेन्सयाफ़्ता मकानों में रहती हैं और दूसरी वे जो प्राइवेट मकानों में आबाद हैं। दोनों ही रजिस्टर्ड हैं। या तो वेश्यायें स्वयं रजिस्ट्री करा लेती हैं, या पुलिस की जाँच होने पर, बरबस वे लिख ली जाती हैं।

पुर्त्तगाल की राजधानी लिस्बन में सन् १९२४ में ४२६३ रजिस्टर्ड वेश्यायें थीं, जिनमें ५५२ स्पेनिश, २९९ फ्रेंच, १४ ब्रेजी-लियन, १० इटालियन, दो वेल्जियन और एक स्विस थी। बाक़ी पुर्त्तगाली थीं। इनमें १७२१ सोलह से २१ साल के अन्दर की थीं और ११९७ इकीस और पच्चीस के बीच की उम्र की थीं। यहाँ सोलह से कम उम्र की लड़कियाँ भी वेश्यावृत्ति से नहीं रोकी जातीं और उनके नाम भी वेश्याओं के रजिस्टर में लिख लिये जाते हैं। इस व्यापार में लगी हुई एक मैडम ने बतलाया कि पुर्त्तगाल ही एक ऐसा देश है जहाँ चौदह साल की लड़की लाइसेन्सयाफ़्ता मकान में बैठकर खुलकर व्यभिचार करा सकती है। उसने कहा कि मेरे पास अठारह-उन्नीस साल की दो सुन्द-रियाँ चार-पाँच वर्ष से हैं, अर्थात् वे १४ साल की अवस्था से इस पेशे में दाखिल हैं।

जाँच-कमेटी के एक मेम्बर ने पूछा कि क्या उनके माँ-बाप मना नहीं करते? क्या उनकी स्वीकृति के बिना ही वे आतीं या लाई जाती हैं?

उत्तर मिला—नही। फिर उसने हँसते हुए कहा—"तुम ताज्जुब करोगे कि माँ-बाप स्वयं उन्हें मेरे पास लेकर आये थे और इसी काम के लिए छोड़ गये थे। लड़कियाँ अपनी बची हुई सारी आमदनी अपने घर भेजती रहती हैं जिससे माँ-बाप पेट पालते हैं।"

यही बात दूसरे स्थानों पर भी मालूम हुई। पुर्त्तगाल में अमीर लोग और उनके बदचलन साहबजादे प्रायः सभी कमसिन लड़कियाँ ढूढ़ते हैं, अतएव हजारों माता-पिता अपनी कमसिन लड़कियों को बारह-तेरह साल की अवस्था में मकान मालकिनों के पास होशियार होने तथा वेश्यावृत्ति सीखने को छोड़ जाते हैं जो साल-छः महीने में उन्हें सब तरह से तैयार करके रोजगार में लगा देती हैं। इस तरह वे लड़कियाँ ख़ुद कमाती हैं और माँ-बाप का भार भी हल्का करती हैं। मालकिन आमदनी का $\frac{3}{?}$ हिस्सा से लेकर $\frac{?}{?}$ तक ले लेती हैं जिसे औसतन हम आधा कह सकते हैं।

पुर्त्तगाल की पुलिस इस मामले में बहुत मेहरबान है। एक दलाल ने बतलाया था कि यहाँ की सड़कों पर दर्जनों कमसिन और बिना दर्ज की हुई लड़कियाँ घूम घूमकर ग्राहकों को फँसाती रहती हैं और पुलिस उनसे कुछ नहीं बोलती। यहाँ तक कि

पुलिसमैन की आँखों के सामने बयाना, लेन-देन, और घसीटा-घसीटी तक होजाती है। पुर्त्तगाल में विवाहित औरतों की रजिस्ट्री कराने की जरूरत नहीं होती और न उनका डाक्टरी मुआयना ही होता है। मकानों की सञ्चालिकाएँ, मैडमें, लड़कियों को सदा मक़रूज बनाये रखती हैं और तरह तरह की चीजों को खरीदने के लिए उत्साहित करती रहती हैं, यहाँ तक कि क़र्ज़ देकर उन्हें कोकीन ले देती हैं, और बुरी आदतें डाल डालकर इतनी खरीच बना देती हैं कि जवानी भर वे उनके पास से हट न सकें। कहते हैं कि क्लब-घरों और काफ़ों की लड़कियाँ सबसे ज्यादा कमाती हैं।

विदेशों से आनेवाले यात्री लोग पुर्त्तगाल की राजधानी लिस्बन ही में ठहरते हैं। इसलिए जो कुछ विदेशी युवतियाँ इस देश में हैं, वे यहीं हैं। उनकी संख्या वेश्याओं की कुल संख्या को क़रीब क़रीब चौथाई कूती गई है और वे अधिकांश में स्पेनी और फरासीसी हैं। दलालों ने बतलाया कि यद्यपि लिस्बन में विदेशियों की माँग काफी है, पर यहाँ अच्छी आमदनी नहीं होती, इसलिए वे बहुत कम आती हैं। विदेशी युवतियों की रजिस्ट्री तब तक नहीं होती जब तक कि उनके देश के राजदूत उन्हें वेश्याओं की लिस्ट में दर्ज करने की इजाजत न दे दें। २१ वर्ष से कम उम्र की विदेशी लड़कियों के उदाहरण काफ़ी मिलते हैं।

पुर्त्तगाल की लड़कियाँ शक्ल-सूरत में बहुत आकर्षक नहीं गिनी जातीं। वे अपनी फ्रेंच, जर्मन तथा इटालियन बहनों के

समान संस्कृत और फ़ैशनेबिल भी नहीं होतीं, इसलिए वे विदेशों में बहुत कम ले जाई जाती हैं।

लिस्बन की लाइसेन्सयाफ़्ता वेश्याओं की लिस्ट इस प्रकार है—

(किस देश की कितनी वेश्यायें हैं)

पुर्त्तगाल	...	...	३३८५
स्पेन	...	...	५५२
फ्रांस	...	...	२९९
ब्रेज़िल	...	...	१४
इटली	...	...	१०
बेल्जियम	...	...	७
स्विट्ज़रलेंड	...	...	१
			टोटल—४२६२

वेश्याओं की अवस्था

१६—२०	...	...	१७२१ (तादाद)
२१—२५	...	...	११९७
२६—३०	...	...	५३५
३१—३५	...	...	५४३
३६—४०	...	...	२८१
४१—४५	...	...	६६
			टोटल—४२६३।

विवाहित या अविवाहित वेश्यायें

अविवाहित	...	...	४०४५
विवाहित	...	...	१५०
विधवा	...	...	६०
परित्यक्ता (Divorced)		...	८
		टोटल—	४२६३

साक्षर और निरक्षर वेश्याओं की संख्या

साक्षर वेश्यायें	...	... =	१२८९
निरक्षर वेश्यायें	...	... =	२९७४
		टोटल—	४२६३

कितनी युवतियाँ वेश्यावृत्ति पर ही अवलम्बित हैं, और कितनी और और पेशों में भी लगी हैं, उनकी संख्या

केवल वेश्यावृत्तिवाली	...	...	१७९९
पेशा नौकरी (होटलों और काफों में)		...	१६३०
हैट बनाने वाली	...	...	५४४
फैक्टरियों में काम करने वाली		...	१०८
थियेटरों में एक्टरी करने वाली		...	६०
दर्जीगीरी में	...	...	४५
सरकसों में	...	...	२२
कपड़े के कारखानों में	...	...	३६
जूते पर पालिश करने के काम में		...	१३
अध्यापिकायें	...	...	६
		टोटल—	४२६३

२६—रूमानियाँ

बुखारेस्त रूमानियाँ की राजधानी है और संसार के अच्छे नगरों में गिनी जाती है। चकलों और उनमें होने वाली वेश्यावृत्ति के सम्बन्ध में वहाँ की पुलिस के प्रधान ने जो बातें बतलाई थीं वे इस प्रकार हैं—

"सन् १८९८ में यहाँ वेश्यावृत्ति को नियंत्रित करने के लिए क़ानून बना था। यहाँ की वेश्याओं की तीन श्रेणियाँ हैं। एक तो वे जो सरकार की स्वीकृति से इस व्यवसाय में लगी हैं। उनको हमने कार्ड दे रखे हैं। दूसरी वे हैं जो बिना कार्ड के भी इस पेशे में लगी हैं। हम उन्हें मना नहीं करते। वे हमारी जानकारी में व्यवसाय चलाती हैं। तीसरी वे हैं जो न तो वेश्यायें हैं और न पूरे समय इस काम ही को करती हैं। वे किसी अन्य व्यवसाय में लगी हैं, पर आमदनी की कमी के कारण रात में ७ बजे से १२ तक, हफ़्ते में दो तीन बार इस पाप-व्यापार से कमाती हैं। वे ११ या १२ बजे के बाद इसलिए नहीं ठहर सकतीं कि सुबह ७ बजे से उन्हें अपने काम पर जाना होता है।

यहाँ १५ मकान लाइसेन्सशुदा हैं जिनमें वेश्यायें रहती हैं। इन्हें समय समय पर डाक्टरी जाँच के लिए अस्पताल जाना पड़ता है और बिना हमारी मरज़ी के उन्हें मकान बदलने का

हुक्म नहीं है। क़ानूनन उनके साथ दलाल नहीं रह सकते। हमने क़ानून बना रक्खा है कि वे अपनी आमदनी का नियत भाग सेविंग बैंक में जमा करती रहें। उस जमा किये हुए रुपये में से वे एक पैसा भी निकाल नहीं सकतीं, जब तक कि हमारे दस्तख़त न ले लें। इन लाइसेन्सवाले मकानों में रहने वाली वेश्याओं को आमदनी का ५० प्रतिशत मकान मालकिन को खाने और किराये का देना होता है, ३० प्रतिशत बैंक में जमा कराना पड़ता है, और २० प्रतिशत इन लोगों को खर्च करने को मिलता है। हमारे यहाँ ऐसी भी गणिकायें हैं जो कार्ड-प्राप्त हैं, पर लाइसेन्स-वाले मकानों में नहीं हैं। ऐसी भी हैं जिनका नाम रजिस्टर में दर्ज नहीं है और ऐसी भी हैं जो मौज मारने के लिए व्यभिचार कराती हैं। इन सब को हम तरह देते रहते हैं।

रूमानियाँ में चकले में १८ वर्ष से कम उम्र की लड़की दाख़िल नहीं की जाती। लेकिन जाँच करने पर पता चला कि इससे कम उम्र की लड़कियों की पर्याप्त संख्या है। इसके अलावा पार्कों, बारों, काफ़ों, और होटलों में ऐसी नाबालिग़ लड़कियों का काफ़ी जमाव रहता है जो रेशमी रूमाल, चमकीले कपड़े, या एक वक़्त के भोजन पर ही कुकर्म कराने को तैयार हो जाती हैं।

एक दलाल ने, जो बुख़ारेस्ट में इसी पेशे में लगा हुआ था, बतलाया—"यहाँ चाहे जितनी लड़कियाँ चुन सकते हो। फ़लाँ-फ़लाँ सड़कों पर शाम को पाँच बजे से उनके झुण्ड के झुण्ड

घूमा करते हैं। वे विदेशों में भी जाने को तैयार रहती हैं। अगर तुम उनसे शादी कर लो तो पासपोर्ट मिलने में कोई कठिनाई ही नहीं रहती। परन्तु पासपोर्ट वैसे भी उन्हें मिल जाते हैं।"

बुख़ारेस्त में ऐसी भी ग़ैर पेशेवर मिसें बहुत हैं जो केवल मज़े के लिए, प्रेम के लिए, किसी रात किसी के साथ रहती हैं। यहाँ सुन्दर लड़कियों की तलाश में होटलों में चले जाओ और एक, दो, तीन जितनी चाहिए, उतनी लड़कियाँ साथ लेकर मोटर पर घूमने चले जाओ। वे पैसा कौड़ी नहीं लेतीं, केवल प्रेम के नाम पर मौज मारना चाहती हैं।

बुखारेस्त में लड़कियाँ और दलाल साथ साथ एक ही कमरे में रहते हैं। शाम होते ही वे ग्राहकों की तलाश में चले जाते हैं और लड़कियाँ नये नये भड़कीले वस्त्र पहन कर प्रतीक्षा करती हैं।

रूमानियाँ में विदेशी वेश्यायें बहुत हैं और जो हैं वे पोलैंड, रूस और आस्ट्रेलिया की हैं।

जाँच करने-वाले ग्रीगोरा-घीसावाडे स्टेशन पर थे कि एक व्यक्ति एक लड़की के साथ पकड़ा गया। वह पोलैंड से आया था। उसके साथ में जो लड़की थी वह तेरह चौदह वर्ष से ज्यादा की न थी। आगन्तुक लड़की को अपनी पुत्री बतलाता था और यही उसके पासपोर्ट में लिखा था। जब उस पर मार पड़ी तब उसने क़बूल किया कि यह मेरी पुत्री नहीं है, प्रत्युत बड़ाई हुई लड़की है। उसे सजा हो गई और लड़की उसके माँ-बाप के पास वापस भेज दी गई।

जाँच-कमेटी के एक सदस्य ने एक लड़की से बात-चीत की जो बुखारेस्त के टाउन हाल में एक पार्टी के साथ गाती-बजाती थी। उसने बताया—"मैं इसी पार्टी के साथ वाइना में थी, बाद में बुडापेस्ट में काम करती रही। यहाँ एक हफ़्ते ठहर कर मैं क़ुस्तुन्तुनियाँ और वहाँ से मिस्र जाऊँगी। मालकिन मेरा किराया और कुछ तन्ख्वाह देती है। वह शराब बिकवाती है और उसकी आमदनी का भी कुछ भाग दे देती है। काम के घंटों के बाद मैं कभी कभी किसी अच्छे युवा के साथ चली जाती हूँ। रोज नहीं, पर हफ़्ते में एक-दो बार तो जाती ही हूँ।...और इस तरह मैं सुख से रहती हूँ।"

सदस्य ने प्रश्न किया—"इस दुराचार की जिन्दगी में तुम्हें सुख कैसे मिलता है?"

उसने उत्तर दिया—"शुरू में मुझे यह अखरता था, पर अब मैं देखती हूँ और मेरी मालकिन ने भी समझाया है कि जैसे कपड़े, गल्ले और किराने का रोज़गार है, वैसे ही यह भी है। जब तक मेरी जवानी है और यह रूप-रंग क़ायम है तब तक मेरी दूकान चलती है, जिन्दगी का लुत्फ़ भी मिलता है। मेरे लिए यह कुछ जरूरी नहीं है कि मैं रोज दस आदमियों को खुश करूँ। मेरे गाने, बजाने और रूप-रंग पर मोहित होकर दर्जनों युवक रोज मुझसे मुलाक़ात करने आते हैं, उनमें जो सब से सुन्दर, सबसे स्वस्थ सबसे फैशनेबिल और अमीर होते हैं उन्हें मैं पास फटकने देती हूँ, बाक़ी को भगा देती हूँ। अगर मैं यह न करूँ, तो क्या करूँ?

कोई भी रोजगार करने के लिए रक़म चाहिए, सो कहाँ से लाऊँ ? और उसमें नफ़ा ही होगा, इसका क्या ठिकाना है ? इस रोजगार में तो बिना पैसा-कौड़ी लगाये मैं नफ़ा ही नफ़ा करती हूँ। कौन सी नौकरी ऐसी है जिसमें मैं १०० डालर माहवार कमा सकती हूँ। इसमें तो मैं रानी की तरह रहती हूँ, मौज मारती हूँ और बूढ़े माँ-बाप को खिलाती हूँ।"

सच है, जो लड़कियाँ व्यभिचार की आदी हो जाती हैं उनका ऐसा ही दृष्टि-कोण हो जाता है। चोर चोरी करते करते जैसे पक्का हो जाता है, ख़ूनी ख़ून करते करते जैसे संगदिल हो जाता है, वैसे ही इन लड़कियों का समुदाय भी व्यभिचार में अभ्यस्त होने पर उसी में रम जाता है। उनके सुख और दुख की परिभाषा निरी फ़ैशन, अच्छे कपड़े और रुपये से ताल्लुक़ रखती है।

रूमानियाँ से बाहर विदेशों में जाने वाली लड़कियों की संख्या बहुत है। देश में दरिद्रता और लड़कियों की अधिकता ही इसका कारण है। दलालों के शब्दों में रूमानियाँ व्यापार के लिए औरतों की "सलाई" का मुख्य केन्द्र है।

मैक्सिको, ब्यूनासेरीज़, पैरिस, मिस्र और क़ुस्तुन्तुनिया के दलालों ने बतलाया था कि हम लोगजरनोविच नामक शहर से चाहे जितनी लड़कियाँ ले आते हैं। बुखारेस्त के पब्लिक पार्कों में रात के समय ऐसी सैकड़ों लड़कियाँ बैठी हुई, ताश खेलती हुई मिलती हैं, या हफ़्ते में एक दिन जब बैंड बजता है तब उसको

सुनने के लिए आती हैं जिनसे वहीं दोस्ती पैदा की जा सकती है। वे एक रात के लिए साथ ले जाई जा सकती हैं और फिर बाहर जाने को भी तैयार कर ली जाती हैं।

अधिकारियों ने बतलाया कि रूमानियाँ और हिन्दुस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, सिंगापुर, जापान आदि पूर्वीय देशों के बीच काफ़ी तिजारत होती है। जहाजों के एजेन्ट उन युवतियों को झूठे पासपोर्ट दे कर अपने जहाजों से उन्हें देश के बाहर भेज देते हैं।

कहा जाता है कि पूर्व में, बम्बई इस तिजारत का मुख्य केन्द्र है, जहाँ प्रतिमाह और प्रतिवर्ष रूमानियन, पोलिश, फ्रेंच और आस्ट्रियन लड़कियों का क़ाफ़िला आता रहता है।

रूमानियाँ के स्वास्थ्य-विभाग ने स्त्रियों और बच्चियों की तिजारत की जाँच करने के लिए एक समिति नियुक्त की थी। इस समिति ने कम उम्र की लड़कियों का विदेशों में भेजा जाना बन्द करने का निश्चय किया है, पर इस मार्ग में एक बड़ी कठिनाई है। वह यह है कि जो लड़की अपनी पैदाइश का सर्टिफ़िकट दिखा कर यह सिद्ध कर दे कि वह बालिग़ है, उसे पासपोर्ट दिया जाना अनिवार्य है। पैदाइश का सर्टीफ़िकट या तो पैदाइश के दफ़्तर या गिरजे के पादरी से प्राप्त होता है। दफ़्तर के क्लार्क को कुछ रुपये दे दीजिए, बस प्रमाण-पत्र मिल जायगा, या पादरी साहब को ख़ुश कर दीजिए, उनका हुक्मनामा हासिल हो जायगा। यह भी न हो तो विदेश के किसी रिश्तेदार या मित्र

से इस आशय का पत्र मँगवा लीजिए कि तुमको बुलाया है—या "आकर देख जाओ हमारी तबियत ख़राब है"—बस, फिर जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। इन लड़कियों की दोस्त जो बम्बई, पैरिस या मिस्र में होती हैं, ऐसे पत्र भेज कर लड़कियों को रूमानियाँ से बुला लेती हैं। फिर वहाँ कुछ दिन वे उन्हें अपने साथ रखती हैं, अनुभव कराती हैं और बाद में अपने पेशे में प्रवेश करा देती हैं। माँ-बाप ख़ुशी से इन्हें विदेशों में जाने की इजाज़त दे देते हैं।

२७—स्पेन

सन् १९२५ में स्पेन में, २०८२३ रजिस्टर्ड वेश्यायें थीं, जिनमें १०६७ विदेशी थीं।

२३ साल से कम की युवतियों के लिए स्पेन में यह आवश्यक नहीं है कि वे अपना नाम रजिस्टर में चढ़वायें। जिन युवतियों का नाम रजिस्टर में दर्ज नहीं है, उनकी संख्या, दर्ज हुई संख्या से कम से कम तीन चार गुनी है।

स्पेन में, किसी पुरुष के लिए, चकला चलाना जुर्म है, इसलिए यह काम दलालों की पत्नियों, या रखेलियों के हाथ में है। लाइसेन्सयाफ़्ता मकानों में २१ वर्ष से कम उम्र की लड़कियाँ बहुत कम देखी जाती हैं।

प्राइवेट मकानों में १५-१६ साल की लड़कियों की तादाद काफ़ी है। शाम के वक़् इनकी मैडमें इन्हें सजा-बजाकर तैयार करती हैं और अपने ही मकानों में ग्राहकों को बुला लेती हैं।

स्पेन में प्रतिवर्ष ऐसी सैकड़ों घटनायें होती हैं जिनमें कम उम्र की लड़कियों के क्रय, विक्रय, या उनसे व्यभिचार कराकर पैसा कमाने के अभियोग में उनके माँ-बाप, या संरक्षक, या दलाल पकड़े जाते हैं और सजा पाते हैं।

बारसीलोना में सङ्गीत-भवन बहुत से हैं। इन सब में लड़कियाँ और युवतियाँ ही काम करती हैं। इनके संरक्षण के लिए

पुलिसवाले बहुत सख़्ती करते हैं। एक सङ्गीत-भवन में जाँच-कमेटी के दो मेम्बर गये और कोई एक घंटा बैठे। इसी बीच में छद्म वेषधारी चार पुलिसवाले वहाँ आये। उनके चले जाने पर संचालक ने बतलाया—"ये लोग यह देखने आये थे कि हम लोग लड़कियों को नंगा करके तो नहीं नचाते; इनसे शराब तो नहीं बिकवाते, अन्यथा वे हमें गिरफ़ार कर लें। मेरे यहाँ यह देखो, सब ४० युवतियाँ हैं। सच पूछिए तो इन्हीं के द्वारा मेरी शराब बिकती है, यदि ये न हों तो मेरी बिक्री आधी रह जाय। ये लड़कियाँ कोई भी रजिस्टर में दर्ज नहीं हैं। हम लोग इन्हें प्रति-रात के हिसाब से नौकरी में थोड़ा सा रुपया देते हैं। जिस दिन यहाँ इनमें से किसी को अच्छा ग्राहक मिल जाता है वे उस रात हमारी इजाज़त लेकर उसके साथ चली जाती हैं। उस रात की उनकी तनख़्वाह कट जाती है, परन्तु वे युवकों से उससे दूना तिगुना पैदा कर लेती हैं। हम लोग चाँदनी रात में जब स्त्री और पुरुषों के नाच का आयोजन करते हैं तब सब बत्तियाँ बुझा देते हैं, पुरुष, मस्त होकर मनमानी न कर पावें इसलिए पुलिसवाले चार बत्तियों का जलाना अनिवार्य रखते हैं। हाँ, जब जब वे हमसे मिल जाते हैं तब उन नाचों में भी हम लोग काफी कमा लेते हैं। हम जानते हैं और आप भी समझ सकते हैं कि ये फ़ैशनेबिल लड़कियाँ इतनी थोड़ी आमदनी में अपना काम कैसे चला सकती हैं।"

स्पेन की लड़कियाँ विदेशों में कम पाई जाती हैं। हाँ, फ्रांस,

इटली, जर्मनी, पोलैंड, आस्ट्रिया, इंगलैंड आदि दूसरे देशों की युवतियाँ स्पेन के बन्दरगाहों से अमेरिका और दक्षिण अमेरिका जाती रहती हैं।

गरमी की ऋतु में आसपास के देशों के यात्री सन्टैण्डर (Santandar) और सर्डीनारो (Sardinaro) में आबोहवा बदलने के लिए आते हैं। उस वक्त अस्थायी रूप से, उनका मनोरञ्जन करने के लिए कुछ विदेशी वेश्यायें भी आ जाती हैं। अथवा दलाल लोग तीन चार महीने के लिए लड़कियाँ उड़ा लाते हैं।

स्पेन के बन्दरगाह के अधिकारियों ने बतलाया कि हमारे यहाँ से जितनी लड़कियाँ गुज़रती हैं वे प्रायः सबकी सब कम उम्र की होती हैं, पर उनके पासपोर्टों में उनकी उम्रें आठ आठ, नौ, नौ साल बढ़ा कर लिखी रहती है, अतएव हम उनके ख़िलाफ़ कोई भी कार्यवाही कर सकने में असमर्थ रहते हैं। १९ साल की एक युवती का दर्द-भरा दास्तान सुनिए :—

"मैं सन् १९०४ में फ्रांस में पैदा हुई थी। जब मैं १५ साल की हुई तब मैंने बाल बनाने और काटने का काम सीखा और १६ साल की अवस्था में पैरिस में एक हेयरकटिंग और शेविंग सैलून खोल दिया। यहाँ एक युवक से मेरा प्रेम हो गया और मैं उसके साथ बहुधा जाने आने लगी। सन् १९२४ की जुलाई में एक दिन शाम को मैं अकेली घूमने जा रही थी कि एक निहायत

पुलिसवाले बहुत सख्ती करते हैं। एक सङ्गीत-भवन में जाँच-कमेटी के दो मेम्बर गये और कोई एक घंटा बैठे। इसी बीच में छद्म वेषधारी चार पुलिसवाले वहाँ आये। उनके चले जाने पर संचालक ने बतलाया—"ये लोग यह देखने आये थे कि हम लोग लड़कियों को नंगा करके तो नहीं नचाते; इनसे शराब तो नहीं बिकवाते, अन्यथा वे हमें गिरफ़ार कर लें। मेरे यहाँ यह देखो, सब ४० युवतियाँ हैं। सच पूछिए तो इन्हीं के द्वारा मेरी शराब बिकती है, यदि ये न हों तो मेरी बिक्री आधी रह जाय। ये लड़कियाँ कोई भी रजिस्टर में दर्ज नहीं हैं। हम लोग इन्हें प्रति-रात के हिसाब से नौकरी में थोड़ा सा रुपया देते हैं। जिस दिन यहाँ इनमें से किसी को अच्छा ग्राहक मिल जाता है वे उस रात हमारी इजाज़त लेकर उसके साथ चली जाती हैं। उस रात को उनकी तनख्वाह कट जाती है, परन्तु वे युवकों से उससे दूना तिगुना पैदा कर लेती हैं। हम लोग चाँदनी रात में जब स्त्री और पुरुषों के नाच का आयोजन करते हैं तब सब बत्तियाँ बुझा देते हैं, पुरुष, मस्त होकर मनमानी न कर पावें इसलिए पुलिसवाले चार बत्तियों का जलाना अनिवार्य रखते हैं। हाँ, जब जब वे हमसे मिल जाते हैं तब उन नाचों में भी हम लोग काफी कमा लेते हैं। हम जानते हैं और आप भी समझ सकते हैं कि ये फैशनेबिल लड़कियाँ इतनी थोड़ी आमदनी में अपना काम कैसे चला सकती हैं।"

स्पेन की लड़कियाँ विदेशों में कम पाई जाती हैं। हाँ, फ्रांस,

इटली, जर्मनी, पोलैंड, आस्ट्रिया, इंग्लैंड आदि दूसरे देशों की युवतियाँ स्पेन के बन्दरगाहों से अमेरिका और दक्षिण अमेरिका जाती रहती हैं।

गरमी की ऋतु में आसपास के देशों के यात्री सन्टेण्डर (Santandar) और सर्डीनारो (Sardinaro) में आबोहवा बदलने के लिए आते हैं। उस वक्त अस्थायी रूप से, उनका मनोरञ्जन करने के लिए कुछ विदेशी वेश्यायें भी आ जाती हैं। अथवा दलाल लोग तीन चार महीने के लिए लड़कियाँ उड़ा लाते हैं।

स्पेन के बन्दरगाह के अधिकारियों ने बतलाया कि हमारे यहाँ से जितनी लड़कियाँ गुज़रती हैं वे प्रायः सबकी सब कम उम्र की होती हैं, पर उनके पासपोर्टों में उनकी उम्रें आठ आठ, नौ, नौ साल बढ़ा कर लिखी रहती है, अतएव हम उनके ख़िलाफ़ कोई भी कार्यवाही कर सकने में असमर्थ रहते हैं। १९ साल की एक युवती का दर्द-भरा दास्तान सुनिए :—

"मैं सन् १९०४ में फ्रांस में पैदा हुई थी। जब मैं १५ साल की हुई तब मैंने बाल बनाने और काटने का काम सीखा और १६ साल की अवस्था में पैरिस में एक हेयरकटिंग और शेविंग सैलून खोल दिया। यहाँ एक युवक से मेरा प्रेम हो गया और मैं उसके साथ बहुधा जाने आने लगी। सन् १९२४ की जुलाई में एक दिन शाम को मैं अकेली घूमने जा रही थी कि एक निहायत

ख़ूबसूरत नौजवान से मेरी भेंट हो गई। हम दोनों ही सीन नदी के किनारे एक बेंच पर बैठ कर बातें करने लगे। उसकी बातों ने मुझे मोह लिया। मिस्टर......ने बतलाया कि वे हवाना की एक टैक्सी कम्पनी के मालिक हैं और क्यूबा के एक अमीर आदमी हैं। उसकी बातचीत शक्ल-सूरत और क़ीमती कपड़े कह रहे थे कि वह किसी धनी मानी का साहबज़ादा है। बाद में हम लोग अक्सर मिलते रहे। एक दिन उसने प्रस्ताव किया कि यदि तुम मेरी प्रेयसी बन कर रहो, तो जो कहो वह दूँगा। मैं नहीं जानती थी कि ऊपर से इतना हँसमुख और सुन्दर होते हुए भी वह अन्दर से ज़हर का बुझा हुआ होगा। ख़ैर, मैं उसके साथ रहने को राज़ी हो गई। एक दिन उसने मुझे मार्सलीज़ का एक टिकट ख़रीद कर मुझे देते हुए कहा कि तुम दो दिन बाद वहाँ पहुँच जाना, मैं आज जाकर होटल वग़ैरह का इन्तज़ाम करूँगा और अपना व्यापारिक काम भी निपटाऊँगा। उसने पैरिस छोड़ने से पहले मेरी मुलाक़ात एक दूसरे आदमी से करवा दी जो उसका दोस्त था और मेरे साथ ही मार्सलीज़ जानेवाला था। उस नवागन्तुक के साथ मैं मार्सलीज़ पहुँची, जहाँ मुझे मेरा प्रेमी मिल गया। उसके साथ मैं कई होटलों में ठहरी, और कई दफ़्तरों में गई जहाँ उसने मेरे पासपोर्ट के लिए बहुत कोशिश की। हम दोनों में यह तय हो गया था कि मैं उसकी रखेली या प्रेयसी की तरह जीवन भर रहूँगी। इस प्रेमी ने एक फ्रेंच पादरी के द्वारा मेरी उम्र का झूठा सर्टिफिकेट प्राप्त

कर लिया। उसमें मेरी अवस्था २८ साल की बतलाई गई थी और नामकरण "सोफ़िया" किया गया था। फिर वह पासपोर्ट का सादा फ़ार्म लाया और मुझसे दस्तख़त करवा लिये।

हम दोनों एक जान दो क़ालिब होरहे थे। कम से कम मेरे मन में तो उसके लिए बड़े अच्छे ख़यालात थे। साथ साथ जाने में पकड़े जाने का खटका था, अतः हम लोग जुदे जुदे रास्तों से बारसीलोना के लिए चल पड़े। दो तीन दिन में एक होटल में ठहरी रही, बाद में मेरे प्रेमी महाशय, अपने मित्र के साथ मेरे पास आ गये। उन मित्र के साथ चार सुन्दरियाँ और थीं, पर मेरे प्रेमी अकेले थे। बारसीलोना स्पेन और फ़्रांस की सीमा का शहर है। यहाँ उस वक़्त वेश्या-वृत्ति की विशेष सख़्ती नहीं थी। यहाँ मेरा प्रेमी अपने असली रूप में प्रकट हुआ। उसने मुझे व्यभिचार करके पैसा पैदा करने के लिए मजबूर किया। वह मेरी आमदनी का पैसा पैसा रोज़ ले लेता था। इस पर भी उसे सन्तोष न हुआ। वह मुझे गाली देता, आँखें दिखाता और, और ज़्यादा पैदा करने पर ज़ोर देता। यहीं मुझे मालूम हुआ कि ये और इनके मित्र, दोनों औरतों के व्यापारी हैं और वेश्यावृत्ति कराने के लिए ही मुझे हवाना ले जा रहे हैं। एक दिन मौक़ा पाकर मैं जान लेकर भागी और पुलिस के दफ़्तर में रिपोर्ट कर दी। पुलिस की चौकी से तुरन्त ही एक गारद ने आकर उन बदमाशों को पकड़ लिया··· तब कहीं मेरी जान बची।"

२८—स्विट्ज़रलैंड

बर्न और लासेन स्विट्ज़रलैंड के प्रख्यात नगर हैं। यहाँ चकले बिल्कुल नहीं हैं। पहली नवम्बर सन् १९२५ से वेश्याओं के लाइसेन्सयाफ़्ता मकान भी बंद कर दिये गये हैं।

स्विट्ज़रलैंड दुनियाँ में सबसे अच्छा और सबसे उच्च कोटि का प्रजातंत्र राज्य गिना जाता है। यहाँ के लोग अधिकांश में शिक्षित और सुसंस्कृत हैं।

वे चकलों के कट्टर विरोधी हैं। स्विट्ज़रलैंड की पुलिस संसार की सबसे अच्छी पुलिसों में गिनी जाती है। घूस बद-माशी, बदनियती और अत्याचार वहाँ की पुलिस की दृष्टि में 'लोक-सेवक-विभाग' के माथे का काला कलंक है और सिद्धान्त और प्रतिष्ठा की दृष्टि से घृणित और अपमान-जनक समझे जाते हैं। स्विट्ज़रलैंड की पुलिस की दृष्टि बचा कर चकला चलाना असम्भव माना जाता है, क्योंकि शिक्षित और सेवा-भाव वाली पुलिस और सुशिक्षित जनता के बीच पूरा सहयोग है।

सड़कों पर युवतियाँ घूमती-फिरती हैं, पर पुलिस से वे बड़ी सतर्क रहती हैं। चलते हुए आदमियों को छेड़ना तो दूर रहा, उनसे वे बात-चीत करना भी ख़तरे से ख़ाली नहीं समझतीं। पुरुषों को ही बातचीत शुरू करनी होती है, तब वे आगे क़दम बढ़ाती हैं। यहाँ की वेश्याओं ने बतलाया—"पुलिस की सख़्ती

के मारे हम परेशान हैं, अन्यथा विदेशी यात्रियों से हम लोग बहुत कमा लें। अगर हम रास्ते में बातें भी करती हैं तो वे हमें पकड़ कर जेल में बंद कर देते हैं और जुर्माना भी करते हैं। यदि सड़क पर न घूमें तो अच्छे ग्राहक कहाँ से मिलें ?"

अधिकांश स्त्री और पुरुष सड़कों ही पर मिल-जुल लेते हैं। शराबखाने में भी युवतियाँ प्रायः आया-जाया करती हैं। इन शराबखानों में केवल शराब बिकती ही नहीं, प्रत्युत आगन्तुक स्त्री और पुरुष वहाँ शराब पीते और पिलाते भी हैं। वहाँ युवतियाँ बैठी रहती हैं, और ऐसे हाव-भाव दिखाती हैं कि पुरुष उनकी ओर बरबस आकृष्ट हो जायँ। मन-चले युवक उनसे वार्तालाप शुरू करके प्यार की बातें करने लगते हैं और ऊपर प्राइवेट कमरों में चले जाते हैं।

स्विट्ज़रलैंड में विदेशी वेश्यायें थोड़ी हैं। किसी बेकार, साधनहीन विदेशी व्यक्ति को वहाँ के अधिकारी अपने मुल्क में नहीं ठहरने देते और उसी क़ानून के अन्दर वे वेश्याओं को भी निकाल बाहर करते हैं।

चकलों के तोड़े जाने से पहले सन् १९२४ और १९२५ तक में स्विट्ज़रलैंड में विदेशी युवतियों की काफी भीड़ रहती थी, जिनमें अधिकांश फ्रेंच होती थीं। अब भी जो कुछ विदेशिनें हैं उनमें अधिकांश फ्रांस की हैं। दूर दूर के देशों के यात्री इस देश के रमणीय दृश्य देखने और जल-वायु परिवर्तन के लिए आया करते हैं। यह मुल्क बहुत ठंडा है, और आनेवाले ज़्यादातर अमीर

होते हैं। इसीलिए वे मन बहलाने और व्यभिचार के लिए सुन्दरी युवतियाँ चाहते हैं। एक मैडम ने बतलाया—"मेरे पास बारह बारह फ्रेंच लड़कियाँ रही हैं। पैरिस में मेरे दो मित्र हैं जो कन्या-विक्रय की दलाली का काम करते हैं। जब जितनी लड़कियों की जरूरत होती थी तब उतनी लड़कियाँ भेजकर वे पूरी कर देते थे। अब तो पुलिस-वाले बड़ी सख्ती करने लगे हैं। मैंने अपने मकान में बोर्डिङ्गहाउस खोल रक्खा है, जिसमें छः कमरे हैं। मैंने वे सब कमरे वैसी ही युवतियों को दे रक्खे हैं जो व्यभिचार करती हैं, अन्यथा मुझे कौन इतना किराया दे? ये लड़कियाँ दिन में फूल काढ़ने का काम करती हैं और शाम को घूम-फिर कर ग्राहक जुटा लाती हैं। इनमें अधिकांश २१ साल से ऊपर की उम्र की हैं।"

उसी महिला ने बतलाया—"सन् १९२५ में लाइसेन्सशुदा मकानों के बंद होने के थोड़े ही दिन पहले जेमनास्टिक का बड़ा भारी समारोह हुआ था। यूरुप भर के लोगों की भीड़ इकट्ठी हुई थी। हम लोगों ने पहले ही से काफी युवतियाँ इकट्ठी कर रक्खी थीं, पर जो आता, वह फ्रांस की सुन्दरी चाहता, अतः तार भेज कर पैरिस से एक दर्जन लड़कियाँ और मँगवानी पड़ीं। उस वक्त हम लोगों ने बहुत पैसा कमाया था, अब तो यह रोजगार मिट्टी हो गया। मलाई निकल गई और अब हमें छाछ पर गुजारा चलाना पड़ता है। सरहद पर बड़ी कड़ी निगरानी है। अफसर लड़कियों से तरह तरह के सवालात पूछते हैं कि तुम किसके पास

जाओगी, किस शहर में रहोगी, क्या करोगी, कब वापस जाओगी। अगर यात्रा करनेवाली लड़की जवाब देने में ज़रा भी चूकी, या झिझकी, तो समझो कमबख़्ती आ गई। इसलिए चलती-पुरज़ी लड़कियाँ ही यहाँ आ पाती हैं जो हर तरह से अधिकारियों की आँखों में धूल झोंक सकें।

जाँच करने पर पता चला कि लड़कियाँ होटलों में बहुत कम वेतन पाती हैं। इसीलिए वे कितनी ही मजबूरन आदमियों की तलाश करती फिरती हैं। इन होटलों में अधिकांश विदेशी लड़कियाँ काम करती हैं जिनके आकर्षण के कारण लोग खाने-पीने और दिल बहलाने के लिए वहीं जाते हैं। इसी अवसर पर युवतियाँ किसी न किसी से रात का समय नियत कर लेती हैं। काम के घंटों में वे होटल के बाहर तक नहीं जा सकतीं, जब तक सञ्चालक की विशेष आज्ञा न प्राप्त कर लें। बहुत से अमीर लोग पैसा दे-लेकर, और मैनेजरों को ख़ुश करके अपनी पसंद की हुई प्रेयसी को छुट्टी दिलवा देते हैं, या अपना पता लिखा जाते हैं, जिससे युवतियाँ उनके घर रात में पहुँच जाती हैं।

स्विस युवतियाँ विदेशों को कम ले जाई जाती हैं। केवल उन लड़कियों की कुछ मिसालें मिलती हैं जो कनाडा और अरजेन्टाइन को ले जाई जाती हैं।

२६—टर्की

टर्की ने सन् १९०४ और १९१० के समझौते पर दस्तख़त नहीं किये थे और न १९२१ के स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को दमन करने वाले मसविदे पर ही। पर-राष्ट्र-विभाग के मंत्रि-मंडल की सहायता से कमीशन-वाले तत्सम्बन्धी जाँच कर सकने में समर्थ हुए। महिला सौदागरों और वेश्याओं के मकानों पर जाकर, विदेशी राजदूतों से दरियाफ़ कर, दलालों से मिलकर, एवं सरकारी रिपोर्टों को देखकर, उन्हें वास्तविक परिस्थिति मालूम हो सकी जिसके आधार पर वर्त्तमान रिपोर्ट तैयार की गई।

टर्की के नागरिकों और अधिकारियों ने यह बात स्वीकार की कि यूरुपीय महायुद्ध से पहले टर्की में, विदेशी स्त्रियों, ख़ासकर बलकान की युवतियों, की भरमार थी। उस समय मुसल्मान महिलाओं को चकले में दाख़िल होने की क़ानूनन मनाही थी। अब यह प्रतिबन्ध उठा लिया गया है। चूँकि हरम रखना क़ानूनन नाजायज़ क़रार दे दिया गया है, इसलिए हरमों से निकाली हुई, या दाख़िल होने की ख़्वाहिश रखनेवाली औरतों को वेश्या बनना पड़ा है। जबसे उनकी भीड़ होने लगी है, तबसे टर्की में विदेशी युवतियों का आना कम हो गया है।

अठारह साल से कम उम्र की लड़कियों को चकले में दाखिल होना मना है, परन्तु पुलिस का कहना है कि अठारह साल से कम उम्र की सैकड़ों षोडशियाँ देश में वेश्यावृत्ति कर रही हैं और उनको पकड़ने में इसलिए कठिनाई होती है कि उनके सुधार के लिए या उनके बालिग होने की अवस्था तक के लिए सरकार ने सुधार करनेवाले कोई स्कूल नहीं बनाये।

सन् १९२५ में कुस्तुन्तुनिया में २४२९ तुर्की वेश्यायें थीं और ४८० विदेशी युवतियाँ।

टर्की की पुलिस के पास इस सम्बन्ध की पूरी रिपोर्ट मौजूद है, यहाँ तक कि चकलों के मालिकों, और वेश्याओं के अँगूठों के निशान, फोटो और दस्तखत, सब कुछ मौजूद है। समय समय पर जो कन्या-दलाल पकड़े गये, उनकी तस्वीरें और ऐमालनामे भी पुलिस-आफ़िस में रक्खे जाते हैं।

इतने पर भी पुलिसवाले कुस्तुन्तुनिया के दूषित वायुमण्डल को सुधारने में असमर्थ हैं। उसके कई कारण हैं। टर्की में कोई क़ानून ऐसा नहीं है जो व्यभिचार द्वारा पैसा पैदा करना, या करवाना, अनुचित ठहराता हो। कोई व्यक्ति कन्या-दलालों के अपराध में तब तक नहीं पकड़ा जा सकता जब तक उसने वेश्या या युवती को शारीरिक या आर्थिक हानि न पहुँचाई हो। उसका साबित होना भी एक टेढ़ी खीर है। अपराध साबित करने के लिए काफ़ी अच्छी गवाही की ज़रूरत पड़ती है। हाँ यदि कठोर

रह साल से कम उम्र की लड़की को वेश्यावृत्ति करते या करवाते हुए किसी आदमी को अगर पुलिसवाले पकड़ पाते हैं और यह साबित कर देते हैं कि युवती की अवस्था १८ वर्ष से कम उम्र की है, तो मकान-मालिक, दलाल और उसका प्रेमी सभी दण्ड पाते हैं। दलालों को देश-निकाले का दण्ड देने का कोई विधान नहीं है। पुलिस का नैतिक आचरण भी बहुत अच्छा नहीं है। ऐयाशी, बदचलनी और घूसखोरी उनकी अपनी चीज़ है। जो पुलिसवाला वेश्याओं के मुहल्ले में नियुक्त होता है वह अपने को सबसे ज्यादा भाग्यवान् समझता है।

परन्तु यह सन् १९२५ की बात है। इस बीच में कमालपाशा की सरकार ने पुलिस-विभाग को बहुत ऊँचा उठाया है और अब क़ुस्तुन्तुनिया की पुलिस दुनियाँ की अच्छी पुलिसों में से एक गिनी जाती है।

यहाँ प्रत्येक युवती और वेश्या दलाल के चार्ज में रहती है। इन दलालों का प्रभाव वेश्याओं पर जितना टर्की में देखा गया, उतना और किसी मुल्क में नहीं है। क़ुस्तुन्तुनिया में सड़क के एक तरफ़ वेश्याओं के मकान हैं और दूसरी ओर काफ़ी और चाय पीने की दूकानें और होटल हैं। इन्हीं दूकानों पर दलाल बैठे रहते हैं। ये लोग सफ़ेद खड़िया की बत्ती हाथ में लिये हुए एक, दो, तीन जितने ग्राहक आते हैं, उनकी तादाद साइनबोर्ड पर लिखते जाते हैं। अगर वेश्या ने ज़रा भी बेईमानी की तो

वे उन्हें मारते-पीटते हैं, ताले के अन्दर बन्द कर देते हैं और पैसा वसूल कर लेते हैं। कहते हैं कि दलाल लोग वेश्याओं के पास एक दमड़ी भी नहीं छोड़ते, सिर्फ़ उसे खाना, कपड़ा और थोड़ा रुपया हाथ-ख़र्च के लिए दे देते हैं, बाक़ी ख़ुद हज़म कर जाते हैं। तुर्की हूरें जगत भर में अपनी लामिसाल ख़ूबसूरती के लिए विख्यात हैं। निःसन्देह वहाँ की आर्थिक अवस्था इतनी ख़राब है और उनका जीवन इतना कष्टकर है कि वे हज़ारों-लाखों की तादाद में टर्की छोड़कर, मिस्र, हिन्दोस्तान, और यूरुपीय देशों को चली जायँ, पर दलाल उनसे ऐसे ऐसे कंट्राक्ट लिखाये रहते हैं और झूठे काग़ज़ों पर दस्तख़त या निशान ले लेते हैं जिससे वे लाचार रहती हैं। दस-पाँच पौंड देकर, सौ-दो सौ पौंड प्राप्त होने के दस्तख़त ले लेना मामूली बात है। टर्की में क़र्ज़ का क़ानून बहुत सख़्त है। कोई मक़रूज़ आदमी बिना अपने महाजन की सम्मति के देश की सीमा से बाहर नहीं जा सकता, अतः इन युवतियों का जीवन अपने महाजनों के हाथ बिका रहता है।

जाँच-कमेटी के एक मेम्बर ने लिखा है—

"हम लोग, क़ुस्तुन्तुनिया में एक ऐसे आदमी से मिले जिसके तीन चकले चल रहे थे। वह हमें अपने घर ले गया और वहाँ उसने हमें कितनी ही सुन्दरियाँ दिखलाईं। उसने कहा कि मुझे इन सबको बेचना है जो कोई इनका क़र्ज़ा चुका दे, उसे

हम प्रामेसरीनोट भर पाये करके दे देंगे और अपना कमीशन लेकर इन्हें उसके साथ कर देंगे।

टर्की में विदेशी स्त्रियों के आसकने की बड़ी कड़ाई और कठिनाई है। देश ही में उनकी इतनी भरमार है और देश की आर्थिक परिस्थिति ऐसी कमजोर है कि विदेशी वेश्याओं द्वारा, देश के धन का बाहर जाना, वहाँ की सरकार बर्दाश्त नहीं कर सकती।

हाँ, टर्की होकर हजारों यूरुपीय सुन्दरियाँ ईजिप्ट, सीरिया, अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और मैक्सिको ले जाई जाती हैं। इनके उतरने-चढ़ने से देश को आर्थिक लाभ ही होता है, अतः सरकार उसमें कोई आपत्ति नहीं करती। वैसे भी मित्र राष्ट्रों के नागरिकों को अपनी सीमा के अन्दर से गुज़रने देना ही पड़ता है।

तुर्की युवतियाँ विदेशों में भेजी जाती हैं और बेची जाती हैं। पासपोर्ट मिलने की कठिनाइयाँ टर्की में बिल्कुल नहीं हैं। विवाहित स्त्रियों के लिए अपने पति की स्वीकृति के रूप में एक चिट्ठी चाहिए, बस पासपोर्ट कहीं का भी मिल जायगा। अविवाहितों के लिए उनके संरक्षकों की सम्मति काफी है। बहुधा नाबालिग़ लड़कियों के बाहर भेजे जाने में माँ-बाप की स्वयं ही ख्वाहिश और तिकड़म रहती है।

कुस्तुन्तुनिया की वेश्याओं, और मिसों की तादाद इस प्रकार है—

	रजिस्टर्ड	ग़ैररजिस्टर्ड	मिसें	टोटल
मुसल्मान	१०७७	२९८	५१८	१८९३
ग्रीक	९७१	२०५	२९८	१४७४
आरमीनियन	२७९	६६	५६	४०१
हिब्रू	१६५	१५	२२	२०६
टोटल	२४९२	५८८	८९४	३९७४

इनके अलावा टर्की में कुछ अँगरेज़, फ्रेंच, जर्मन और पोलिश वेश्यायें भी हैं, पर उनकी संख्या बहुत कम है।

३०—संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

अमेरिका, संसार भर में सबसे धनाढ्य और ऐयाश राष्ट्र गिना जाता है। जहाँ वैभव है, वहीं ऐयाशी है,—यही वर्त्तमान युग का नियम है। जहाँ एक ओर अमेरिका सबसे समृद्धिशाली है, वहाँ दूसरी ओर नैतिक दृष्टि से वह सबसे हीन है। अमेरिका के लोग उस बात को अपनी सभ्यता के अनुसार नैतिक महत्त्व देते ही नहीं, जो हमारी दृष्टि में सबसे पवित्र और सुरक्षित रखने की वस्तु है।

अमेरिका नया राष्ट्र है। वहाँ नई आबादी है और नया तौर-तरीक़ा है। नई बस्ती है, दस दस, बीस बीस खण्ड के नये मकान हैं और नई अर्वाचीन सभ्यता है। कहने का मतलब यह है कि वहाँ सब कुछ नवीनता के कलेवर से आच्छादित है।

अमेरिका गोरे राष्ट्रों के सम्मिश्रण से बना है। अँग्रेज, फ्रांसीसी, जर्मन, डच, इटालियन, पुर्त्तगाली आदि सभी गौराङ्ग देशों के निवासी वहाँ जाकर बस गये थे जिनके सम्मिश्रण से एक वर्णशङ्कर क़ौम पैदा हुई, जिसका नाम अमेरिकन है। इनमें अँगरेजों की संख्या अधिक है। बड़े बड़े वैज्ञानिकों का कहना है कि भिन्न भिन्न क़ौमों के सम्मिश्रण से जो जाति उत्पन्न होती है वह रूप, गुण, बुद्धि और बल में सर्वोत्तम होती है। इसे

अँगरेज़ी में Cross Breed कहते हैं। हमारे अमेरिकन नागरिकों में प्रायः ये सभी गुण प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं।

अमेरिका में लड़के और लड़कियाँ साथ साथ रहते, पढ़ते और शिक्षा पाते हैं। उनके लिए एक ही होस्टल हैं जिनके कमरों में युवक और युवतियाँ एक ही साथ निवास करते हैं। हैवलाक ईलिस, कन्हैयालाल गौबा, और विद्यालयों के प्रिंसपलों का कथन है कि यहाँ बारह तेरह साल से ऊपर की उम्र की शायद ही कोई लड़की अछूती बचती है। जिसे हम व्यभिचार कहते हैं, उसे यहाँ साधारण मनोविनोद की बात समझते हैं। स्कूलों और कालिजों की अधिकांश लड़कियाँ, सायंकाल, किसी न किसी युवा के साथ मोटर पर घूमते हुए, सिनेमा या थियेटरों में नंगे नाच देखते हुए, या होटलों में चाय-पानी और आराम करते हुए देखी जाती हैं। अमेरिका के प्रसिद्ध विचारपति, जज लिंडे का कहना है कि हमारे यहाँ की बहुसंख्यक युवतियाँ, विवाह होने से बहुत पहले ही, स्त्रियोचित आनन्द उठा चुकी होती हैं, कितने ही युवाओं के साथ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर चुकी होती हैं, सन्तान-वृद्धि-निग्रह के शास्त्र में निपुण होती हैं, कई बच्चों की जननी हो चुकी होती हैं, या दवाइयों के प्रयोग से सैकड़ों भ्रूण हत्यायें करने के प्रयोग में दक्ष होती हैं। ऐसी युवतियाँ जब विवाहित जीवन में दाखिल होती हैं तब उनके कितने ही प्रेमी होते हैं जिन्हें वे, अपने देश की स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता के कारण, पति की उपस्थिति में भी, सन्तुष्ट करती रहती हैं।

ऐसे देश में पेशेवर वेश्यायें कितने दिन टिक सकती हैं? दलालों का कथन है कि अमेरिकन पोडशियाँ सुन्दरता में, सलोनेपन में, स्वास्थ्य में, किसी से कमजोर नहीं पड़तीं, प्रत्युत सबसे ज्यादा हँसमुख, युवाओं के साथ रहने में सबसे ज्यादा आजाद और फैशन में सबसे बढ़कर अपटू-डेट होती हैं। वे बाईस साल की अवस्था तक आम तौर पर स्कूलों के बोर्डिंग हाउसों और कालिज के होस्टलों में रहती हैं। उनकी शिक्षा सोने में सुहागा मिला देती है। न केवल साथ के विद्यार्थियों के साथ, प्रत्युत शहरों के प्रतिष्ठित लोगों और अमीरज़ादों के साथ भी उनकी मैत्री होती है। इन लड़कियों को पैसे का मोह भी नहीं होता। हेयर ड्रेसिंग सैलून में बाल कटाने का बिल चुका दीजिए, उम्दा जूता खरीद दीजिए, या सेन्ट की शीशी नज़र कर दीजिए, वे .खुश हो जाती हैं, अतएव स्त्रियों के व्यापारी अमेरिका को बिल्कुल गया-बीता क्षेत्र समझते हैं।

अमेरिका में वैज्ञानिक आविष्कारों की धूम रहती है। मशीन का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है, अतएव वहाँ बेकारी सबसे ज्यादा है। हमारे एक मित्र एक बार, कैलीफोरनिया के एक काटन-मील (कपड़ा बनाने के कारखाने) में गये। उस मील में १२०० लूम थे और ४०००० स्पिंडिल थे। इतने बड़े कारखाने के अन्दर केवल दस युवतियाँ घूम-फिर रही थीं और बाहर के कमरे में मैनेजर साहब स्वयं बैठे थे। सारी मशीनरी अपने आप चलने वाली थी। जहाँ कहीं धागा टूट जाता वहीं एक युवती

जाकर उसे जोड़ देती। युवतियाँ इसलिए रख छोड़ी गई थीं कि पुरुषों से पौनी तन्ख्वाह पर वे अच्छा काम करती थीं और उनमें से दो-तीन मैनेजर साहब की प्रेयसी भी थीं। जिस मील को हिन्दोस्तान में आज भी दो-ढाई हजार आदमी चलाते हैं, उसे वहाँ दस व्यक्ति परिचालित करते हैं। इसीलिए अमेरिका में लाखों नहीं, प्रत्युत करोड़ों आदमी बेकार हैं, जिनमें स्त्रियाँ ही ज्यादा हैं। ऐसी अवस्था में वे जिस सभ्यता में जन्मीं और पली हैं, उसके अनुसार स्वभावतः वे अपनी सुन्दरता, यौवन और जननेन्द्रिय जैसी ईश्वरदत्त वस्तुओं का उपयोग या दुरुपयोग कर, जीवन वहन करती हैं। अमेरिका में दलाल तो बहुत कम हैं, पर वे लड़कियाँ स्वयं ही अपना व्यापार अपने हाथों चलाती हैं।

सयुक्त राष्ट्र अमेरिका में सब मिला कर ४८ प्रान्त हैं जो फेडरेल गवर्नमेंट या संघ-शासन द्वारा एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। किसी भी प्रान्त में न तो लाइसेन्सशुदा मकान हैं और न रजिस्टर्ड वेश्यायें। इस दशा में किसी के डाक्टरी मुआयने भी नहीं होते।

इस देश में इंग्लैंड और फ्रांस की सैकड़ों सुन्दरियाँ आती-जाती हैं। छिपी हुई पेशेवर वेश्यायें भी आती हैं, ज्यादातर गैर पेशेवर मिसें होती हैं। अमेरिका में प्राइवेट वेश्यावृत्ति करने वाली, क़रीब ४० फ़ीसदी विदेशिनें हैं।

अमेरिकन लोग प्रायः यात्रा-प्रिय होते हैं और एक प्रान्त से

दूसरे प्रान्त में जाते रहते हैं। वे प्रायः युवतियाँ ले जाते हैं और साथ में रखते हैं। वे स्त्रियाँ प्रायः कम उम्र की, अर्थात् सोलह से अठारह के बीच की अवस्था की होती हैं। अमेरिकन क़ानून के अनुसार १८ वर्ष से नीचे की उम्र की युवतियाँ, लड़कियाँ हैं और नाबालिग़ हैं।

विदेशों से लाई जाने वाली स्त्रियों पर पुलिस की नज़र की काफ़ी सख्त रहती है। चूँकि अमेरिका में लाइसेन्सशुदा चकले नहीं हैं, अतः महिला-व्यापारियों को उनको रखने और वेश्या-वृत्ति का पेशा कराने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। अमेरिका की स्त्रियों में बेकारी का होना भी इस पेशे की बढ़ती का मुख्य कारण है।

कम उम्र की चीनी लड़कियाँ बोस्टन में दर्जनों हैं। चीनी लोग, जो जूता बनाने का रोज़गार करते हैं, वे उन्हें अपनी लड़की बता कर इस देश के अन्दर ले आते हैं। काली, भूरी और पीली जातियों के स्त्री-पुरुषों के लिए अमेरिका जाने में बड़ी कठि-नाइयाँ हैं। क़ानूनी रुकावटों के कारण वहाँ का बाशिन्दा होना तो और भी मुश्किल है। अमेरिका के बन्दरगाहों, स्टेशनों, वेटिंग-रूमों और बाज़ारों में काली या पीली चमड़ी वाले आदमी की बेइज़्ज़ती भी बहुत होती है। अमेरिका के बड़े बड़े होटलों में, गोरी क़ौमों के अलावा, और किसी को स्थान नहीं मिलता। कई बार हिन्दोस्तानी यात्री खाना खाने के लिए होटलों में गये और निकाल दिये गये। बड़े बड़े राजा-महाराजे भी उन शाही

होटलों में प्रवेश नहीं कर पाते, जहाँ गोरे युवक और युवतियाँ खाते-पीते, मनोरञ्जन करते और रहते हैं। अमेरिकन युवती के साथ किसी काले आदमी को देख कर, वहाँ के युवा लाल पीले हो जाते हैं। रेड इन्डियन्स और नीग्रो तो आज भी उस परिस्तान में इन्हीं कसूरों के पीछे जिन्दा जला दिये जाते हैं, अतः पाठक समझ गये होंगे कि अमेरिकन युवक और युवतियों के आदान-प्रदान गोरी जातियों तक ही सीमित हैं।

अमेरिका की सरकार अपनी लड़कियों या युवतियों को बाहर किसी भी देश में जाने से नहीं रोकती। अठारह साल की युवती को, चाहे वह विवाहित हो, या कुमारी, उसके इच्छानुसार पास-पोर्ट मिल सकता है। इससे कम की अवस्था की लड़की को अपने पिता या संरक्षक का इस आशय का पत्र पेश करना होता है कि उन्हें इसके विदेश जाने में कोई एतराज नहीं है।

अमेरिकन लड़कियाँ ज्यादातर कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा, और पनामा जाती हैं। क्यूबा और पनामा के लिए पासपोर्टों की भी जरूरत नहीं पड़ती। वहाँ पहुँचने पर कोलोन और पनामा शहर की चहारदीवारियाँ उनके स्वागत के लिए सदा फाटक खोले खड़ी रहती हैं। एक दलाल ने बतलाया—"अमेरिकन लड़कियों को बाहर ले जाने में हम सुखी रहते हैं, क्योंकि इस व्यापार में ये स्वयं इतनी सिद्धहस्त होती हैं कि हमारे और अपने दोनों ही के लिए, किसी तरह की कठिनाई नहीं आने देतीं।" हमें विश्वस्त रिपोर्ट मिली है कि अमेरिका के टेक्सास, अरीजोना

और कैलीफोर्निया नामक प्रदेशों से हजारों ही लड़कियाँ हर साल मैक्सिको जाती हैं, या दलालों द्वारा ले जाई जाती हैं। इनमें से बहुतों को, जो बेकारी में मारी मारी फिरती हैं, दलाल बहका कर ले जाते हैं। उनसे वे कहते हैं कि हम मैक्सिको में तुम्हें अपने आफिस में नौकर रख लेंगे, या अपने अमुक दोस्त के यहाँ काम पर रखा देंगे। वे असली परिस्थिति से तभी परिचित हो पाती हैं जब हफ़्ते दो-हफ़्ते बाद उन्हें ग्राहकों को ख़ुश करना पड़ता है, अपना शरीर और यौवन बेचना पड़ता है और आमदनी का अधिकांश भाग अपने मालिक या मालकिन को मजबूरन दे देना पड़ता है।

३१—पूर्वीय देश

पूर्वीय देशों की स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार की समस्या पर प्रकाश डालने के लिए लीग आफ नेशन्स ने अलग से एक दूसरा ही कमीशन नियुक्त किया था, जिसके प्रधान फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् मोशिये रेनाल्ट थे। इस कमीशन के सदस्य इस प्रकार थे—

हिज़ एक्सेलेन्सी मोशिये रिनाल्ट	(फ्रान्स)	अध्यक्ष
मोशिये वोरज्यूज़	(")	सदस्य
डाक्टर वामर	(जर्मनी)	"
मोशिये इसीदर माश	(वेल्जियम)	"
मैडम मालथे	(डेन्मार्क)	"
डानविंसेन्ट पालमरोली	(स्पेन)	"
मिस ग्रेस एवाट	(अमेरिका)	"
डा० सेलिस्टीनो फ्लोगेरियो	(इटली)	"
डोना क्रिस्टीना गुस्टीनानी वन्दिनी	(")	"
एम-इटो	(जापान)	"
डाक्टर कुसामा	(")	"
हिज़ एक्सेलेंसी डा० चोचको	(पोलैंड)	"
मैडम रोमनी सियानो	(रूमानियाँ)	"
सर हेनरी ह्वीलर	(ब्रिटेन)	"
एम० उडोल्फो सीनरा	(उरुग्वे)	"

ट्रैवलिंग कमीशन, जो देश-विदेशों में घूम घूमकर जाँच करता रहा, इस प्रकार था—

मिस्टर बास्कोम जांसन	(प्रेसीडेन्ट)
डाक्टर सन्डकिस्ट	(सदस्य)
एम-पिन्डर	(,,)
डेम रेचल क्राउडी	(,,)

जाँच-कमीशन ने, जो जाँच की है, वह अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से की है। यह जानने की पूरी कोशिश की गई है कि एशिया से दूसरे महादेशों का क्या सम्बन्ध है और एशिया के विभिन्न प्रदेशों में इस राक्षसी प्रथा का कैसा दौर-दौरा है।

पहली बात के सम्बन्ध में कमीशन का यह कथन है कि पश्चिमी देशों से गोरी स्त्रियाँ पूर्वीय देशों में लाई जाती हैं, पर इस तरह की मिसालें बहुत ही कम हैं कि चीन-जापान, हिन्दुस्तान, फ़ारस वग़ैरह पूर्वीय देशों की स्त्रियाँ पश्चिमी प्रदेशों में अर्थात् यूरुप या अमेरिका ले जाई जाती हों।

पश्चिमी देशों से रूस की महिलायें और बालिकायें बहुत अधिक तादाद में पूर्वीय देशों, खासकर चीन, में लाई गई हैं, या स्वतः कठिनाइयों के कारण चली आई हैं। बीस-तीस साल पहले यूरुपीय महिलाओं की माँग जितने ज़ोरों पर थी उतना अब नहीं रही है। अनेक कारणों से यह दिन पर दिन घटती जाती है।

एशियाई देशों में, सबसे ज्यादा चीनी स्त्रियों और बच्चियों की तिजारत होती है। तादाद में दूसरा नम्बर जापानी राष्ट्र के अन्तर्गत जापान, कोरिया, और फ़ारमूसा की स्त्रियों का है। मलाया, स्याम, फ़िलीपाइन्स, इराक़, फ़ारस, सीरिया और हिन्दोस्तान की स्त्रियों की तादाद बहुत ही कम है। भारतवर्ष के सम्बन्ध में तो यह समस्या कमीशन की जाँच की दृष्टि से नगण्य ही कही जा सकती है। हिन्दोस्तान की स्त्रियों को दूसरे देशों में व्यभिचार करते, या वेश्यावृत्ति करते पाना बहुत ही कठिन है।

दूसरे एशियाई देशों की स्त्रियाँ भी, जो विदेशों में जाती हैं, वे अपनी ही क़ौम के लोगों के बीच में बस जाती हैं। चीन की वेश्यायें दक्षिणी समुद्र के किनारे वहीं फैली हुई हैं जहाँ जहाँ चीनी लोग जाकर बस गये हैं। ये वेश्यायें आम तौर पर दूसरे देशों के मनुष्यों से सम्बन्ध नहीं रखतीं। जापानी वेश्यायें चीन के उन्हीं हिस्सों में ज्यादातर मिलती हैं जहाँ जापानी बहुत ज्यादा फैले हुए हैं और ये केवल अपने देश-वासियों से ही सम्बन्धित हैं। मलाया की सुन्दरियाँ नीदरलैंड इन्डीज से केवल ब्रिटिश मलाया ले जाई जाती हैं। वहाँ उनकी क़ौम के लोग आबाद हैं। ये बराबर उन स्थानों को चली जाती हैं जहाँ जिस टापू में मजदूर लोग काम के लिए जाते या ले जाये जाते हैं। दक्षिण भारत की तामिल वेश्यायें केवल ब्रिटिश मलाया ही जाती हैं जहाँ तामिल प्रान्त के हजारों मजदूर खुदाई और खेती के लिए

गये हैं। इसी तरह फ़ारस की युवतियाँ इराक़ में केवल फ़ारस के बाशिन्दों और यात्रियों से सहगमन करती हैं।

यूरुपीय देशों से आई हुई युवतियाँ भी जहाँ तक होता है, यूरोपियनों ही से सम्बन्ध रखती हैं।

इस व्यवसाय में पैसे का जितना महत्त्व है उतना किसी चीज़ का नहीं, इसीलिए धनी लोगों को सभी देशों और सभी क़ौमों की सुन्दरियाँ मिल जाती हैं। जो लोग स्त्रियों के रूप और यौवन की बिक्री करने के लिए दूकानें खोले बैठे हैं, या जो युवतियाँ अपने कपोलों की आभा और शारीरिक सौंदर्य वेचने के लिए निकली हैं, वे जहाँ मोल ज्यादा मिलता है वहीं ले जाई जाती हैं, या चली आती हैं। हमारे कहने का मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि साधारण परिस्थिति में, साधारण कोटि की युवतियाँ अपने ही देश के पुरुषों से सहवास करने में प्रसन्न रहती हैं।

सुदूर पूर्वीय देशों की स्त्रियाँ, चाहे वे पेशेवर [वेश्यायें हों, या पश्चिमी, सभ्यता के प्रभाव में आई हुई मनचली युवतियाँ इतनी निर्लज्ज और नङ्गे रूप में खुल कर नहीं खेलतीं जितनी पश्चिमी स्त्रियाँ खेलती हैं। पोलैंड और बेल्जियम की सड़कों पर, तथा फ्रांस और इटली के पार्कों में बेशरमी और बेहयाई के जो नज़ारे आँखों के सामने आते हैं उनका पूर्वीय देशों में सर्वथा अभाव है। निःसन्देह इसका मुख्य कारण उनकी प्राचीन सभ्यता, मितव्ययिता, सामाजिक सुप्रथा और जीवन का दृष्टिकोण ही है,

जिसमें बहुधा उनका पारलौकिक लक्ष्य, महत्त्व और ध्येय शामिल रहता है।

यूरुपीय सुन्दरियों की क़ीमत, एशियाई प्रदेशों में बहुत ज्यादा है। उनका रहन-सहन भी देशी वेश्याओं से बहुत ख़र्चीला और ठाट-बाट का होता है। उनका उपयोग, या दुरुपयोग या तो यूरुपीय समाज करता है, जो उन देशों में बसा हुआ है, या अमीर श्रेणी का नेटिव-दल भी, जवानी और नई दुनियाँ के फेर में पड़ कर, उनके पीछे तबाह हुआ करता है। बहुधा ऐसा देखा गया है कि जिन युवतियों को अपने देश में पचास रुपये माहवार की आमदनी नहीं थी, उन्हें अरब और हिन्दुस्तान के बेवक़ूफ़ों ने पाँच पाँच-सौ रुपये महीने पर रखेलियों की तरह नौकर रख छोड़ा है।

यूरुप और एशियाई स्त्री-पुरुषों के सम्मिलन से, यानी गोरे और काले ख़ून के सम्मिश्रण से जो एक नस्ल पैदा हुई है वह निहायत ख़ूबसूरत है, मानों ख़ुदाई साँचे में ढाल कर बनाई गई है। इन एँग्लोइंडियनों के जगह जगह पर जुदा जुदा नाम हैं। ये अपने को यूरोपियन वेश-भूषा में ही रखते हैं और उन्हींके तरजोअमल पर चलते हैं। इनमें हज़ारों भारतीय ईसाई भी शामिल हैं। जो काले हैं, देखने में कुरूप हैं, उनकी तो पूछ नहीं है, पर ज्यादातर ऐसे लोग हैं जिनके चेहरों पर ख़ूबसूरती खेल रही है, तथा जिन्हें यूरुप की स्वतन्त्रता प्राप्त है, जिनके खर्च का कुछ ठीक नहीं है, उन्हें छिप कर या खुल कर इस व्यवसाय की

शरण लेनी पड़ती है। भारत में भी इन लोगों ने अच्छी तरक्क़ी की है। कहा जाता है कि इनके घराने की छोकड़ियों ने तो यूरोपियन वेश्याओं को भी मात दे रक्खा है। इस कोटि के व्यक्तियों में सुन्दरता की हद होती है और इसलिए इनका यह रोज़गार चमकता भी ख़ूब है। इन्हीं लोगों के कारण विदेशों से आने वाली फ्रेंच और अमेरिकन युवतियों की आमदनी कम हो गई है। राजा-महाराजाओं, सेठ-साहूकारों और ज़मींदारों तथा ताल्लुक़ेदारों ने ऐंग्लोइंडियन समुदाय को काफ़ी तर्जीह दे रक्खी है।

इस पाप-वृत्ति में लगी हुई कुटिनियों और दलालों तथा व्यापारियों में ख़तो-किताबत बराबर चलती रहती है। सिंगापुर के एक पाप के ऐसे ही कारख़ाने से, एक आदमी ने मदरास की एक मैडम को ता० १०वीं जनवरी सन् १९३० को जो पत्र लिखा था, वह सिंगापुर की पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया और भारत-सरकार के पास भेज दिया गया। वह मौलिक पत्र, पाठकों को जानकारी के लिए, ज्यों का त्यों सानुवाद नीचे दिया जाता है—

Singapore, January 10th 1930.

"Madam,

I write you this letter on the chance of it reaching you, as I do not know your exact address. I have learned that you keep a house at Madras, and I have a

friend who would like to become an inmate if it can be arranged.

"She is a young French girl of 23 years, a pretty little *blonde* with black eyes. She would first like to know your terms and the net profit she might expect to make daily. Should her proposal be of interest to you, she asks that you should be so kind as to give her all particulars by letter—that is, the price of client's visits and you take of the amount paid by clients, at the same time stating how much per month it would cost her for personal expenses.

"I am authorised to tell you, if you can promise her that she will make 60 to 70 rupees per day net, you could give her that information by cable. In this way no time will be wasted and as she is free just now, she could leave immediately for Madras. To simplify matters, your cable could read like this (can count on 70 rupees net per day).

"In case you prefer to arrange things by letter, you can address your letter as follows :

"Mademoiselle···Poste Restante General Post Office Singapore.

" It is understood that all your expenses will be refunded immediately she arrives in Madras.

" In case you care to have a second girl, she has a friend, a nice little *brunette* who is quite willing to come with her.

" Thanking you in anticipation for your kindness and awaiting the pleasure of your news.

I am, Madam,

Yours respectfully...",

Letter addressed to

" Madame....

Poste Restante,

" General Post Office,

Madras (India)

[अनुवाद]

सिंगापुर १० वीं जनवरी १९३०

"श्रीमती जी,

यह पत्र मैं बिना आपका ठीक पता मालूम हुए ही आपके पास भेज रही हूँ, सोचती हूँ, शायद भाग्यवश आपको मिल जाय। मुझे पता चला है कि आप मद्रास में एक वेश्यालय की सञ्चा-

लिका हैं। यदि संभव हो तो मेरी एक सहेली इसकी सदस्या होना पसन्द करेंगी।

वह सुन्दर काले नेत्रों वाली २३ वर्ष की एक फ्रेंच लड़की है, पर वहाँ आने के पहिले वह आपकी शर्तें और यह जान लेना चाहती है कि उसकी रोज़ाना आमदनी कितनी हो सकेगी। यदि उसका प्रस्ताव आपको पसन्द हो तो उसकी इच्छा है कि आप अपनी संस्था का पूरा विवरण, पत्र द्वारा भेज दें जिसमें कि आगन्तुकों की फ़ीस है, उसमें आपके भाग और वहाँ रहने के उसके व्यक्तिगत मासिक खर्चें की चर्चा हो। मुझे आपको यह लिख देने का भी अधिकार है कि यदि आप उसे ६० से ७० रुपये तक रोज पैदा कराने का वादा कर सकें तो आप इसको सूचना कृपया तार से भेज दें, जिससे समय की बचत हो सके। इस समय वह बेरोज़गार ही है और किसी भी समय मदरास के लिए रवाना हो सकती है। आप तार में कुछ ऐसे शब्द लिख सकती हैं—"७० रुपया रोजाना की आशा की जा सकती है।"

यदि आप पत्र द्वारा तय करना चाहें तो—मेडमोसिलो··· पोस्टो रेस्टांटो···जनरल पोस्ट-आफिस, सिंगापुर के पते से लिख सकती हैं।

इस सम्बन्ध का आपका सारा व्यय यह मद्रास पहुँचते ही चुका देने का वादा करती है।

यदि आप एक और लड़की लेना चाहें तो इसी फ्रांसीसी युवती की एक बहुत ही सुन्दर छोटी-सी सहेली है जो उसके साथ आने के लिए बिल्कुल तैयार है।

आपकी कृपा के लिए पहिले ही से धन्यवाद। मैं आपके संदेश से मिलनेवाली प्रसन्नता की प्रतीक्षा कर रही हूँ।

आपकी कृपा की भिखारिणी।"

कलकत्ता ऐसी कुछ जगहों में अब पुलिस यूरुपीय चकलों में नई युवतियों को तब तक दर्ज नहीं करती, जब तक कि वे यह साबित न कर दें कि वे पहले ही से वेश्यावृत्ति करती रही हैं। इसका निर्णय होने में बहुधा हफ़्तों लग जाते हैं और इस बीच में वे अपना पेशा आरम्भ कर देती हैं। जिन्हें आज्ञापत्र नहीं मिलता वे कुछ दिनों के लिए दूसरे शहरों में चली जाती हैं और सार्टीफिकेटयाफ़्ता होकर कलकत्ते लौट आती हैं।

यूरुप से आनेवाली आधे से ज़्यादा युवती वेश्यायें उन दलालों के फेर में पड़ जाती हैं जो उन्हें आने का खर्च देते हैं। सारी रक़म अदा करने के वर्षों बाद तक युवतियाँ उन्हें आमदनी का नियत हिस्सा दिया करती हैं।

पिछले वर्षों में जब पूर्वीय देशों के बड़े बड़े शहरों में विदेशी वेश्याओं के लिए कोई अड़चन नहीं थी, तब विदेशी व्यापारी सैगून (Saigon) में अपना केन्द्र बनाये हुए थे, जहाँ वे तरह तरह की, देश देश की युवतियाँ और लड़कियाँ जमा रखते थे।

इनमें फ़्रांस की सुन्दरियों की अधिक क़द्र थी और वे ही अधिक तादाद में रक्खी जाया करती थीं। अब भी मध्य पूर्वीय देशों, कोचीन चाइना वग़ैरह में, जहाँ फ़्रांसीसियों का राज्य है, इंडो-चाइना के ज़रिये से फ़्रांसीसी लड़कियों को बहुत बड़ी तदाद ले जाई जाती है। इस बात का सुबूत मिलना नामुमकिन होता है कि इनका क़ाफ़िला चकले खोलने के लिए जा रहा है। सब प्रबन्ध पहले ही से ठीक रहता है। बड़े बड़े व्यापारियों और फ़र्मों के पत्र इन लोगों के पास रहते हैं, तथा आने-जाने का किराया भी पास होता है। ऐसी स्थिति में अधिकारियों के लिए, उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है।

रंगून में विदेशी चकलों का ज़बर्दस्त अड्डा था। दलाल लड़कियों को उन चकलों में छोड़ देता जहाँ उसकी कुटिनियाँ लगी रहतीं और स्वयं बड़े बड़े होटलों में रहता था। होटलों के अमीर-ज़ादों को फँसा फँसा कर लाना और उनसे जो कुछ आमदनी हो उसे सुबह नित्य ले जाना यही उसका काम था। रंगून में अब चकलों का चलाना नाजायज़ क़रार दे दिया गया है, फिर भी यूरुपीय देशों की युवतियों को पूर्वीय देशों में आने पर, दलालों के हाथों बड़ी ज़िल्लतें उठानी पड़ती हैं। ये कन्या-दलाल बड़े बदमाश और फ़ितरती होते हैं। यह एक फरासीसी लड़की का बयान है जिसे उसने रंगून में दिया था। स्वयं उसके पति ने ही उसके सम्बन्ध में दलाल का पार्ट अदा किया है। यह लड़की कहती है—

"सन् १९२६ के नवम्बर महीने से मैं यहाँ फ़लाँ सड़क पर

रह रही हूँ।···मेरा पति है। मेरा खान्दानी नाम···कुमारी है। ९½ साल से मैं अपने पति को जानती हूँ। ८½ साल मेरी शादी को हो गये। शादी करने से पहले मैं एक साल तक उसके साथ रहकर उसकी सारी बातों से वाक़िफ़ हो गई थी। उस बीच में तो उसने बड़ी सभ्यता से काम लिया। शादी होने के बाद से आज तक उसने कोई काम नहीं किया और मुझसे वेश्यावृत्ति करा करा कर गुज़र की। मेरा पति कारसीका टापू का रहने वाला है। वह शक्ल से बहुत सुन्दर, पर दिल का बड़ा काला है। जब जब फ़्रांस की पुलिस ने उसे पकड़ा तब तब उसने कारसीका के व्यापारियों का कोई न कोई पत्र दिखला दिया जिसमें लिखा रहता था कि मिस्टर···हमारा वैतनिक कर्मचारी है।

सन् १९२६ के सितम्बर महीने में मेरे पति ने मुझे··· भेजा। उसने मुझे सैगून का टिकट और पासपोर्ट लाकर दे दिया। सैगून में आकर मैंने······के लिए टिकट लिया। वह मुझसे मार्सले में जहाज पर आकर मिला था।

उसने मुझे फ़्रांस से तार दिया था कि वह अपनी भतीजी को ला रहा है। भतीजी से मतलब मिस··· से था।

सन् १९२७ की जुलाई में मैंने अपने पति को २५००० फ्रैंक भेजे और सन् १९२८ के सितम्बर में २०० स्वर्ण पेस्टर सैगून भेजे। उसने छठी सितम्बर को सैगून से तार भेजा कि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। मैं उससे मिली···उसके साथ में कई छोक-

ड़ियाँ थीं। मेरे पास उस वक़ १००. डालर (रु० ३५०) के नोट थे, जो उसने मेरे बेग से निकाल लिये।

कुछ दिनों के बाद उसने मुझसे कहा कि फ़लाँ जगह चलो। मैंने पहिले तो इन्कार किया, पर जब उसने भरी हुई पिस्तौल मेरे सीने से लगा दी तब मैं लाचार हो गई। वहाँ जाकर मेरी बड़ी दुर्गति हुई। कुतिया की तरह मेरी दुर्गति की गई।

एक दिन मेरे पति स्नानागार में अन्दर से कुन्दी बन्द किये नहा रहे थे कि मैं चुपके से भाग आई और पुलिस में रिपोर्ट कर दी, तब कहीं मेरी जान बची। सुना है कि वे मुझे वहाँ न पाकर कुछ समझ गये और घंटे भर के अन्दर ही कहीं रफ़ूचक्कर हो गये।"

हाँगकाँग, शंघाई आदि बड़े बड़े शहरों में जो अमेरिकन, अँगरेज, कनाडियन, और आस्ट्रियन वेश्यायें हैं वे इनसे बहुत अच्छी हालत में हैं और दलालों के पंजे में उस तरह नहीं हैं जैसे कि इनकी फ्रेंच बहनें होती हैं।

एशिया में, यूरुपीय स्त्रियों की तिजारत को प्रायः दो तरह की महिलायें ज्यादा प्रोत्साहन देती हैं। एक तो वे जो पेशेवर नाचने वाली और बालों में पुरुषों के साथ डेन्स करने वाली हैं और दूसरी वे जो शौक़ीन आर्टिस्ट हैं और कला-प्रेम के नाते आती हैं। ऐसी युवतियाँ दलालों के पंजे में आसानी से आ जाती हैं, क्योंकि दलाल ही उनकी जरूरत को रफ़ा कर सकते हैं। थियेटरों में, स्टेजों पर नाचने-गाने के बाद बड़े बड़े आदमी

इनकी प्रशंसा करने के नाम पर इनके चारों ओर मड़राते फिरते हैं और रात के भोजन के नाम पर समय नियत कर लेते हैं। ये घटनायें मध्य और सुदूर पूर्व की अपेक्षा निकट पूर्व में अधिक प्रचलित हैं। सबसे ज्यादा ऐसे कलाकार बेरुट (Beirut) शहर में पाये जाते हैं। फ्रांस, बेल्जियम, पौलैंड, स्वीजरलैंड, इटली आदि देशों की हजारों छोकड़ियाँ यहाँ पाई जाती हैं। पुलिस के क़ानून द्वारा प्रत्येक होटल में १० कलाविद युवतियाँ रह सकती हैं।

बग़दाद के प्रत्येक नाच-घर में चार यूरुपीय लड़कियाँ रह सकती हैं। ऐसे वहाँ पचासों स्थान हैं जिनमें नृत्य के नाम पर सञ्चालकगण खुलासा व्यभिचार करते हैं।

पूर्वीय देशों में रात के भोजन के बाद आम तौर पर नाचने-गाने का रिवाज है। मुसलमानी देशों में तो यह नित्य की चीज़ है। मिस्र, अरब, फ़ारस और हिन्दोस्तान के उत्तरीय शहरों में भी इसका खासा प्रचार पाया जाता है।

———

३२—रूस

पूर्वीय देशों में, रूसी स्त्रियाँ, स्त्रियों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का, खासा शिकार हुई हैं। बोल्शेविक लाल क्रान्ति के कारण, मंचूरिया में रहने वाले सैकड़ों रूसी खान्दान खानाबदोश हो गये हैं। उनकी आमदनी का जरिया नष्ट होगया है। उनके हजारों साथी-संगी, देशवासी, रूसी साइबेरिया से भाग कर चीन में पनाह लेने चले आये हैं। वाशिन्दे और पनाह की तलाश में आये हुए दोनों ही ग़रीबी के मारे हुए थे। उनमें स्त्रियाँ थीं और बच्चे भी थे। जो युवतियाँ थीं और सुन्दर थीं वे लाचार होकर वेश्या-वृत्ति के गरल-सागर में डूबीं। इनमें दो तरह की श्रेणियां की महिलायें थीं। एक तो वे जिन्होंने चीनियों के यहाँ शरण ली। मंचूरिया के सुदूर प्रदेश में शरण लेने, खाने-पीने, पहनने और रहने के बदले में उन्हें अपने स्त्रीत्व और सतीत्व की बलि चढ़ानी पड़ी। दूसरी वे थीं जो उत्तरीय मंचूरिया के रेलवे जोन में रहती थीं, या रूस से भाग कर वहाँ रहने वाली ग़रीब रूसिनों के पास आकर शरणागत हुई थीं। वहाँ के रूसी वाशिन्दों और नये आगन्तुकों दोनों ही की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी और चूँकि इनमें महिलाओं और सुन्दरी षोडशियों की तादाद बहुत थी, अतएव ये चीन के व्यापारिक केन्द्रों और बड़े बड़े शहरों में वहाँ वहाँ सर्वत्र घट गईं जहाँ जहाँ यूरुप की गौराङ्ग स्त्रियों की

माँग थी। यह प्रदेश चीन ऐसे विशाल देश और आसपास के विदेशी शासित प्रदेशों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सप्लाई का प्रमुख केन्द्र बन गया है।

क्रान्ति की सफलता के बाद रूस में जो लोग भागे थे उनकी दुर्दशा का वर्णन कतिपय लेखकों ने बड़े रोमाञ्चकारी शब्दों में किया है। यह भागने का क्रम अब भी जारी रहता है, क्योंकि पुराने अमीर-उमरा, रईसों शाहंशाह के खान्दानियों तथा सरदार-घरानों के लिए सोवियट रूस में कोई स्थान ही नहीं रह गया है। ये लोग दल बनाकर भागते हैं और उत्तरीय रूसी-मंचूरिया की सीमा पर, ऐसी जगह जहाँ जाँच-पड़ताल या पहरा न हो, मैदानों में सफ़र करते हैं। जाड़े की ऋतु ही इस साहसिक काम के लिए उपयुक्त होती है, क्योंकि बर्फ़ से जमी हुई नदियों को पार करने में आसानी रहती है, दलदल जम जाता है और आदमियों तथा घोड़ों को जाड़े में, जंगलों में काटनेवाली विषैली मक्खियों से भी परेशान नहीं होना पड़ता।

रूस के मध्यम श्रेणी के कुल किसान जाड़े में अपने खान्दान के सहित, किसी घोड़े या खचर पर सामान लाद कर भागते हैं। उनका लक्ष्य उस सीमा पर रहता है, जहाँ चीनी सरहद आकर मिलती है। रास्ते में बहुधा चीनी पथ-प्रदर्शक मिल जाते हैं जिनका पेशा ही यही है कि भागे हुए रूसियों या अन्यान्य देश-वासियों को सुरक्षित रूप में चीनी सीमा के अन्दर पहुँचा दें। इनकी सहायता के बिना सैकड़ों प्राणी पकड़ जाते हैं और प्राण-

दण्ड या कारावास की सजा पाते हैं। चीनी सीमा के अन्दर सही-सलामत पहुँच जाने पर भागे हुए लोगों का यह प्रयत्न होता है कि वे देश के उस भाग में जाकर बसें जहाँ उनके देश के, उनकी क़ौम के, उनकी सी भाषा बोलने वाले लोग आबाद हैं। वे चीनी पूर्वीय रेलवे लाइन के सहारे चलते रहते हैं जो दक्षिण की ओर २००० किलोमीटर तक जाती है। बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना करना होता है। पैसा पास में हो तो दिक़्क़तें आसान हो जायँ, पर पैसा...पैसा तो जो कुछ होता भी है वह चीनी सीमा के अन्दर आते आते तक समाप्त हो जाता है। पहले तो मार्ग-प्रदर्शक ही सारा माल-मता लेकर जिन्दगी का रास्ता दिखलाते हैं। रास्ते में चीनी सरायें मिलती हैं, या चीनी किसान भी उन्हें आश्रय दे देते हैं। यदि वे बराबर चलते रहें तब तो किसी तरह अपने लक्ष्य तक पहुँच भी जायँ, पर बहुधा लोग परेशान हो कर, थक कर, दिल तोड़ कर, किसी सराय या पड़ाव पर हफ़्ते दो हफ़्ते रुक जाते हैं। सरायवाला फिर तो ऐसा बिल पेश करता है कि वे उसे चुका सकने में असमर्थ रहते हैं। उनके सीधेपन और बेवक़ूफ़ी का भी लोग बहुत बेजा फ़ायदा उठाते हैं। वे पहले उन्हें ख़ातिर से महीना-पन्द्रह दिन रोककर फिर किराया और खाने का मूल्य माँगते हैं जिसमें वे मजबूर होकर अपने साथ की स्त्रियों को गिरवी रख देते हैं। मकान-मालिक या सराय का संचालक तब तक उन्हें जाने नहीं देगा जब तक वे उसके रुपयों का बन्दोबस्त न कर दें। वे बेचारे स्थानीय अधिकारियों तक पहुँच नहीं पाते,

पहुँच ही नहीं सकते, क्या करें, लाचार होकर वे मकान-मालिकों के पास धरोहर के रूप में अपनी कुमारी कन्याओं, बहनों और पत्नियों को छोड़ देते हैं। सरायवालों से बन्दोबस्त कर वे यह तय कर जाते हैं कि हमारी स्त्रियों को तुम धरोहर-स्वरूप तब तक अपने पास रक्खो जब तक हम पैदा करके वापस न आ जायँ। इस समझौते में कभी दो, कभी चार और कभी छः महीने का समय रहता है, जो यों ही बीत जाता है और पुरुष को बहुधा द्रव्यार्जन करके शीघ्र वापस आने में असफलता ही होती है।

चीनी लोग इस बात को ख़ूब जानते हैं कि जो अपनी बीबियों और लड़कियों को इस तरह मजबूरी छोड़े जा रहे हैं वे जल्दी कब आनेवाले हैं? धन और दौलत के पेड़ तो कहीं उगे नहीं हैं जिन्हें झाड़कर वे वापस आ जायँ? नौकरी और खेती-बारी के सिलसिले भी अर्वाचीन संसार में, इस बेकारी की बढ़ती हुई दीन दशा में आसान नहीं रहे हैं, जिनके ज़रिये बेचारे कुछ बचा लें और भला सूद पर उधार देने वाले ऐसे मुसीबतज़दों के के लिए चीन में कब मिल सकते हैं? जिनके पास स्त्रियाँ छूट जाती हैं वे बड़े काफ़िर, बड़े चालाक और पैसे के ग़ुलाम होते हैं। अतः ज़ाहिर है कि ऐसों के पास रहकर बेचारी अनाथ, दुख-दर्द की मारी अबलाएँ कब तक अपनी लज्जा और पवित्रता क़ायम रख सकती हैं? दस-पंद्रह दिन बीतते ही चीनी सौदागर उन पर अपना हक़ समझने लगते हैं। रूसी स्त्रियाँ हों, चाहे चीन की स्त्रियाँ हों, उनके लिए सब एक समान होती हैं और वे उन्हें बैठे बैठाये

खाना खिलाना और कपड़ा पहनाना नामंजूर करते हैं। जो हूर की परियों सी सुन्दर और कमसिन होती हैं उन्हें फिर भी आराम मिलता है। जमींदार उन्हें खुद अपनी रखेली की तरह रख लेते हैं, या किसी अमीर आदमी के पास रुपया लेकर मोल-तोल करके, गिरवीं रख देते हैं। जब तक उसका रूप और यौवन क़ायम है तब तक क़द्र है, अन्यथा गाँव के, या क़स्बे के चकले का रास्ता खुला है। साधारणतः चीनी सौदागर नई स्त्रियों को महीना दो महीना अपनी सराय में ही रखता है और यात्रियों से व्यभिचार करवाता है। जब वे पुरानी होने लगती हैं और दूसरा नया क़ाफ़िला आ जाता है तब वह पुरानी स्त्रियों को चकले में रख देता है। ज्यादा दिन बीत जाने पर भी जब उसके घर-वाले नहीं आते तब उस स्त्री को पुराने सामान के मोल बेच लिया जाता है। स्त्रियाँ विरोध करती हैं, सरायवाले के घृणित प्रस्तावों को पहले दिन सुनकर ही लाल-पीली हो जाती हैं, बहुत सी भागने का भी प्रयत्न करती हैं, पर सब व्यर्थ होता है, उनके विरोध की सुनवाई कुछ नहीं है, न वो चीनी आदमी रूस की भाषा समझता है और न रूसी महिलायें उस देश की भाषा में अपने खयालात का इज़हार कर सकती हैं। बेचारी रोती हैं, गिड़गिड़ाती हैं, पैरों पड़ती हैं, नाक रगड़ती हैं, जिन जिन तरीक़ों से एक अनबोला ग़रीब, बेबस और बेकस रहम और दया की फ़रियाद कर सकता है, वे हर तरह से आरज़ू और मिन्नतें करती हैं। चीनी बड़े संगदिल होते हैं, फिर इस पेशे के लोग, तो, मनुष्यता तक भूल जाते हैं। वे मिन्नतें करती हैं,

तो वे हँसते हैं। वे पैरों पड़ती हैं, तो वे लात मार कर दूर कर देते हैं। वे ज़िद करती हैं तो वे दुष्ट बदमाशों को बुलवा कर पिटवाते हैं और उनकी बेइज्जती करवाते हैं। एक एक दिन में, एक एक स्त्री को, मजबूरन पन्द्रह पन्द्रह और बीस बीस आदमी अपने कक्ष में लेने पड़ते हैं। उत्तरीय मंचूरिया के गाँव गाँव में क़िस्मत की मारी हुई दर्जनों ऐसी रूसी स्त्रियाँ मिलती हैं। सैकड़ों-हजारों मील तक चले जाने पर भी वहाँ हर जगह यात्री को रूसी महिला के दर्शन होते हैं।

कहा जा चुका है कि रूसियों की बहुत बड़ी संख्या चीनी पूर्वीय ज़ोन में बसी हुई है। इनमें ग़रीबी बहुत है, पर शक्ल-सूरत, पहनावा आदि सब कुछ गोरी सुन्दर स्त्रियों का सा है। इन लोगों ने स्त्रियों के क्रय-विक्रय और वेश्यावृत्ति को अपने व्यवसाय का एक अंग बना लिया है। चीन में रूसी स्त्रियों की माँग भी बहुत है। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों ने तथा अमेरिका ने चीन के कई स्थान और बन्दरगाह व्यापारिक सन्धि के आधार पर दबा लिये हैं। ऐसी सब जगहों में व्यापारिक केन्द्र हैं, जहाँ देश-विदेश के लाखों यात्री आया-जाया करते हैं। ये जगहें विदेशी बस्ती के नाम से पुकारी जाती हैं। चूँकि चीन में बहुधा उपद्रव हुआ करते हैं और अशान्ति भी रहती है, अतः पाश्चात्य देशों से आनेवाले लोग प्रायः अकेले ही आते हैं। द्रव्यार्जन करना ही उनका मुख्य उद्देश्य होता है और वे तीन या पाँच वर्ष के प्रवास के बाद अपने अपने देशों को लौट जाते हैं। इन आने-जाने वाले

यात्रियों की संख्या लाखों ही है। इनको अपने प्रवास-काल में काम-वासना की तृप्ति के लिए, खूबसूरत और गोरी स्त्रियों की जरूरत होती है। फ्रांस की युवतियों ने इस क्षेत्र में अपना क़दम बढ़ाना चाहा था, पर रूसी महिलाओं ने व्यभिचार की दर इतनी सस्ती रख छोड़ी है कि उनका रोजगार प्रतिद्वन्द्विता में न चमका। इस तरह यह सारा क्षेत्र रूसी महिलाओं के हाथों में आगया और अब तो वहाँ उनका एकाधिपत्य हो गया है। होटलों और काफ़ों में, दफ़्तरों और दुकानों में, तथा नाचने-गाने और थियेटर के मंचों में रूसी स्त्रियों की ही भरमार पाई जाती है।

हारबिन, शंघाई, पोपिंग, टीन्टसिन, हांगकांग और चीनी ट्रीटी पोर्टों में रूसी स्त्रियों के चकले के चकले आबाद हैं। इन जगहों में मंचूरिया की रूसी आबादी से बहुत सी सुन्दरी पोड-शियाँ धोखा देकर, मोल लेकर, भगा और फुसला कर लाई जाती हैं अधिकांश स्त्रियाँ अपने मन से, या आर्थिक कठि-नाई में पड़कर आती हैं, क्योंकि इस बेकारी और प्रतिद्वन्द्विता के युग में शराफ़त की रोजी पैदा करने के उनके लिए सारे रास्ते प्रायः बन्द से हैं।

गत दस-पंद्रह वर्षों में, चीन में, पेशेवर जोड़े से नाचने वाली औरतों की माँग बहुत बढ़ गई है। शंघाई, मुकदन, टिन्सटिन, पीपिंग, चीफू, टिग्ट्ट, आदि शहरों में सैकड़ों, हजारों सुन्दरियाँ इस व्यापार में लगी हुई हैं। विदेशी लोग इन युवतियों के नाचों में बहुत शरीक होते हैं। आलीशान मकानों में, सैकड़ों बिजलियों

से जगमगाते हुए सजे हुए कमरों में, जबकि शराब के प्याले पर प्याले चल रहे हों, जहाँ ऐशोइशरत के फ़ौवारे उड़ रहे हों, वहाँ नृत्य करनेवाली स्त्रियाँ सिर्फ़ कला का प्रदर्शन मात्र करके रह जायँ, यह कैसे सम्भव हो सकता है ? नाचने-गाने के साथ, चुम्बन और आलिंगन की सुनहरी घड़ियों में रात के लिए परामर्श और समझौते हो जाते हैं। होटलवाले इनमें बड़ी दिलचस्पी लेते हैं और उन लड़कियों को अपने यहाँ से तुरन्त निकाल देते हैं जो प्रेम के नाम पर व्यभिचार करने से दूर भागती हैं। ये लड़कियाँ अपनी शक्ल-सूरत और गुण के अनुसार १०० से लेकर ३०० डालर प्रतिमास तक कमा लेती हैं।

हारबिन के सारे बड़े बड़े और मशहूर होटलों में एक से एक बढ़कर सुन्दरी रूसिनें ख़ानसामा-गीरी और दिल-बहलाव का काम करने के लिए नौकर हैं। रूसी क्रान्ति के बाद बड़े बड़े आला ख़ान्दान की बहू-बेटियाँ, जो भाग कर आई थीं, वे आज भी इन होटलों में चाकरी करके अपना पेट पाल रही हैं।

रूस देश के एक निवासी ने, अपने देश की स्त्रियों की दुर्दशा से व्याकुल होकर लीग-आफ नेशन्स के कमीशन के सदस्यों से हारबिन देखने की बहुत जोरदार प्रार्थना की। वे उसकी बात को टाल न सके और एक पुलिस-अफ़सर के साथ हारबिन शहर की सीमा पर बसे हुए एक छोटे से होटल में गये। यह स्थल अन्दर गली में था, जिसमें जाने के लिए कीचड़ का रास्ता पार करना होता था। बीच में एक नाला पड़ता था जिसे पार करने को एक

तख्ता लगा था। बाहर रेस्टारां (Restaurant) लिखा था। यह एक गन्दी सी झोंपड़ी थी, जिसमें पाँच-छः आदमियों के बैठने लायक़ एक ही कमरा था। पास पास तीन जुदी जुदी कोठरियाँ थीं जिनमें एक एक चारपाई बिछी थी, बहुत ही सकरी जगह थी। पुलिस-अफ़सर के बुलाने पर होटल का मालिक निकल आया, उसके साथ ही बाक़ी के लोग भी निकल आये। मकान-मालिक एक नीच जाति का चीनी था, जिसके पीछे लाइन बाँधे पाँच रूसी स्त्रियों का गिरोह खड़ा था। उससे पूछा गया कि ये कौन हैं, तो वह बदमाश बोला कि एक तो मेरी स्त्री है, एक मेरी स्त्री की नौकरानी है और तीन होटल की परिचारिकायें हैं। सारी बातें बिल्कुल झूठ थीं। पास-पड़ोस में पूछने से पता लगा कि मकान-मालिक औरतों का व्यापारी है और पाँचों महिलायें उसके यहाँ पेशेवर वेश्या की तरह काम करती हैं। चीन के शहर शहर में, गलियों गलियों में ऐसे सैकड़ों स्थान पाये जाते हैं। रूस की विकट क्रान्ति से भागे हुए लोगों को या तो इक्का-दुक्का यूरुपीय देशों ने पनाह दी थी, या फिर चीन के फाटक उनके स्वागत के लिए खुल गये थे। बाक़ी के देशों ने इन खाना-बदोशों को अपनी सीमा के अन्दर दाखिल होने से रोक दिया था। नतीजा यह हुआ कि जैसे हुआ तैसे इन्हें बसना पड़ा, बेइज्ज़ती और बेहुर्मती का लिहाज़ छोड़कर हज़ारों स्त्रियों को पापी व्यापारियों और दलालों के चंगुल में फँस कर, दो रोटियों के लिए अपना सब कुछ नष्ट करना पड़ा!

कितनी ही युवतियों के बयान लेने से मालूम हुआ कि कोई न कोई, चीनी या रूसी, उन्हें बड़े बड़े सब्ज़ बाग़ दिखला कर हारबिन से, माता-पिता या संरक्षकों के समीप से शहरों में बहका लाया था। "वहाँ तुम्हें रेशमी फ्राक पहनने को मिलेंगे, अँगरेज़ी ढंग के तुम्हारे बाल कटेंगे, उनमें लगाने को क्लिपें और काँटे तथा बाल सँवारने को ब्रुश, कंघे मिलेंगे। यूडीकोलोन और महकते हुए सेंट तुम्हारे ऊपर छिड़के जायँगे, लोग तुम्हें सर-आँखों पर रक्खेंगे। तेल, पामेड, हैज़लीन, बढ़िया जूते और सुनहले डालर तुम्हारे ऊपर न्यौछावर होंगे। होटलों में खाना खाओगी, बाल-रूमों में नाचो और गाओगी। वहीं किसी ख़ूबसूरत नवयुवा से आँखें लड़ने पर शादी कर लोगी। ज़िंदगी बड़ी ख़ुशी और ऐश से कटेगी।" ये बहकाने के प्रलोभन एक नादान ग़रीब युवती के लिए काफ़ी से ज्यादा आकर्षक हैं, जिनमें फँसकर वे बहकाने-वालों के साथ चल देती हैं। पासपोर्ट और ख़र्चे का बन्दोबस्त दलाल ही करता है। जब उन्हें होटलों में काम करना पड़ता है और आने-वाले सब लोगों को ख़ुश रखना पड़ता है, डाँट-फटकार पड़ती है, कभी मार भी पड़ती है, तब असली बात खुलती है। तब तक वे मक़रूज़ हो चुकी होती हैं, पासपोर्ट आदि भी उनके नये संरक्षकों के पास होते हैं, अतः लाचार होकर वे पाप के सागर में निरन्तर डूबती जाती हैं।

३३—चीन की स्त्रियाँ

चीन देश की वेश्यायें एशिया के पूर्वीय भाग में अधिक और पश्चिमी भाग में कुछ कम मिलती हैं, पर मिलती सब जगह हैं। उनकी संख्या का अनुमान नीचे लिखे देशों में इस प्रकार लगाया जाता है—

इन्डोचाइना	=	५०
स्याम देश	=	१०००
फिलीपाइन	=	१००
बृटिश मलाया	=	५००० से ६००० तक
बृटिश भारत	=	३०

चीन से लगे हुए जो विदेशी प्रदेश हैं उनमें चीनी स्त्रियों की संख्या अत्यधिक है, जैसे हांगकांग में ४००० से ऊपर, मकायो में १००० से ऊपर और क्वाटङ्ग के जापानी प्रदेश में ५०० से ऊपर है।

गाने-वाली चीनी लड़कियाँ, जो शहरों में नाचने-गाने का पेशा कर रही हैं, उनमें से कुछ भले ही पवित्र जीवन व्यतीत करती हों, पर अधिकांश रुपये के मोह में और शहरी चकाचौंध में पड़कर अपना चरित्र खराब कर लेती हैं। पुरुष-समाज इतना निर्दयी, तिकड़मी और पिशाच है कि उसके मारे स्त्रियों का, और

खास कर ऐसे व्यापार में लगी हुई युवतियों का, अछूता रहना असम्भव हो जाता है।

गायन-कला में दक्ष इन युवतियों की संख्या उन प्रदेशों में बहुत ज्यादा है जिनमें धनी-मानी या मध्य कोटि का चीनी समाज आबाद है। इनकी ठीक ठीक संख्या बता सकना असम्भव है, क्योंकि जो लाइसेन्सयाफ़्ता पेशा करनेवाली औरतें हैं, या जिनके लिए रजिस्ट्री कराना जहाँ लाज़िमी है वहीं संख्या का कुछ ठीक पता चल सकता है। चीन के अधिकांश प्रदेशों में लाइसेन्स की प्रथा ही नहीं है।

चीन में ग़रीबी बहुत है। वेश्यावृत्ति करने-वाली और नाचने-गाने वाली युवतियाँ अत्यन्त ग़रीब खान्दान की सुन्दरियाँ होती हैं, जो इज्ज़त से पैसा कमाने में असमर्थ रहती हैं। इनमें इतनी भी सामर्थ्य नहीं कि ये स्वतः वेश्यावृत्ति के लिए पैसा खर्च कर विदेशों में जायँ, हाँ स्त्रियों और लड़कियों के व्यापारी इनकी आर्थिक सहायता करके एवं आने वाले सुखों का झूठा चित्र खींच कर इन्हें बहका ले जाने में समर्थ होते हैं।

चीन देश के निवासी कट्टर प्राचीनता-प्रेमी हैं। उनके यहाँ सम्मिलित कुटुम्ब-प्रथा है और परिवारों में बड़े-बूढ़ों, देव-गुरुओं तथा धार्मिक वृत्ति के पुरुषों का बहुत आदर है। सदियों से कुटुम्ब में जो होता चला आया है, वही अब भी होता है। ब्याह का तौर-तरीक़ा, लड़कों की विशेष क़द्र, लड़कियों की ओर से उदासीनता और अधिक सन्तानों की उत्पत्ति आदि सभी कुछ

पुराने ढर्रे का है। नये क़ानून के अनुसार तो चीन में लड़के और लड़कियों का हक़ बराबर क़रार दिया गया है, पर देश की अव्यवस्था, राजनैतिक दुरवस्था, मूर्खता और प्राचीन-प्रियता के कारण व्यावहारिक रूप से कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ है। बालिका का जन्म अपशकुन, या दुर्भाग्य माना जाता है। वहाँ बालिका के जन्म का कोई धार्मिक महत्त्व भी नहीं है और उसकी शादी के बाद तो माता-पिता के घराने के साथ उसका कोई नाता ही नहीं रह जाता है। लड़का ही कुटुम्ब का वारिस होता है जिसकी क़िस्मत घर, फ़िरके और समाज के साथ बँधी रहती है। चीन के पुराने रीति-रिवाजों के अनुसार न केवल घर की स्त्रियों ही से, प्रत्युत सुन्दरी दासियों तक से पुत्र उत्पन्न करना जायज़ समझा गया है।

चीन के माता-पिता पुत्र-हीन होना एक शोक-चिह्न समझते हैं और जितने ही ज्यादा बच्चे हों उतना ही गर्व करते हैं। चीनी जातिवाले उन उपायों का सदियों से अवलम्बन करते रहे हैं जिनसे वे दर्जनों पुत्रों के पिता कहला सकें। इसीलिए चीन की आबादी अत्यधिक बढ़ गई है और बहुधा वहाँ अन्न की कमी से, अकाल पड़ने से लाखों प्राणी नष्ट होते रहते हैं। चीन में जितनी अन्न की पैदावार है उसको देखते हुए खानेवाले कई गुने ज़्यादा हैं।

चीन में चूँकि पुत्र ही कुटुम्ब का सर्वस्व माना जाता है, अतः अकाल का सामना होने पर, या कंगाली और भुखमरी से

मुठभेड़ होने पर, लड़कियों के निकाल बाहर करने का सबसे पहले नम्बर आता है। दुर्भाग्य से ग़रीबी, अन्न की कमी और सन्तानों की बढ़ती हुई गति के कारण चीन में ऐसी घटनायें रोज ही होती हैं, वहाँ दत्तक-प्रथा कायम की गई है। जिन जिन दूसरे तरीक़ों से लड़कियों को उनके माँ-बाप अलग करते हैं उनकी कथा नीचे पढ़िए—

माता-पिता उन लोगों को अपनी लड़कियाँ सौंप देते हैं जो सन्तान-रहित हैं। जिनके बच्चे नहीं होते वे लड़कियों को ही लेकर अपने बच्चे के समान पालते हैं और इस आशा से पालते हैं कि इस कन्या के सहारे कोई अच्छा सा दामाद प्राप्त कर बुढ़ौती में सुख से रहेंगे।

दूसरे वहाँ मितसुई-प्रथा प्रचलित है। इसके सहारे ग़रीब माँ-बाप अपनी कन्याओं को धनाढ्य चीनियों के हाथ बेच देते हैं। लड़कियाँ उनके यहाँ काम करती हैं और उसके बदले में खाना-कपड़ा पाती हैं। लड़की की पोजीशन नौकरों से बेहतर होती है और कहीं कहीं तो उनका आदर ठीक कुटुम्ब के बच्चों के समान होता है। उन्हें शिक्षा भी मिल जाती है, पर ऐसों की तादाद कम है।

इस प्रथा से बुराइयाँ भी पैदा होती हैं। लड़की के युवती होने पर कुटुम्ब के युवक उसके पीछे पड़ जाते हैं और उसका सतीत्त्व नष्ट कर देते हैं।

युवती होने पर उसे कुटुम्ब-वाले किसी व्यक्ति के साथ ब्याह देते हैं। यदि कन्या बहुत रूपवती हुई तो रखेली की तरह भी रख ली जाती है।

तीसरे लड़कियाँ थियेटर और सिनेमा-वालों को सौंप दी जाती हैं। गुज़रे हुए ज़माने में चीन में स्त्रियों का पार्ट ख़ूबसूरत छोकड़े करते थे, जो ठीक सुन्दरियों की तरह सजाये और पहनाये जाते थे। अब लड़कों की जगह लड़कियों की माँग ज़्यादा है। जो थियेटर-पार्टियाँ चीन से मलाया, इंडो चाइना, और नीदरलैंड जाती हैं उनमें प्रायः लड़कियाँ ही रहती हैं। लड़कियों के माता-पिता एक बड़ी रक़म लेकर, पाँच, सात, या दस साल के लिए अपनी बालिका को थियेटरवालों को इस शर्त्त पर सौंप देते हैं कि वे उन्हें अभिनेत्री बनावेंगे, वेश्या नहीं। निःसन्देह ये लड़कियाँ वेश्याओं से बेहतर रहती हैं, क्योंकि स्थायी रूप से, या निरन्तर इन्हें ग्राहकों को ख़ुश नहीं करना पड़ता। हाँ, इक्के दुक्के में ऐसा मौक़ा ज़रूर आ जाता है, जबकि थियेटर-वाला किसी अमीर को फाँस कर, ज़्यादा रक़म लेकर, अपनी किसी अभिनेत्री के पास आता है और उसे ख़ुशी से क़बूल करने का आदेश देता है, इन्कार करने पर, डरा-धमका कर, मार-पीट कर और जौर-ज़ुल्म कर अपना मक़सद पूरा करता है। थियेटर या स्टेज पर काम करने वाली युवतियों का अछूता रहना तो एक असम्भव सी घटना है।

चौथा और सबसे भयंकर तरीक़ा बच्चियों और लड़कियों की बिक्री का वह है जिसके द्वारा जीवन भर के लिए कन्या का शरीर ख़रीददार के हाथों बिक जाता है। उपर्युक्त तीन तरीक़ों में तो माता-पिता की भी देखरेख कभी न कभी होती ही रहती है, पर इस चौथी स्थिति में माता-पिता, या किसी का कोई हक़ ही नहीं रह जाता। चीन देश कृषि-प्रधान देश है। वहाँ की कोटि कोटि जनता सुदूरस्थ गाँवों में रहती है। उनके लिए यह असम्भव सी बात है कि वे ऐसे कुटुम्बों की सहायता प्राप्त कर सकें, जो बच्चों को ख़ुशी से अपने यहाँ रखने को तैयार हों। ऐसे गृहस्थ तो शहरों या बड़े बड़े क़स्बों में ही मिलते हैं, जो ज़रा आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त हैं और सन्तानहीन हैं। और यदि संयोग से मिलते भी हैं तो उनकी संख्या इतनी कम होती है कि इस रूप में प्रतिवर्ष पैदा होते रहने वाले करोड़ों बच्चे नहीं खप सकते। इसलिए माँ-बाप मजबूर होकर किसी भी ऐसे व्यक्ति के हाथों में अपनी पुत्रियाँ सौंप देते हैं जो उन्हें यौवन काल तक सुख से रखने का वादा कर ले और उसके बाद किसी युवा से ब्याह कर दे। इस काम के लिए स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार में लगी हुई चतुर-चालाक अनुभवशील अधेड़ स्त्रियों के झुण्ड के झुण्ड चीन देश के गाँवों में घूमते रहते हैं। ये महिलायें देखने सुनने में प्रायः सुन्दर होती हैं और अच्छे क़ीमती वस्त्र पहने रहती हैं। ये गाँव वालों के घरों में जाती हैं, अपनी मीठी मीठी बातों से उन्हें फुसलाती हैं, लड़कियों को पहनने के लिए दो एक अच्छे

कपड़े और बिस्कुट देकर अपनी दयालुता का परिचय देती हैं और वादा करती हैं कि हम इसे पाल-पोसकर किसी अच्छे युवक के साथ व्याह देंगे, या कम से कम किसी बड़े आदमी की रखेली बनवा देंगे। क्या ताज्जुब है कि ऐसी स्थिति में, मूर्ख ग्रामीण भाई उनकी बातों में फँस जाते हैं। गाँव के लोग न तो पढ़-लिख सकते हैं, न अपनी लड़की से, जो किसी सुदूरस्थ प्रदेश में चली जाती है, सम्बन्ध ही क़ायम रख सकते हैं। वे तो आगन्तुक की दयालुता, चातुरी, अमीरी तथा फ़ैयाज़ी देखकर भ्रम में पड़ जाते हैं और उसकी नेकनीयती में विश्वास कर लेते हैं। उनके लिए दो ही रास्ते हैं, या तो लड़की को ताज़िन्दगी भारवत् रक्खें, उसे कष्ट दें, भूखों मारें और ख़ुद भी मुसीबतज़दा रहें, या फिर उसे किसी दूसरे ऐसे आदमी के हाथों सौंप दें जो उससे उत्तम हालत में रखने का दम भरता है। कौन ऐसा माता-पिता होगा जो लड़की को सुख से रहते हुए देखने का न भूखा हो? और फिर उन्हें तो उसके बदले में सौ-दो-सौ रुपया भी मिलता है जिससे उन्हें कुटुम्ब की चिन्ता से बहुत दिनों तक के लिए मुक्ति मिल जाती है। बेचारी लड़की खिलौनों, बिस्कुट और कपड़ों के लालच में उस अजनबी महिला के साथ हो लेती है जो उस कन्या के ऊपर अपना पूर्ण प्रभुत्व और अधिकार समझती है।

पाठक समझ ही गये होंगे कि ये चलती-पुरज़ी स्त्रियाँ कन्या-दलाल हैं जो व्यापार की तरह लड़कियों की ख़रीद-फ़रोख़्त करती फिरती हैं। जिसने उन्हें ज़्यादा टके दिये कि उन्होंने उसे ही

कन्या की संरक्षता के अधिकार सौंप दिये। बहुधा ऐसा भी होता है कि इन महिला-दलालों के बीच ही में लेवा-बेची होने लगती है, यानी एक दलालिन दूसरी दलालिन के हाथ नफ़ा लेकर लड़की का सौदा कर लेती है।

लड़कियों की क़िस्मत का अन्तिम फैसला उनकी जवानी है। यदि उनको उठान अच्छी हुई, यौवन-श्री निखरी हुई, काले काले बाल एड़ियों को छूते हुए, आँखें बड़ी बड़ी और पैर छोटे छोटे हुए, चेहरे पर रंगत, चंचलता और ख़ूबसूरती बिखरी हुई, तब तो उसकी बड़ी ख़ातिर होती है। बसे बड़े आदमी काफ़ी मूल्य देकर, अपने यहाँ रख लेते हैं। कोई कोई शादी भी कर लेते हैं। इनमें से अच्छी लड़कियों को कन्या-दलाल गाने, बजाने और नाचने की तालीम भी देते हैं। अच्छी लड़कियों से मतलब उन बालिकाओं से है जो शक्ल-सूरत की सुन्दर और गले की अच्छी होती हैं। गाना सीख जाने पर जब ये कोयल सी कुहकने लगती हैं तब यदि कोई बड़ा आदमी नहीं भी रखता तो व्यापारी उससे गाने का पेशा कराते हैं और बसी सिलसिले में कुछ मन-चले युवक उन पर मुग्ध हो ही जाते हैं। जो इस क़ाबिल नहीं होतीं, वे या तो कन्या-दलालों के यहाँ ही पड़ी रहती हैं, या नौकरानियों के रूप में बेच दी जाती हैं।

आमतौर पर यह देखा जाता है कि वेश्यायें और रखेलियाँ बूढ़ी होने पर जब पाप की कमाई कुछ बचा लेती हैं तब वे एक छोटी सी बच्ची ख़रीद लेती हैं। उसे वे पालती-पोसती हैं और बड़ी

होने पर अपनी ही तरह उससे व्यभिचार करवाती हैं। जब लड़की युवती होकर वेश्यावृत्ति करने लगती है तब ये उसकी "अम्मीजान" बनकर बड़ी अम्माँ का काम करती हैं। जो लड़कियाँ बड़ी होने पर इस पेशे में नहीं दाखिल होना पसद करतीं, वे या तो किसी युवा के साथ भाग जाती हैं, या मार मार कर ठीक कर ली जाती हैं।

पीपिंग, शंघाई, हांगकांग, सिंगापूर, पिनांग और बटेविया शहरों में अनाथ नारी-सदन खुल गये हैं जहाँ ऐसी युवतियाँ शरण पा सकती हैं, पर ये संख्या में इतने कम हैं और गाँवों तथा क़स्बों से इतनी दूर हैं कि अधिकतर लड़कियाँ या युवतियाँ वहाँ तक पहुँच ही नहीं पातीं।

इन व्यापारियों के गुट बँधे रहते हैं। चीन में जगह जगह इनके अड्डे क़ायम हैं। जब लड़कियाँ भागती हैं तो ये जगह जगह सूचना देते हैं। कन्या-दलाल शिकारी कुत्ते की तरह इनके पीछे छूटते हैं और पकड़ कर बड़ी दुर्गति करते हैं।

चीन की लड़कियाँ मूर्खता, कूपमण्डूकता, और ग़रीबी के वातावरण में पलती हैं। वे "माता-पिता की आज्ञा मानो" की आवाज़ बचपन से सुनती रहती हैं। चीनियों की यह खसलत भी है कि वे बड़े सहिष्णु, बड़े पोच और बड़े प्राचीनता-प्रिय होते हैं। अफ़ीम खाते खाते उनका एक बड़ा समुदाय और भी उल्लू हो गया है।

चीन में बहु-विवाह की प्रथा है, वहाँ के लोग दो-दो चार-चार और छः छः रखेलियाँ भी रखते हैं।

चीन की वेश्यायें तीन श्रेणियों में विभाजित की जा सकती हैं। पहली वे लड़कियाँ, जो माँ-बाप के द्वारा वेच दी गई हैं। दूसरी वे जो माता-पिता के कर्ज के बदले में बन्धक-स्वरूप रक्खी जाती हैं और तीसरी वे जो किन्हीं भी कारणों से वेश्यावृत्ति स्वतः अख़्तयार करती हैं।

पहली कोटि की वेश्याओं पर उनके संरक्षक अपना सर्वाधिकार सुरक्षित समझते हैं। वे उन्हें केवल भोजन, कपड़ा और कुछ फैशन के जरूरी सामान देकर सारी दैनिक आमदनी छीन लेते हैं। दूसरी श्रेणी की लड़कियाँ, जो गिरवीं रहती हैं, आमदनी के आधे हिस्से की हक़दार रहती हैं, जिसे वे क़र्ज चुकाने में नित्य देती जाती हैं। यानी उन्हें भी कौड़ी से भेंट नहीं होती और तुर्रा यह है कि बदमाश कन्या-दलाल ब्याज, कपड़े-लत्ते का खर्च और भोजन तथा रहने का किराया जोड़कर असली रक़म

जैसे हो तैसे, क़र्ज़ से मुक्त करने का आख़िरी घड़ी तक अरमान रहता है। उनका सब्र बड़े ग़ज़ब का है। उनके ख़यालात की बुनियाद जिसे वहाँ पवित्रता मानते हैं, कुछ अजीब है। उनके निस्तार का तरीक़ा एक ही है कि कोई व्यक्ति उनका क़र्ज़ा चुका कर उनसे शादी करले, पर इसकी सम्भावना बहुत कम रहती है।

इन कन्या-दलालों के यहाँ रोज ही झगड़ा-फ़साद और दंगा हुआ करता है। ये लोग बहुत से बदमाशों को नौकर रखते हैं जो हाथों में छुरियाँ लिये हर वक़्त ख़ून करने तक को तैयार रहते हैं। नीचे के रोमाञ्चकारी बयान से पाठक हमारी बातों को अच्छी तरह समझ लेंगे। यह एक सच्ची घटना है जिसका वर्णन एक युवती ने सिंगापुर की पुलिस के सामने हलफ़िया बयान के रूप में आप-बीती के आधार पर किया है। बयान की तारीख़ ९वीं अप्रैल सन् १९३१ है। वह कहती है—

"मैं कैन्टन की रहनेवाली हूँ। मेरी उम्र २१ साल की है। वहाँ पर नं० ५३ एक्सवाई सड़क पर एक महिला ने चकला खोल रक्खा था जिसके द्वारा वह लड़कियों और युवतियों का रोजगार करती थी। इससे उसे ख़ासी आमदनी थी। कैन्टन में उसके कई चकले चलते थे। एक जहाज़ का कप्तान मुझे पूर्वीय चीन के किनारे से लाया था और उसके हाथ मुझे बेच दिया था। कितनी रक़म पर बेचा था, यह मुझे मालूम नहीं पड़ा। वह मुझसे दुराचार करवाती रही और ग्राहकों से जो कुछ मिलता, एक एक

कौड़ी लेती रही। अब मैं उस जीवन से उकता कर कुलियों के ठेकेदार के साथ भाग खड़ी हुई। मेरी मालकिन ने पाँच बदमाशों को भेजा जो भुजालियाँ लिये हुए थे। वे मेरे बदले में २०० डालर या ६०० रु० माँगते थे, अथवा मुझे उठा ले जाने आये थे। ठेकेदार के भी मददगार आगये। वे लोग लड़ने लगे और कई आदमी जख्मी होकर गिर पड़े। मुझे ठेकेदार का एक साथी गोद में उठाकर भागा। सिंगापुर के लिए एक जहाज़ उसी दिन छूट रहा था। उसीके साथ मैं यहाँ भाग आई हूँ और आप लोगों से हाथ जोड़कर ख़ुशामद करती हूँ कि वहाँ मुझे मत वापस भेजिए, चाहे फाँसी पर चढ़ा दीजिए।"

पुलिसवालों ने उस युवती को तसल्ली दी और कुछ मदद दी, जिससे वह सिंगापुर में इसी आदमी के साथ शादी करके बस गई। कैन्टन के उस चकले पर चीन की पुलिस ने हमला किया और उसकी मालकिन को जेलख़ाने भेज दिया।

चीन की पेशेवर स्त्रियों में सबसे ज्यादा तादाद गाने-वाली लड़कियों की है। इनका चयन लड़कपन में ही उनकी शक्ल-सूरत,

रक़म लेकर लौटती हैं। बड़े बड़े होटलों से भी इनको बुलाने आते हैं। वहाँ इनके मेहन्ताने बँधे रहते हैं। इन लड़कियों या गानेवालियों के साथ एक बूढ़ी अम्मा रहती है और उसे ही अधिकार होता है कि गाने के अलावा जैसे चाहे वैसे लड़की का इस्तेमाल करावे। इनकी बिना मरज़ी के, इन्हें बिना ख़ुश किये, गानेवाली को छेड़ने का रिवाज नहीं है। ये तो पैसे की ग़ुलाम होती हैं, अतः इनकी रज़ामन्दी मिलने में कुछ ही मिनटों का वक़्त लगता है। हाँ, अम्माँ इस बात का ख़याल रखतीं हैं कि लड़की के साथ ज्यादती न होने पावे। वे हफ़्ते में केवल एक या दो बड़े आदमियों का शिकार करती हैं।

इन गानेवाली लड़कियों को अच्छी आमदनी है। इनमें से कई बड़ी अमीर हैं, जिनके वसीले और प्रभाव बड़ी दूर दूर हाकिम-हुक्कामों तक हैं। वे बड़े बड़े आदमियों की रखेलियों का भी काम देती हैं। जो अभागी हैं, जिनकी जवानी जल्दी ही उतार पर आ जाती है, या जो कुरूप हैं, या जिनका स्वर मधुर नहीं है, उनके लिए तो वेश्यावृत्ति के पाप-पंक में डूबने के सिवा कोई मार्ग ही नहीं है। उनका संरक्षक, मालिक, दलाल या ठेकेदार उनसे ज्यादा से ज्यादा व्यभिचार करवा के जो कुछ अधिक से अधिक हो सकता है कमवाता है और सब छीन लेता है। इनकी ज़िन्दगी से तो मौत कई गुना अच्छी है।

शंघाई में ये गानेवाली औरतें नये ख़यालात और नई

रोशनी के चीनी अमीरों के साथ बालडैन्स भी करती हैं। और किसी शहर में ये दृश्य देखने में नहीं आते।

सिवा उन चीनी औरतों के, जो बहुत ही चलौल हों, अन्य कोई भी स्त्री किसी विदेशी का सहवास पसंद नहीं करती। इसलिए विदेशों में जानेवाली चीनी स्त्रियों की संख्या उन देशों में बसे हुए चीनियों की सख्या पर निर्भर है।

यों तो चीनी मजदूर मचूरिया और चीन के जापानी प्रदेश में भी फैले हुए हैं, पर मलाया में वे बहुत बड़ी संख्या में बस गये हैं और बराबर वहीं जाते रहते हैं। बृटिश मलाया की पैंतीस लाख की आबादी में चीनी ग्यारह लाख नब्बे हजार हैं। स्ट्रेट सेटिलमेंट, यानी सिंगापुर और पिनांग की कालोनी, में जहाँ ९ लाख की आबादी है, चीनी पाँच लाख हैं। ये लोग न क़ेवल मजदूर हैं, प्रत्युत सारे फुटकर व्यापार इन्हींके हाथ में हैं। उन्होंने वाणिज्य और कला-कौशल के क्षेत्र में अच्छी उन्नति की है। टीन की कानों की तरक्की और रबड़ की बढ़ती हुई खेती का सारा श्रेय चीन के लोगों को ही है। चीन के मजदूरों ने अपने बाहुबल से उजड़े हुए मलाया को फला-फूला, लहलहाता हुआ, बाग़ बना दिया है।

चीनी मजदूर मलाया प्रायद्वीप में खाली हाथ आता है। जब अपनी मेहनत से वह कुछ जोड़ लेता है तब वह फेरी लगाने लगता है और बाद में छोटी सी दूकान खोल कर बैठ जाता है। आज मलाया के जो सबसे बड़े चीनी सौदागर हैं उनके

प्रारम्भिक जीवन की दास्तान यही है। उन्होंने जो सफलता पाई है वह लाखों चीनियों के लिए उदाहरण का काम देती है, अतः चीनियों का आना-जाना तथा मजदूरों और व्यापारियों की कोटि में उनका प्रवेश घना ही रहता है। ये लोग घरबार लेकर नहीं आया करते, अकेले आते हैं, इसलिए मजदूरों से लेकर बड़े व्यापारियों तक में चीनी वेश्याओं की माँग ख़ूब रहती है।

इस दुहरी माँग से स्त्रियों और बच्चियों के व्यापारी ख़ूब ही मालामाल हो जाते हैं। शुरू में नई नवेलियों, सुन्दरियों को लाकर व्यापारी बड़े बड़े व्यापारियों, उनके मुनीमों और छोटे व्यापारियों की भेंट करता है, बाद में जब ये सब बड़े आदमी उनका इस्तेमाल कर लेते हैं और उन्हें पुरानी कहकर नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं तब वे ही औरतें चीनी मजदूरों को सौंप दी जाती हैं।

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापारियों को यदि मलाया के बड़े आदमियों, उनके मुसाहिबों तथा छोटे दुकानदारों का सहारा न होता, तो शायद ही वे मलाया में इस व्यापार की ओर ध्यान देते। केवल मजदूरों से थोड़े से टके कमाने के लिए जो उनके स्वयं आने और लाने में खर्च हो जाते, वे इतनी माथा-पच्ची न करते। इस वक़्त तो वे धनी-मानियों से काफ़ी लाभ उठाकर, लागत, खर्च और ब्याज से कई गुनी रक़म ज्यादा पैदा करने के बाद मज़दूरों का ख़याल करते हैं। उनसे भी जो कुछ मिल गया वह नफ़ा ही नफ़ा है। व्यभिचार के लिए चीनी मज़दूर भी काफ़ी ख़र्च करते हैं।

सन् १९२७ में मलाया में जगह जगह चीनी युवतियों के चकले खुले हुए थे। चीन की स्त्रियाँ खुले-आम चाहे जितनी तादाद में आती थीं और बसती थीं। सन् १९३० में उन स्त्रियों का आना बन्द कर दिया गया जो अपने को वेश्या बतलाती थीं। अब नये चकलों का खुलना भी बंद कर दिया गया है इसलिए कि, उनकी संख्या काफ़ी से ज्यादा मौजूद है। सुन्दर लड़कियाँ तो अब भी लाई जाती हैं। व्यापारियों का सारा व्यापार उन्हींके क्रय-विक्रय पर निर्भर है।

पूर्वीय डच इन्डीज में सदियों से चीन के लोग जाते रहे हैं और अब भी जाते हैं। कहते हैं कि लुहार, बढ़ई, व्यापारी तिजारती और मजदूर सब मिला कर यहाँ कोई १४ लाख चीनी हैं। क़ानूनी सख्तियों के होते हुए भी काफ़ी चीनी लड़कियाँ प्रति-वर्ष यहाँ लाई जाती हैं।

स्याम देश में भी क़रीब पचास हज़ार चीनी हैं। इन्डो चाइना में क़रीब चार लाख चीनी हैं, और फिलीपाइन में वे कोई डेढ़ लाख हैं। क़ानून और तादाद के अनुसार कहीं कम और कहीं वैसी लड़कियाँ ले जाई जाती हैं।

बर्मा में क़रीब डेढ़ दो लाख चीनी हैं। इनमें स्त्रियाँ ज्यादा से ज्यादा तीस चालीस हज़ार हैं। औसतन् दो पुरुषों के बीच एक स्त्री पड़ती है, अतः यहाँ चीनी युवतियों की माँग है। रंगून में चकले रखना मना है, इसलिए होटलों में युवती स्त्रियों के क़ाफ़िले मिलते हैं। ये होटल का काम भी करती हैं, और जो

३४—जापान की कहानी

जापान देश की स्त्रियाँ भी उन्हीं देशों को जाती हैं जहाँ उनके देश-वासी जाकर बस गये हैं। कोरिया, फ़ारमूसा तथा चीन के कुछ विशिष्ट भूभाग, जो जापानी राज्य के अन्तर्गत हैं उनमें लाखों जापानी बसे हुए हैं।

सन् १९३१ में जो जाँच की गई थी उसके अनुसार पता चला था कि शंघाई में जापानी और कोरियन वेश्याओं की संख्या ३०० से ऊपर थी और टिन्सटीन में ६६, चीफू में १३, मुकदन में १२३, और मंचूरिया रेलवे ज़ोन में ३१०। हारबिन में जापानी वेश्याओं की संख्या २३८ थी। और सारे बृटिश भारत में ऐसी जापानी युवतियों की तादाद ५० से अधिक नहीं थी। कहने का तात्पर्य यह है कि विदेशों में जहाँ जहाँ, जैसी जैसी संख्या में जापानी बसे हुए थे, वैसी वैसी तादाद में जापानी वेश्यायें भी वहाँ पहुँच गई थीं। ये उन्हीं होटलों में काम करतीं जिनमें जापानी ठहरते, रहते, खाते-पीते, उन्हीं काफ़ों में काम करतीं जहाँ जापानी ताड़ी और काफ़ी पीते। ये उन्हीं जगहों में नाचने जातीं जहाँ जापानी साथी, साथ नाचने और आनन्द मनाने को मिलते। पोज़ीशन यह है कि न तो जापानी वेश्यायें विदेशी ग्राहकों को पसंद करती हैं और न विदेशी ग्राहक ही पाश्चात्य देशों की सुन्दरियों के सामने इनकी क़द्र करते हैं। जापानी युवतियाँ कभी कभी

विदेशियों के पास जाती हैं, आमतौर पर नहीं। शायद इस क्षेत्र में भी राष्ट्रीयता की कुछ भावना काम करती हो। हाँ, इनमें जो कोरियन सुन्दरियाँ होती हैं वे जापानी ग्राहकों के अलावा अन्य विदेशियों से भी सम्पर्क रखती हैं। ये फारमूसा से फिलीपाइन टापुओं तक फैली हुई हैं।

सन् १९२० तक जापानी स्त्रियों की तिजारत जोरों से होती थी। निकट और सुदूर पूर्व के सारे बन्दरगाहों और समुद्र के किनारे बसे हुए बड़े बड़े शहरों में जापानी महिलायें बेची जाती थीं। जहाज के कप्तान से लेकर मल्लाह तक इन्हें अपने जहाजों में शरण देते थे और व्यभिचार करते थे। यों ही इन लोगों की सहायता से ये स्त्रियाँ देश-देशान्तरों में चक्कर लगाया करती थीं और पैसा पैदा करती थीं। तब इनकी दृष्टि केवल जापानी ग्राहकों तक परिमित नहीं थी, क्योंकि तब सुदूर पूर्व के अन्यान्य देशों में जापानियों की संख्या भी ज्यादा नहीं थी। बढ़ते बढ़ते यह बदनामी जापान की सरकार के कानों तक पहुँची। इसके कारण नैतिक क्षेत्र में जापानियों की निन्दा होने लगी थी, जो उनके विस्तार और तिजारती उन्नति के मार्ग में बाधक थी। इसलिए जापानी सरकार ने अपने राजदूतों को हिदायतें कर दीं कि जहाँ तक हो सके जापानी वेश्याओं को देश-विदेशों से जापान ही में वापस भेज दिया जाय, जहाँ सरकार उनकी परवरिश करेगी। इस कार्य में विदेशों में बसे हुए जापानियों ने भी बड़ी मदद दी। जापानियों की क़ौम में एक खास बात है कि वे कहीं,

भी अपने राष्ट्र का अपमान होता नहीं देख सकते और राष्ट्र के हित के नाम पर, उसके सम्मान के नाम पर, वे बड़ी से बड़ी क़ुरबानी करने को तैयार हो जाते हैं। इस अवसर पर भी उन्होंने अपनी काम-वासना पर लात मार कर अपनी ज्वलन्त देश-भक्ति का परिचय दिया। उन्होंने अपने पैसे से अपने देश की हज़ारों वेश्याओं को जापान लौटवा दिया। दो तीन वर्ष के अन्दर सिंगापुर की जापानी वेश्याओं का ८/१० हिस्सा जापान लौट गया। इसी तरह बङ्गाल, बम्बई, कलकत्ता, सैगून और हांगकांग में हुआ। सन् १९३० में कलकत्ते में कुल ६५ जापानी वेश्यायें थीं और बम्बई में ९०। इसके पहले, सन १९२० से पहले—वे बहुत बड़ी तादाद में मिलती थीं और हिन्दुस्तानियों के साथ भी बहुधा रहती थीं। अब तो आमतौर पर उनकी वृत्ति अपने देशवासियों तक ही महदूद है और इस पर जापानी राजदूत भी नज़र रखता है। अब केवल चीन ही एक ऐसा देश है जहाँ जापानी वेश्याओं की संख्या बेशुमार है और जहाँ उनका आवागमन जारी रहता है।

इसका कारण है। जापान के हज़ारों पुरुष, चीन की कमजोर स्थिति और अपने देश की प्रबल सैनिक-शक्ति के कारण वहाँ व्यापार और तरह तरह के लाभों के लिए जाते रहते हैं। विश्व-विद्यालयों और स्कूलों की शिक्षा समाप्त कर सैकड़ों-हजारों युवक चीन में घुस जाते हैं, दूकान लगाते हैं, व्यापार करते हैं और फेरी करके माल बेचते हैं। ये क्वारे होते हैं और [illegible]

नहीं करते जब तक वे किसी स्थायी व्यापार में स्थिर नहीं हो जाते। अतः जहाँ तीस हज़ार जापानी पुरुष हैं, वहाँ सिर्फ बीस हज़ार जापानी स्त्रियाँ हैं। इनकी कमी को पूरा करने के लिए जापानी सौदागर जापानी युवतियों को लाकर चकले खोलते और धन कमाते हैं।

जापान में पहले महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा बिल्कुल नहीं थी। वे पुरुष-समाज से दूर हिन्दोस्तानी औरतों की तरह घरों में बंद रहती थीं। सामाजिक कामों में उनका कोई स्थान न था, न उनमें संस्कृति थी और न उन्हें गाने-बजाने का ज्ञान था। यह काम पेशेवर गानेवाली औरतों के ताल्लुक़ था। एक समय था, जब जापानी समाज में इनका स्थान आदरणीय समझा जाता था, पर इनकी स्थिति बदलती गई, ज्यों ज्यों ज़माना बदलता गया।

अब लोग केवल नाचने-गाने से सन्तुष्ट नहीं होते। वे आलिंगन और चुम्बन के इच्छुक होते हैं। ये बातें सामाजिक जलसों में खुलासा तौर से नहीं हो पातीं। अतः काफ़ों की परिचारिकायें विशेष तरक्की कर रही हैं। काफ़े में गये, एक कप काफ़ी का पिया। काफ़ी पिलाकर खातिर करने वाली सभी छोकड़ियाँ होती हैं, उनसे अकेले में बातें कीं, जी बहलाया, इसमें पैसा भी कम खर्च हुआ और जवान भी ज़्यादा रहा। यह कहना व्यर्थ होगा कि गानेवाली औरतों और परिचारिकाओं का जीवन पवित्र रह पाता है। पवित्र जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखनेवाली

भी अपने राष्ट्र का अपमान होता नहीं देख सकते और राष्ट्र के हित के नाम पर, उसके सम्मान के नाम पर, वे बड़ी से बड़ी क़ुरबानी करने को तैयार हो जाते हैं। इस अवसर पर भी उन्होंने अपनी काम-वासना पर लात मार कर अपनी ज्वलन्त देश-भक्ति का परिचय दिया। उन्होंने अपने पैसे से अपने देश की हज़ारों वेश्याओं को जापान लौटवा दिया। दो तीन वर्ष के अन्दर सिंगापुर की जापानी वेश्याओं का ५/६ हिस्सा जापान लौट गया। इसी तरह बङ्गाल, बम्बई, कलकत्ता, रंगून और हांगकांग में हुआ। सन् १९३० में कलकत्ते में कुल ६५ जापानी वेश्यायें थीं और बम्बई में ९०। इसके पहले, सन १९२० से पहले—वे बहुत बड़ी तादाद में मिलती थीं और हिन्दुस्तानियों के साथ भी बहुधा रहती थीं। अब तो आमतौर पर उनकी वृत्ति अपने देशवासियों तक ही महदूद है और इस पर जापानी राजदूत भी नज़र रखता है। अब केवल चीन ही एक ऐसा देश है जहाँ जापानी वेश्याओं की संख्या बेशुमार है और जहाँ उनका आवागमन जारी रहता है।

इसका कारण है। जापान के हज़ारों पुरुष, चीन की कमज़ोर स्थिति और अपने देश की प्रबल सैनिक-शक्ति के कारण वहाँ व्यापार और तरह तरह के लाभों के लिए जाते रहते हैं। विश्व-विद्यालयों और स्कूलों की शिक्षा समाप्त कर सैकड़ों-हज़ारों युवक चीन मे घुस जाते हैं, दूकान लगाते हैं, व्यापार करते हैं और फेरी करके माल बेचते हैं। ये कारे होते हैं और तब तक शादी

नहीं करते जब तक वे किसी स्थायी व्यापार में स्थिर नहीं हो जाते। अतः जहाँ तीस हजार जापानी पुरुष हैं, वहाँ सिर्फ बीस हजार जापानी स्त्रियाँ हैं। इनकी कमी को पूरा करने के लिए जापानी सौदागर जापानी युवतियों को लाकर चकले खोलते और धन कमाते हैं।

जापान में पहले महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा बिल्कुल नहीं थी। वे पुरुष-समाज से दूर हिन्दोस्तानी औरतों की तरह घरों में बंद रहती थीं। सामाजिक कामों में उनका कोई स्थान न था, न उनमें संस्कृति थी और न उन्हें गाने-बजाने का ज्ञान था। यह काम पेशेवर गानेवाली औरतों के ताल्लुक था। एक समय था, जब जापानी समाज में उनका स्थान आदरणीय समझा जाता था, पर उनकी स्थिति बदलती गई, ज्यों ज्यों ज़माना बदलता गया।

अब लोग केवल नाचने-गाने से सन्तुष्ट नहीं होते। वे आलिंगन और चुम्बन के इच्छुक होते हैं। ये बातें सामाजिक जलसों में खुल्लमखुल्ला तौर से नहीं हो पातीं। अतः काफ़ों की परिचारिकायें विशेष तरक्क़ी कर रही हैं। काफ़े में गये, एक कप काफ़ी का पिया। काफ़ी पिलाकर ख़ातिर करने वाली सभी छोकरियाँ होती हैं, उनसे अकेले में बातें कीं, जी बहलाया, इसमें पैसा भी कम खर्च हुआ और उत्थान भी ज़्यादा रहा। यह कहना व्यर्थ होगा कि गानेवाली औरतों और परिचारिकाओं का जीवन पवित्र रह पाता है। पवित्र जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखनेवाली

स्त्रियों के लिए इन पेशों में गुञ्जायश ही नहीं रह गई है। होटल और कार्कों के दुकानदार पहले ही से ठोंक-बजा लेते हैं और यदि माल खरा और उनके काम का होता है तभी वे उसे अपने मत-लब की चीज़ समझते हैं, और उसके यह शर्त करने पर कि "ग्राहकों को हर तरह ख़ुश रक्खूँगी" वे अपने यहाँ उसे जगह देते हैं। बारह साल से ऊपर की कोई भी लड़की इस क्षेत्र में क़ानूनन प्रवेश कर सकती है।

जापान में, ग़रीबी, मजबूरी और अज्ञान ही स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार को प्रोत्साहन देनेवाले कारण हैं। ग़रीब और अशिक्षित जनता के बीच से, बहका कर, समझाकर और अपनी चलती-फिरती बातों से लाल बाग़ दिखलाकर महिला-सौदागर अपना काम चलाते रहते हैं। ये लोग माँ-बाप को तरह तरह के लोभ-लालच में फँसा लेते हैं और लड़की को बढ़िया कपड़े तथा फ़ैशन के सामान देकर भविष्य के सौन्दर्यमय जीवन का नज़ारा खींच देते हैं। जब एक बार ये उनके हाथ लग जाती हैं और दूर देशों में पहुँच जाती हैं तब चाहे जैसे हो, घृणित और नारकीय जीवन व्यतीत करती ही हैं। वे इस बीच में इतनी क़र्ज़दार हो जाती हैं और उनके ऊपर व्यापारी का इतना रौब ग़ालिब हो जाता है कि वे खामोश रहकर ख़ून के घूँट पीकर बाक़ी ज़िन्दगी काटती हैं। उन पर अनुशासन और सख़्ती इस क़दर रहती है कि वे यदि तिकड़म से भागना भी चाहें तो अपने प्रयत्नों में प्रायः असफल रहती हैं और पकड़ी जाने पर पीटी जाती हैं और

अँधेरी कोठरियों में बंद कर दी जाती हैं। यदि इन रोमाञ्चकारी समाचारों को उनके माता-पिता सुन पावें तो वे तड़प उठें। उनका कलेजा फट जाय और वे मर जायँ, पर उनका क्रन्दन और रुदन रोकने के उपाय रहते हैं, जिससे चकलों या होटलों के बाहर उनके चीखने की आवाजें तो क्या, उनके सिसकने की गर्म सांसें भी न जा पायें। उस काजल की कोठरी में, या जेलखाने की तनहाई में, या महिला व्यवसाइयों के पींजड़े में, वे बाक़ी की जिन्दगी घुल घुल कर काटती रहती हैं।

जापानी साम्राज्य की आबादी कोई ९,००,००,००० (नौ करोड़) है जिसमें ६,२६,५६,०५४ आदमी तो खास जापान में रहते हैं। चूजन की आबादी २,१०,५७,००० है; फ़ारमूसा की ४५,९४,१६१; क्वानटंग की १३,२७,९०१; शंघालियन टापू की २,९५,१८७; और बाक़ी क्षेत्र की, जहाँ जापान ही का अधिकार है, ६९,६२७ है। आबादी में पुरुषों की संख्या ज्यादा है। स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से दस से बारह लाख तक कम है।

जापान में विदेशियों की संख्या थोड़ी है। विदेशियों की संख्या क़रीब ४०,००० है जिसमें ३०,८३६ चीनी हैं। विदेशियों में भी पुरुषों की संख्या ज्यादा है जिनमें कोई मजदूर हैं, कोई व्यापारी हैं, कोई विद्यार्थी हैं और कोई होटलों में नौकर हैं। १६६ पुरुषों के बीच में केवल १०० स्त्रियों का औसत पड़ता है।

जापान में चकलों, संगीत-भवनों तथा बेकारों को नौकरी दिलाने वाली एजेन्सियों को लाइसेन्स लेना पड़ता है। लड़कियों

को भगाना, जबरन व्यभिचार करना, उन्हें बुरे कामों के लिए रोक रखना, लड़कियों और युवतियों की खरीद-बिक्री करना जुर्म में शामिल है। यदि कन्या पैसा कमाने के लिए नहीं भगाई गई है, या बाद में उससे शादी कर ली गई हो, तो सारा अपराध समाप्त हो जाता है। कानूनी कठिनाइयों के रहते हुए भी ये सारे कृत्य रोज होते ही रहते हैं। सौदागर लोग नाम मात्र की शादियाँ भी कर लेते हैं और अपनी नामधारी पत्नियों से व्यभिचार करवाते रहते हैं।

सन् १९३० में जापान में लाइसेन्सशुदा चकलों की तादाद ११,१५४ थी जिनके रखवाले, मालिक, नौकर और रखेलियाँ सभी जापानी थे। इसके अलावा ग़ैर लाइसेन्सप्राप्त चकलों की तादाद पाठक इससे कई गुनी अधिक समझें, क्योंकि होटल, काफ़ों, नाचने-गाने के हाल और महिला सौदागरों के मकानों की कभी रजिस्ट्री नहीं कराई जाती। लाइसेन्सशुदा चकलों के लिए नगर नगर में अलग मुहल्ले ही आबाद हैं।

सन् १९३० में, खास जापान में, लाइसेन्सप्राप्त वेश्याओं की संख्या ५०,०५६, चूसन में २९७५ और कारिया में ११३२ थी। क्वान्टंग में १४०८ जापानी वेश्यायें थीं। जापान में उन चीनी युवतियों की संख्या बेशुमार थी, जो बेचने या व्यभिचार के लिए लाई जाती थीं।

जापानी वेश्याओं में ज्यादातर अशिक्षित किसानों की लड़कियाँ हैं। जापान में प्रारम्भिक शिक्षा की ओर सरकार का बहुत

ध्यान है जरूर, फिर भी साधारण शिक्षा-प्राप्त लड़कियाँ, जीविका के अन्य साधन अच्छे न मिलने से पाप-व्यापार की ओर आकर्षित हो ही जाती हैं। ये फिर 'मिसे' बन कर आकर्षक रंग-ढंग से रह कर, सिनेमा और थियेटर में नौकरी करके, युवकों की रखेलियों की तरह रह कर होटलों में परिचारिकायें बन कर और अन्त में चकलों में पहुँच कर यौवन का व्यापार करती हैं। इनके इन कार्यों में स्त्रियों और बच्चियों के व्यापारी काफ़ी तौर से आर्थिक और शारीरिक सहायता पहुँचाते हैं। सैकड़ों दलाल प्रति-वर्ष राजदण्ड पाते हैं, फिर भी निरन्तर होते रहने वाले आर्थिक लाभ के कारण वे उस पेशे से बाज़ नहीं आते।

पहले गीशा-प्रथा के अनुसार व्यापारी लोग छोटी छोटी कन्याओं को मोल लेकर पालते थे और उन्हें वेश्यावृत्ति की शिक्षा देकर भविष्य के लाभ के लिए तैयार करते थे। अब साम्राज्य भर में यह प्रथा ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दी गई है और अब ऐसा समझा जाता है कि इसका अस्तित्त्व ही मिट चुका है।

जापान में मुक्ति फ़ौज (Salvation Army) की १५० शाखाएँ हैं। इन शाखाओं ने ७००० से ज्यादा ऐसी युवतियों की रक्षा की है और उनका उद्धार किया है जो आर्थिक कठिनाइयों के कारण या कन्या-दलालों के बहकाने में आकर चकलों तक पहुँच गई थीं। ये स्त्रियाँ कला-कौशल और बेल-बूटे काढ़ने के काम में लगा दी गई हैं और स्वाभिमान का पवित्र जीवन व्यतीत करती हैं।

देश में, स्त्रियों और बच्चों की रक्षा के लिए अनेक स्थानों पर संगठन और समितियाँ काम कर रही हैं। ये इस पापाचार के खिलाफ अपनी आवाज उठाती रहती हैं और प्रचार द्वारा इस प्रथा की ओर से स्त्रियों और पुरुषों में घृणा उत्पन्न करती रहती हैं। ये सेवा-समितियाँ प्रतिवर्ष सौ-दो-सौ स्त्रियों का त्राण कराती हैं।

बहुधा स्त्रियाँ क़र्ज़ के बोझ से दब कर इस पेशे में लगी रहने को मजबूर होती हैं, पर कुछ ऐसी भी निकल आती हैं जो क़र्ज़ा होते हुए भी, किसी सेवासमिति के कार्यकर्त्ता की बात कानों तक पहुँच जाने से क़र्ज़ा देने से इन्कार कर देती हैं और पतित जीवन छोड़ देती हैं। इस बात को जापान में जियू हैगियो (Jiyu Haigyo) के नाम से पुकारते हैं। दर असल ऐसी स्त्रियाँ बड़े साहसवाली होती हैं, पर वे संख्या में, समुद्र में कुछ बूँदों के समान हैं।

जापान में कन्या-दलालों, स्त्रियों के व्यापारियों और लाइसेन्स-याफ़्ता वेश्याओं की संख्या कितनी है, इसकी जानकारी के लिए उसकी तालिका नीचे दी जाती है। पाठकों को ध्यान रखना चाहिए कि इसमें गीशा, गाने-बजाने और नाचने-वालियों, थियेटर की नटनियों और होटलों की परिचारिकाओं की संख्या नहीं जुड़ी है इसलिए कि, वे लाइसेन्सयाफ़्ता वेश्यायें नहीं और उनकी संख्या इससे कई गुना ज्यादा है। यह तालिका पहली जनवरी सन् १९३० की है—

स्थान	लाइसेन्सयुक्त पालकों की संख्या	स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार में लगे हुए व्यक्तियों की संख्या	लाइसेन्सयुक्त वेश्याओं की संख्या
होकाइ (Hokkaido) ...	४९	३६४	१८२३
ओमोरी (Aomori) ...	१३	१४२	४०८
इवाटे (Iwato) ...	१७	१०५	३८४
मियागी (Miyagi) ...	१२	४८	३८०
अकीता (Akita) ...	१०	५५	१७६
यामागाटा (Yamagata)	२६	१३६	२८४
फूकूशीमा (Fukushima)	२५	३८	४२४
इबारागी (Ibaragi) ...	७	२७	१०६
टोचीगी (Tochigi) ...	२१	८७	४१०
सैटामा (Saitama) ...	२	१०	४८
चीबा (Chiba) ...	६	४८	३२४
टोकियो (Tokio) ...	१०	७६२	६४२४
कानागावा (Kanagava)	१३	१८७	१३६०
नीगाटा (Nigata) ...	२०	३१५	१२७६
टोयामा (Toyama) ...	१३	२४३	३६३
इशीकावा (Ishikawa) ...	१९	२२४	३१

फ़्यूकुई (Fukui) ...	६	२१०	४२७
यामानाशी (Yamanashi)	२	८४	१७८
नागानो (Nagano) ...	११	१३३	६०६
गीफ़ू (Gifu) ...	४	१०१	७३३
शीज़ूका (Shizuka) ...	२०	६८	८२१
एची (Aichi) ...	४	२८६	२६८४
मी (Mie) ...	३०	२८०	१२४१
शीगा (Shiga) ...	११	३०६	३८१
क्योटो (Kioto) ...	१७	२३०५	४४६५
ओसाका (Osaka) ...	१०	१६१३	८६७७
ह्योगो (Hyogo) ...	१०	२२७	२४७३
नारा (Nara) ...	३	२८	६६३
वाकायामा (Wakayama)	३	२०	१३१
टोटोरी (Tottori)	२	८०	६६३
शीमानी (Shimani) ...	६	४७	११६
ओकायामा (Okayama)	६	२१६	८७५
हीरोशीमा (Hiroshima)	१६	४१८	२१७८
यामागूची (Yamaguchi)	४१	२४६	६०२
टोक्शीमा (Tokushima)	२	१०४	२६७
कागावा (Kagawa) ...	७	१३२	६२०
इहीम (Ehime) ...	३	४२	१४४
कोची (Kochi) ...	५	४३	

फ़ोकूका (Fokuoka) ...	९	१९६	१८८४
साग़ा (Saga) ...	९	८९	४१९
नागासाकी (Nagasaki) ...	२३	२१४	१४३६
कुमामोटो (Kumamoto)	४	९२	८१८
ओयटा (Oita) ...	५	६०	५४९
मियाज़ाकी (Miyazaki)...	५	२७	२१०
कगोशीमा (Kagoshima)	१	२३	३५१
ओकीनावा (Okinawa) ...	१	२३४	६२२
टोटल—	५४१	११९५४	५००५६

इन पचास हज़ार छप्पन वेश्याओं की अवस्थायें इस प्रकार हैं—

अवस्था	संख्या
१४ से २०	७३००
२० से २५	३००१२
२५ से ३०	१०९२१
३० से ३५	१८७१
३५ से ऊपर	३०४

ये तालिकायें जापानी साम्राज्य के अन्तर्गत प्रदेशों की हैं। इसके अलावा यही पेशा करनेवाली क़रीब ५००० विदेशी स्त्रियाँ हैं जिनमें चीनी और रूसी ज्यादातर हैं।

३५—हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान की स्त्रियाँ, मलाया प्रायद्वीप के अलावा विदेशों में, वेश्याओं की शक्ल में शायद ही कहीं मिलती हों। वृटिश मलाया में हज़ारों हिन्दुस्तानी कुली हैं जो प्रायः रोज़ी पैदा करने के लिए, भारतवर्ष के गाँवों से, अकेले ही गये हुए हैं। इनकी संख्या क़रीब पचास हज़ार है। इनकी वासना शान्त करने के लिए हज़ारों ग़रीब भारतीय स्त्रियाँ लाई गई हैं, या स्वयं चली आई हैं। वे केवल अपने देशवासियों ही से सम्बन्ध रखती हैं।

भारतवर्ष के बड़े बड़े शहरों में वेश्यायें पाई जाती हैं। जहाँ चीन, जापान और पाश्चात्य देशों की ग्रामीण सुन्दरियाँ लालसाओं और वासनाओं का शिकार होकर इस वृत्ति में पैसे की प्राप्ति के लिए अधिकाधिक प्रवेश करती हैं, वहाँ भारतीय ललनाएँ अधिकतर कष्ट से कष्ट में पड़ कर भी, कुछ चाँदी के टुकड़ों के लिए अपना सतीत्व बेच देने की अपेक्षा ग़रीबी और भुखमरी का जीवन व्यतीत करना ज्यादा अच्छा समझती हैं। परन्तु फिर भी यहाँ समाज के ज़ुल्मों के कारण बहुत सी हिन्दू स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति में पड़ने के लिए विवश हो जाती हैं। हाँ, हिन्दुओं में विधवा-विवाह की प्रथा काफ़ी रीति से प्रचलित न होने के कारण बहुत सी युवतियाँ वेश्याओं की तरह कोठे पर बैठने को मजबूर हो जाती हैं। यदि हिन्दुओं में विधवा-विवाह

पड़ल्ले से प्रचलित हो जाय, जैसा कि ज़रूर हो जाना चाहिए, तो हिन्दू-समाज में ऐसी बहुत कम युवतियाँ मिलेंगी, जो अपनी भाषा में—रंडो बनना पसन्द करें। एक बात और है। विशाल हिन्दू-धर्म अपनी विशाल-हृदयता के दायरे से हट कर संकुचित क्षेत्र में आ पड़ा है। यही कारण है कि जो एक बार यहाँ वेश्या हो गईं वे फिर समाज के अन्दर गृहस्थ के रूप में पदार्पण नहीं कर सकतीं; वे सदा वेश्या ही बनी रहेंगी। यह संकुचित विचार मुसलिम समाज के अन्दर नहीं है। यदि कोई बहन उस घृणित व्यवसाय से निकल कर किसी युवक की बीवी बनना चाहती है तो मजहब कोई अड़ंगा नहीं लगाता। वेश्या और उसके प्यार करनेवाले युवक, दोनों ही के लिए रास्ता खुला है और दोनों का निकाह हो जाता है। एक बार भूल करने का अर्थ यह नहीं है कि कभी उससे नजात ही न मिल सके। आबादी के लिहाज से वेश्याओं में हिन्दू बहनों की संख्या ही ज्यादा है। बम्बई प्रान्त की तरफ़ कुछ पारसी वेश्यायें हैं, तथा कुछ इनी गिनी जापानी, यहूदी, फ्रेंच और इंग्लिश लड़कियाँ भी हैं। कमीशन की जाँच के अनुसार एँग्लोइंडियन मिसें, पाश्चात्य देशों की युवतियों की तरह ही खुले और छिपे तौर से, बहुत बड़ी तादाद में वेश्याओं का सा जीवन व्यतीत करती हैं। इन मिसों से शहरों के बड़े आदमियों के लड़के और पल्टन के गोरे आमतौर पर फँसे रहते हैं। मद्रास प्रान्त में हजारों वेश्यायें हैं। कलकत्ता में २०,२६३ वेश्यायें पाप-पङ्क में फँसी हुई हैं। उनकी उम्र २० से ४० वर्ष तक है। अकेले

कलकत्ता शहर में हर साल लगभग २००० कुमारी हिन्दू कन्यायें वेश्याओं के हाथ बेच दी जाती हैं। देश भर में ३१,०६८ वेश्या लड़कियों की आयु १० वर्ष से भी कम है! इनमें ९० फ़ीसदी वेश्यायें हिन्दू हैं! और दूसरे शहरों में भी काफी वेश्यायें हैं। भारत में चकलों की तुमानियत नहीं है। सारे भारतीय समाज में वेश्यावृत्ति घृणित और वेश्यागामी महापापी समझा जाता है, फिर भी यह पापाचार छिपे तौर से समाज में बहुत होता है।

धार्मिक बन्धनों के रहते हुए भी, हिन्दुस्तान में स्त्रियों और बच्चियों की ख़रीद-फ़रोख्त होती है। अन्य प्रान्तों से लेजाकर लोग पंजाब में लड़कियों और स्त्रियों को बेच देते हैं। भारतवर्ष के मद्रास प्रान्त में देवदासी प्रथा है जिसके कारण सैकड़ों लड़कियों का जीवन नष्ट होता रहता है। परन्तु उनकी संख्या मन्दिरों तक ही सीमित है। पहाड़ी लोगों में, नायक जाति के लोगों में, व्यभिचार बहुत होता है। इसी कारण वहाँ स्त्रियाँ काफी संख्या में वेश्यावृत्ति का शिकार होती हैं।

स्त्रियों और बच्चियों के व्यापार-सम्बन्धी मामलों में भारतवर्ष की गिन्ती दूसरे देशों के मुकाबिले नगण्य के समान है। परन्तु आज इस देश में वेश्यावृत्ति का जिस रूप में भी प्रचलन है, वह हिन्दू जाति के मस्तक पर बहुत बड़ा कलङ्क है। जितनी जल्दी इस कुप्रथा का अन्त हो हिन्दू-समाज के लिए उतना ही श्रेयस्कर है।